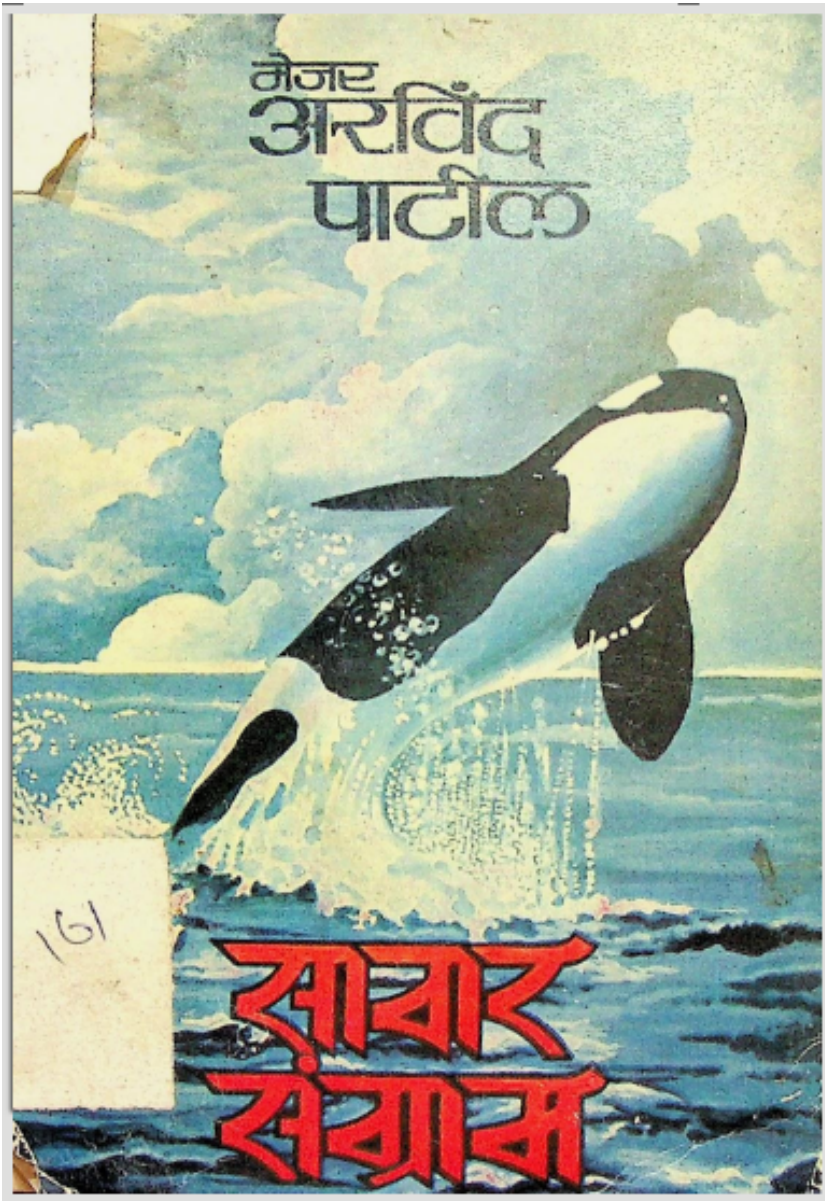
मेजर
अरविंद
पाटील
161
सागर
संग्राम

.. प्रकाशक ।।

'सागर संग्राम' मराठी पाठकों के लिए 'सूर्य प्रकाशन' की दूसरी पुस्तक है। इस उपन्यास के लेखक श्री अरविंद पाटिल भारतीय सेना में मेजर के पद पर कार्यरत हैं और अब तक कई अंग्रेजी पुस्तकें लिख चुके हैं और वे सभी प्रकाशित हो चुकी हैं। लेकिन उनकी सभी पुस्तकें सैन्य विषयों पर हैं। 'सागर संग्राम' मेजर पाटिल की पहली मराठी साहित्यिक कृति है। नव-स्थापित संस्था 'सूर्य प्रकाशन' को इसे प्रकाशित करने का अवसर मिल रहा है। हम भविष्य में मेजर पाटिल द्वारा अपनी कुशल लेखनी से रचित युद्ध कथाओं और रेमेल की जीवनी 'रक्तश्रु' को पाठकों के समक्ष लाने का इरादा रखते हैं।

इससे पहले, 'सूर्य प्रकाशन' के पहले अंक के रूप में हमने श्री विलास सलोखे द्वारा रचित उपन्यास 'घायल' प्रस्तुत किया था। इसमें कोई संदेह नहीं कि पाठक 'घायल' का उसी तरह स्वागत करेंगे जैसे श्री सलोखे की पूर्व प्रकाशित पुस्तकों 'एका प्रियेचि गोष्ठ नटी', 'मिथुन कादम्बर्य' और 'बड़ा' हा हा कहानी संग्रह का पाठकों ने स्वागत किया है। श्री बिलास सलोखे की 'बचन दिले तू माला ही प्रणयकादम्बर्य' और 'दिवाता' हा हा हास्य कहानी संग्रह भी हमारे आगामी प्रकाशन होंगे।

इन पुस्तकों के साथ-साथ, हमारी योजना कुछ उभरते और स्थापित लेखकों के साहित्य के साथ-साथ कुछ लोकप्रिय अंग्रेजी पुस्तकों के मराठी अनुवाद प्रकाशित करने की भी है।

इन सभी प्रयासों में जानकार मराठी पाठकों की उदारता हमारा समर्थन होगी, और हम इसे प्राप्त करने के योग्य बनने का प्रयास करेंगे।

प्रकाश कोठावले

-

॥ परिचयात्मक

शिकारी गॉडफ़िश - समुद्र में रहने वाला एक बेहद ख़ूँखार और शक्तिशाली स्तनपायी! समुद्र का हर जलीय जीव इससे डरता है। लेकिन शिकारी गॉडफ़िश को भी अपने अस्तित्व के लिए लड़ना पड़ता है - प्रकृति और मनुष्य की शक्तियों के ख़िलाफ़!

यह ऐसी ही एक शिकारी मछली की समुद्री लड़ाई की कहानी है।

ब्रिटिश वैज्ञानिक जेरेमी लुकास की पुस्तक 'सेबर द किलर व्हेल' और वैज्ञानिक क्लाइव व्हार्टन की पुस्तक 'द व्हेल्स' के साथ-साथ नेशनल ज्योग्राफिक पत्रिका के अंकों को इस पुस्तक के लिए संदर्भ पुस्तकों के रूप में इस्तेमाल किया गया है।

अरविन्द पाटिल

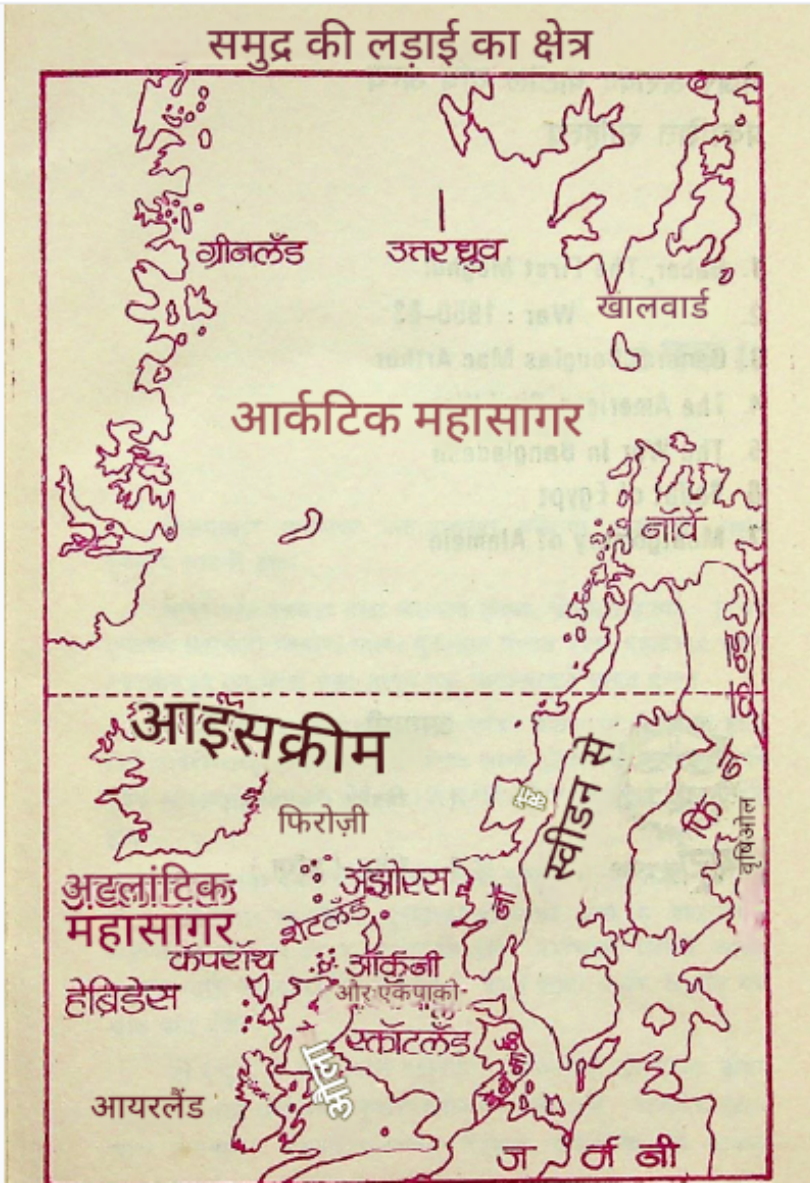

मेजर अरविंद पाटिल की अन्य कृतियाँ

प्रकाशित सामग्री

1. बाबर, पहला मुगल

2. कोरियाई युद्ध: 1950-53

3. जनरल डगलस मैकआर्थर

4. अमेरिकी गृहयुद्ध

5. बांग्लादेश में युद्ध

6. मिस्र का सादात

7. अलामीन के मोंटगोमरी

आगामी

1. रक्त और आँसू (युद्ध)

2. रोमेल (जीवनी)

सूरज की रोशनी

।। एक

नीले समुद्र में सुबह से ही कदमों की आहट सुनाई देने लगी थी।

समुद्र की उफनती लहरें गरज रही थीं और झाग छोड़ रही थीं। दूर से धुंधला सा दिखाई दे रहा किनारा उन्हें एक खामोश सी आवाज़ दे रहा था। सुबह की धूसर रोशनी में, वे लहरें एक के बाद एक क्षितिज की ओर तेज़ी से बढ़ रही थीं।

पूर्व में, आकाश समुद्र के विशाल विस्तार पर एकांत में स्थित था। वहाँ, एक सुनहरी-लाल रंग ने एक सुंदर रंग धारण कर लिया था। पिंजरों में बंद बादलों के समूह आकाश में बिखरे हुए थे। वे उस रंगीन रोशनी में नहाए हुए थे।

एक अकेला, शक्तिशाली समुद्री पक्षी बड़ी शान से उड़ रहा था। समुद्र पर फैली धुंध से बेखबर! बस दो ही आवाज़ें उसके कानों तक पहुँच रही थीं। उसके अपने पंखों की लयबद्ध फड़फड़ाहट और समुद्री लहरों की गर्जना! बाकी समुद्र और आकाश शांत और स्थिर थे!

समुद्री पक्षी अपनी ही गति के उन्माद में खोया हुआ था। अचानक उसे समुद्र की सतह के नीचे कुछ अजीब सी हलचल महसूस हुई। दो दौड़ते हुए पक्षी लहरों के साथ लुका-छिपी खेल रहे थे।

परछाइयाँ उसे घूर रही थीं। धीरे-धीरे, समुद्र की सतह फट गई। परछाइयों का जोड़ा ऊपर उठ गया।

उगते सूरज की पहली हल्की किरणें अब समुद्र में उतरने लगी थीं। उनकी रोशनी में, वे परछाइयाँ दो विशाल आकृतियों में बदल गईं। वे हिलने लगीं। स्पेरी हल्की हवा के झोंके के साथ हिलने लगा।

वे आकृतियाँ प्रकृति का एक अनोखा कारनामा थीं। वे देवताओं के दो जलीय शिकारी थे, जो समुद्र के हृदय से छलांग लगा रहे थे।

एक तो बहुत बड़ा था। और उसकी पीठ पर सीधा, सख्त, मांसल पंख! वो भी बहुत बड़ा था! उसका नाम था हिम्मत!

हालाँकि हिम्मत की प्रेमिका उससे बहुत छोटी थी।

उसका नाम जलनिशा था!

सागर की सतह पर पहुँचते ही हिम्मत और जलनिशा ने अपने फेफड़ों में जमा कार्बन डाइऑक्साइड गैस बाहर निकाल दी। उनके सिरों से एक साथ सफ़ेद पानी की धारें फूट पड़ीं।

उनकी चीखों से सागर पर छाई धुंध काँप उठी। सागर की बाहों में जो सन्नाटा पसरा था, वह हिलकर जाग उठा।

साहस और पानी की गर्म साँसों से निकली भाप सुबह की ठंड में जम गई। उन्होंने समुद्र की सतह पर इंद्रधनुषी रंग बिखेर दिए। वे रंग एक पल के लिए वहाँ तैरते रहे और फिर गायब हो गए।

सागर ने उस स्तब्ध महिला को फिर से अपनी विशाल बाहों में भर लिया। उसे सांत्वना दी!

समुद्री पक्षी अब बहुत दूर उड़ चुका था। सागर की गहरी लहरों की फुसफुसाहट के अलावा, आकाश में कोई आवाज़ नहीं थी।

दिव्य मछली, किंगफिशर के बहादुर और उत्साही शिकारी, जैसे ही मुगुरु महासागर के हृदय से बाहर निकले, गायब हो गए।

उस सुन्दर भोर ने संग्राम को जन्म दिया।

संग्राम ने अपने जन्म से पहले के दस महीने जलनिशा के गर्भ में गर्म घोंसले में बिताए थे। वहाँ उसने जलनिशा के शरीर में जीवन की लहरों का गीत सुना था - उसके चौथाई टन के दिल की धड़कन और उसकी पाँच सेंटीमीटर व्यास वाली धमनियों में बहते रक्त की तेज़ी!

अब युद्ध की दुनिया अचानक बदल गई थी।

उसने अटलांटिक महासागर की ठंडी लहरों के पहले झटके महसूस किए। उसका नवजात शरीर काँपने लगा। वह सिहर उठा। वह अपनी पहली साँस के लिए संघर्ष करने लगा। ज्वार ने उसे हल्का सा धक्का दिया। उसका सिर समुद्र की सतह पर आ गया।

संग्राम ने आँखें खोलीं। वह विस्मित था। उसने आस-पास के नज़ारे को निहारने की कोशिश की। सुबह की सुनहरी किरणों में नहाया हुआ शानदार सागर! झिलमिलाती रोशनी में खोया हुआ विशाल आकाश!

सागर की सतह पर फैलती जीवन की शीतल सुगंध संग्राम को सुकून दे रही थी। सिर के छिद्रों से अंदर आती हवा उसके पूरे शरीर में फैल रही थी। उसके दिल की धड़कन जल्द ही स्थिर और लयबद्ध हो गई। उसका 'पेलुक' फड़फड़ाने लगा।

अटलांटिक महासागर अब पंखों का पालना बन गया। संग्राम उस पालने में झूमने लगा। वह धीरे-धीरे झूमने लगा।

जलानिशे की ममता समझ गई कि संग्राम अब थक चुका है। वह तुरंत उसकी गोद में लेट गया। उसके पेट पर दो बड़े उभार थे। वे उभार अब गायब हो गए थे। उनके बीच से दो बड़े स्तन उभर आए। संग्राम के होंठ उन निप्पलों को छू गए।

जलानिशे ने प्यार भरी आवाज़ में, गुनगुनाते हुए, संग्राम से आग्रह किया। संग्राम ने अपनी जीभ उसके एक निप्पल पर लपेट दी। उसकी जीभ एक नली बन गई। वे नलियाँ लीटरों भर गाढ़े दूध से भरने लगीं। संग्राम लालच से जीवन का रस बूँद-बूँद पीने लगा।

संग्राम के जन्म तक, जलानिशे के शरीर की चर्बी लगभग बीस सेंटीमीटर मोटी हो चुकी थी। क्योंकि उसने इससे पहले आर्कटिक महासागर में कई महीने बहादुरी से बिताए थे। वहाँ खाने की कोई कमी नहीं थी। इसलिए, वह अपने शरीर में तीन-चार महीने तक चलने लायक पौष्टिक भोजन जमा कर पाई थी।

उसका दूध गाय के दूध से दस गुना ज़्यादा गाढ़ा था। संग्राम उस दूध के सेवन से तेज़ी से बढ़ता। हर दिन चालीस किलो वज़न बढ़ता! हर दस दिन में आधा मीटर लंबाई बढ़ती!

संग्राम ने खूब दूध पिया। फिर वह जलनिशा की पीठ पर सो गया। जलनिशा भी सो गई।

हिमत ने अभी तक संग्राम को नहीं देखा था। वह थोड़ी दूरी पर खड़ा था ताकि संग्राम उसे देखकर तितर-बितर न हो जाए। अब वह जल-निशा और संग्राम के आस-पास सतर्कता से मंडराने लगा। उनकी सुरक्षा के लिए हिमत की गश्त ज़रूरी थी।

संग्राम गहरी नींद से जाग उठा। जलनिशा भी जाग गई। संग्राम अब तरोताज़ा हो गया था। उसने जलनिशा की गोद में अपनी नाक से गुदगुदी की। उसने अपनी खुशी ज़ाहिर की।

जलानिशे ने उसे प्यार भरे लहजे में डाँटा। प्यार और धैर्य के शब्दों में! उसे लगा कि अब संग्राम को उसके पिता से मिलवाना ज़रूरी है। उसने भावुक और प्यार भरी आवाज़ में उसे पुकारा।

हिम्मत ने अपनी प्रेयसी की पुकार सुनी। समुद्र के नीले विस्तार में, रंग-बिरंगे सीगल नाच रहे थे। सूरज की किरणों की चमक! उनकी झिलमिलाती रोशनी में, हिम्मत अपने छोटे से परिवार की ओर सरक गया। बहुत धीरे-धीरे! ताकि संग्राम उसे देखकर चौंक न जाए!

संग्राम आकार में बिल्कुल छोटा नहीं था। शिकारी मछली के दूसरे शिशुओं की तरह, वह भी लगभग ढाई मीटर लंबा था। लेकिन हिम-ता के नौ मीटर लंबे शरीर को पहली नज़र में ही उसका डर दूर हो गया। वह पानी की सतह से चिपक गया। उसने उसकी गोद में छिपने की कोशिश की।

हिम्मत संग्राम के पास आया। उसने अपनी नाक से उसे गुदगुदी करनी शुरू कर दी और उसे उकसाते हुए, वह रोने लगा। जलानिशे ने संग्राम को अपनी बाहों में ले लिया। उसने मीठी, स्नेह भरी आवाज़ में उसे दिलासा दिया। धीरे-धीरे संग्राम का डर टूट गया। हिम्मत को देखते ही उसकी कसी हुई आँखें चौड़ी हो गईं, उन आँखों में छिपा डर कहीं गायब हो गया। अब उसकी जगह सुकून ने ले ली थी।

हिम्मत संग्राम से छह गुना बड़ा था। उसकी पीठ काली और धूसर थी, जबकि पेट भूरा था। इससे वह समुद्र की सतह पर तैरते बादलों की परछाई जैसा दिखता था। उसकी चमकदार त्वचा बहुत चिकनी थी। उसका सिर चौड़ा था। और उसके कंधे बहुत मज़बूत थे। उसका शरीर पूँछ की ओर पतला था।

हिम्मत के सिर पर बड़े कान नहीं थे। बस दो छोटे-छोटे छेद थे। लेकिन उसकी सूंघने की शक्ति बहुत तेज़ थी।

हिम्मत की आँखें उसके शरीर के मुक़ाबले अंगूर जितनी बड़ी थीं। बिलकुल अंगूर के आकार की! वह बाहरी वातावरण में ज़्यादा दूर तक नहीं देख पाता था। उसकी आँखें सिर्फ़ दो रंग देख पाती थीं। काला और सफ़ेद! डूबते सूरज से पैदा होने वाले रंगों के विस्फोट को वह कभी देख ही नहीं पाता था। बस उसे चाँदी जैसी चमक के बदलते रंग ही दिखाई देते थे!

पानी के नीचे, हिम्मत बहुत कुछ देख सकता था। लेकिन गहरे पानी में, सूरज की रोशनी भी गायब हो जाती थी। चार सौ मीटर की गहराई पर, चारों तरफ़ घुप्प अँधेरा था। वहाँ, हिम्मत अपने सिर से ध्वनि तरंगें छोड़ता। किसी जहाज़ के सिरे की तरह, एक ख़ास दिशा में! फिर उनकी गूँज लौटती, उसे बताती कि आगे कुछ है। वह कितना बड़ा है, पानी में किस दिशा और गति से बह रहा है; कितनी दूर है, वह सब बता सकता था।

प्रकृति ने शिकारी मछलियों को अद्भुत शारीरिक संरचना प्रदान की है जो जानवर की स्थिति निर्धारित करती है।

जब हिम्मत साँस छोड़ता, तो उसके सिर से छह मीटर लंबी पानी की धार निकलती। उसके

सिर पर दो बड़े छेद थे। वे इतने पास-पास थे कि उनसे निकलने वाला पानी इकट्ठा हो जाता। हिम्मत जो साँस छोड़ता, वह समुद्र से आने वाली ठंडी हवाओं से ज़्यादा गर्म होती। इस वजह से, उसकी साँस में मौजूद नमी जम जाती। और एक बड़ा बादल बन जाता!

लाखों साल पहले। मछलियाँ जलीय नहीं थीं - वे स्थलीय थीं। ! आज भी, जलीय होते हुए भी, वे मछली नहीं, जानवर हैं!! ब्रह्मांड के सबसे बड़े जानवर! वो भी स्तनधारी!! सभी मछलियाँ केवल पानी से ही ऑक्सीजन प्राप्त कर सकती हैं। लेकिन मछलियाँ ऐसी नहीं हैं। उन्हें ऑक्सीजन के लिए हवा में साँस लेने के लिए दिन में कम से कम सौ बार समुद्र की सतह पर आना पड़ता है। इसीलिए मछली के सिर पर दो बड़े छेद थे।

। १४ । सागरसंग्राम

पूर्ण बाढ़ के बाद, संग्राम साहस का एक सटीक प्रतिरूप बन जाएगा

संग्राम के जन्म के बाद दूसरी सुबह की किरणें समुद्र पर फैल गईं।

संग्राम ने अपना 'फ्लूक' उठाया। उसने अपना सिर पानी से बाहर निकाला। उसने गहरी साँस ली। उसने अपनी पूँछ सीधी की। उसने अपने पंखों की मदद से अपने शरीर को पानी में स्थिर रखा। फिर वह अपने फ्लूक, पंखों और पूँछ की मदद से थोड़ा आगे बढ़ा।

उसे इस गति का आनंद आने लगा। हिंसा से भरे पानी ने उसका हौसला बढ़ाया। धीरे-धीरे, वह मीटर दर मीटर आगे बढ़ने लगा।

उस शाम तक संग्राम पानी के किनारे चक्कर लगाने लगा।

युद्ध के एक ओर साहस और दूसरी ओर पानी के साथ, उन्होंने समुद्र की गहराई में छिपे अनगिनत रहस्यों को उजागर करना शुरू कर दिया।

संग्राम का जीवन-क्रम शुरू हुआ। कैसा जीवन-क्रम? सागर संग्राम!

П

सागरसंग्राम ।15.

॥ दो

शिकारी समुद्री घोड़ों के परिवार ने स्कॉटलैंड के तट से दूर बिखरे हुए द्वीपों के क्षेत्र में कई दिन बिताए।

हिमत को वह हिस्सा बहुत पसंद आया। क्योंकि वहाँ समुद्र तल बिल्कुल समतल था। पानी के नीचे कोई छिपी हुई चट्टानें या चट्टानें नहीं थीं। हिमत ने संग्राम को वहाँ गोताखोरी सिखाना शुरू कर दिया।

हिमत ने एक के बाद एक चार-पाँच कश लगाकर अपने फेफड़ों को आज़ाद कर दिया। फिर, अपना सिर एक सीधी रेखा में नीचे करते हुए, वह समुद्र की सतह के नीचे गोता लगा गया। जैसे ही उसकी पूँछ और फ़्लूक पानी के नीचे गए, बड़े-बड़े बुलबुले फूट पड़े।

संग्राम उलझन में पड़ गया। वह इधर-उधर भागकर हिम्मत को ढूँढ़ने लगा। जलानिशा उसका मज़ाक उड़ाने लगी।

हिमत काफी देर तक पानी के नीचे रहा। उसका शरीर अब समुद्र की सतह के समानांतर था। उसने अपना सिर ऊपर उठाया। वह तिरछी दिशा में ऊपर की ओर सरकने लगा। वह पानी की सतह पर आ गया, जहाँ संग्राम उसे ढूँढ़ रहा था, उससे बहुत दूर।

उसने संग्राम को पुकारा। संग्राम, जलानिशे के साथ उसकी ओर दौड़ा।

संग्राम ने हिम्मत को गोताखोरी के कई प्रदर्शन दिखाए। एक दिन, माली ने हिम्मत के आदेश पर मानसिक गोता लगाया। उसने एक के बाद एक पाँच जेट छोड़े, जिससे उसके फेफड़े साफ़ हो गए। हिम्मत ने भी जेट छोड़कर उसका साथ दिया।

संग्राम ने हिम्मत का पीछा करते हुए पानी के नीचे गोता लगाया।

हिम्मत और संग्राम के शरीर में बीस मिनट तक पर्याप्त ऑक्सीजन थी। उनकी रक्त वाहिकाओं और मांसपेशियों में लाल रक्त कोशिकाएँ ऑक्सीजन से भरी हुई थीं। इसलिए उन्हें साँस लेने से पहले अपने फेफड़ों में हवा खींचने की ज़रूरत नहीं पड़ी। जैसे ही वे पानी के नीचे गए, उनके शरीर में रक्त प्रवाह में विशेष परिवर्तन होने लगे। लगभग सारा रक्त उनके हृदय और मस्तिष्क में जाने लगा। शरीर के अन्य अंगों से रक्त की माँग कम हो गई। उनकी लाल रक्त कोशिकाएँ मस्तिष्क को आवश्यक ऑक्सीजन प्रदान करने लगीं।

बहादुरों की हर हरकत का पीछा करते हुए संग्राम समुद्र की तलहटी में डूबने लगा, उसके चारों ओर फैली धुंधली रोशनी धीरे-धीरे फीकी पड़ने लगी। अंततः चारों ओर घना अँधेरा छा गया।

जैसे-जैसे हिम्मत और संग्राम पानी में गहरे गए, उनके फेफड़े सिकुड़ने लगे। वे बेहोश होने लगे। लेकिन चूँकि वे स्वतंत्र थे, इसलिए उन्हें कोई नुकसान नहीं हुआ। समुद्री घोड़े की पसलियाँ दूसरे स्तनधारियों की पसलियों से अलग होती हैं। उनकी केवल दो पसलियाँ ही उरोस्थि से जुड़ी होती हैं। बाकी स्वतंत्र रूप से तैरती रहती हैं! इसलिए गहरे पानी में वे अपने आप ही बेहोश हो जाती हैं। हिम्मत और संग्राम की पसलियाँ भी सिकुड़ने लगीं।

समुद्र की तलहटी में पाँच सौ मीटर तक जाने का साहस। वहाँ, उसके शरीर के हर वर्ग सेंटीमीटर पर सौ किलो वज़न था।

पानी का दबाव लगभग एक ग्राम होता है। हालाँकि, समुद्र की सतह के नीचे, दबाव केवल लगभग एक किलोग्राम होता है।

लगभग सौ मीटर की दूरी तय करने के बाद, हिमत रुक गया। उसने संग्राम को ज़ोर से धक्का दिया। ताकि वह उसके पीछे आए! तभी हिमत ने अपना सिर उठाया। वह पानी की सतह की ओर तिरछी दिशा में तैरने लगा। संग्राम उसके पीछे-पीछे चल पड़ा।

वे दोनों समुद्र की सतह पर कूद पड़े। जलनिशा संग्राम के करीब आई, उसकी आँखें प्रशंसा से भरी थीं।

सर्दी आ गई। सागर ने इसका एहसास किया।

पिछली गर्मियों के सूरज की गर्म किरणें अब ठंडी पड़ने लगी थीं। समुद्र की गहराइयों में बह रही अनगिनत धाराओं में सर्दी की ठंडक का एहसास होने लगा था। हज़ारों प्रवासी पक्षियों के झुंड आसमान में दिखाई देने लगे थे। उनके फड़फड़ाते, भरे हुए प्रतिबिंब समुद्र की सतह पर नाचने लगे थे। वे सभी पक्षी समारा में दूर-दूर तक फैली अनगिनत वादियों में चले गए थे। क्योंकि गर्मियों में वहाँ भरपूर भोजन मिलता था! लेकिन अब वे सर्दियों की कड़ाके की ठंड से डरकर स्कॉटलैंड के तट पर चट्टानों के दूसरी ओर अपने गर्म घोंसलों की ओर लौटने लगे थे।

जैसे ही शाम का साया सागर पर छाने लगता, हिम्मत गहरे समुद्र से निकलकर जलानिशेला और संग्राम को किनारे के पास उथले पानी में ले जाता। वहाँ संग्राम खुशी-खुशी दूध पीता। फिर, आँखें बंद करके और कान खुले रखकर, चट्टानों से टकराती समुद्री लहरों की आवाज़ और गूँज सुनता। लेकिन हिम्मत जानता था कि उसे जल्द ही स्कॉटलैंड के उस प्यारे किनारे को छोड़ना होगा।

शुरुआती दिनों में, समुद्र के समृद्ध दूध ने संग्राम की शक्ति में इज़ाफ़ा किया। उसके पास समुद्र की प्रचंड शक्ति से मुकाबला करने की शक्ति थी।

अब हिम्मत ने भी अपने छोटे से परिवार के साथ प्रवास का निश्चय कर लिया। वह अटलांटिक

महासागर के दक्षिण-पूर्वी कोने में प्रवेश करने की तैयारी कर रहा था। रास्ता कठिन था। उसे तेज़ गति से बहने वाली कई धाराओं को पार करना था।

हिम्मत, जलनिशा और सागरम का जल प्रवाह शुरू हो गया। वे हमेशा उबड़-खाबड़ और पथरीले समुद्र तट के समानांतर तैरते रहे। समुद्र की लहरें पल-पल बदलती रहीं, कभी शांत, कभी प्रचंड तूफ़ान! लाखों समुद्री पक्षी समुद्र तट पर उड़ते दिखाई दिए। सील, पॉरपॉइज़ और गॉडफ़िश समुद्र में विचरण करते दिखाई दिए।

छोटी मछलियों के अनगिनत झुंड समुद्र तट पर विचरण करते थे। समुद्री पक्षी और बड़े जलीय जीव मछलियों के झुंड पर हमला करके उन्हें खा जाते थे। मछलियों के झुंड जहाँ कहीं भी होते थे - तेज़ बहती समुद्री धारा में, अशांत गहरे पानी में, किनारे की शांत रेत पर, या काली पड़ चुकी चट्टानों के अनगिनत कोनों में - उनके शिकारी कभी दूर नहीं होते थे।

संग्राम को साथ लेकर, जो साहस और प्यास के साथ शरीर से पानी पी रहा था, वे मछली की बीट पर दावत करते हुए यात्रा करने लगे।

हिम्मत और उसका परिवार स्कॉटिश मुख्य भूमि के उत्तर-पूर्वी सिरे पर पहुँच गए। वहाँ उन्होंने 'क्रैप रोथ' का चक्कर लगाया। फिर वे पूर्व की ओर ओरान द्वीप समूह की ओर चल पड़े। अब उनकी यात्रा तट से पाँच-छह किलोमीटर दूर होने लगी। वहाँ लहरें बहुत धीमी गति से उठतीं और फिर तूफानी गति से तट पर चट्टानों को तोड़तीं। वे समुद्र की सतह से लगभग बीस से पच्चीस मीटर नीचे तैरते। वहाँ से हिम्मत शिकार करने के लिए समुद्र की अँधेरी गहराइयों में गोता लगाते।

संग्राम के युवा तीखे कान, जब वह बहादुरी से शिकार के लिए गोता लगाता है

वह समुद्र की गहराई से आती अजीब आवाजें सुनने लगा।

पहले तो हिम्मत समुद्र तल पर बिना कोई आवाज़ किए, बहुत ही शांत भाव से तैरता रहता था। फिर उसके सिर से ध्वनि तरंगें निकलने लगतीं। वह उन ध्वनि तरंगों की गूँज का अनुसरण करता। उसे अपने अजीबोगरीब शारीरिक तंत्र की हल्की-हल्की आवाज़ें सुनाई देने लगतीं, जो उसके जानवर की जगह का पता लगाती थीं।

बीच-बीच में वह एक लंबी, शक्तिशाली आवाज़ निकालता, फिर कहता, 'पानी को बता दो कि हिम्मत दूर नहीं गई है, पास ही है!'

और फिर मैंने सुना - विशालकाय साहस के बिजली-सी तेज़ धक्कों से पानी के नीचे की

सिहरन! मौत के अप्रत्याशित दृश्य से स्तब्ध, उस जानवर की आखिरी चीख! साहस के शक्तिशाली जबड़ों के तीखे जबड़ों के बीच कुचले जा रहे मांस और हड्डियों की चरमराहट! और अंत में, शिकार को अपने जबड़ों में जकड़े, उन्माद से उछलते साहस के शरीर की सरसराहट!

कॉड, कंगारू, लिंग, पाउटिंग और हैडॉक - ये सभी समुद्री जीव साहस से निकलने वाली ध्वनि तरंगें सुन सकते थे। एक पल में, उन्हें एहसास हुआ कि ये सचमुच मौत के आगमन का संदेश थे। उस ध्वनि तरंग की प्रतिध्वनि साहस तक लौट आती। अगले ही पल, बर्फ़ सिकुड़ जाती। उन अभागे जीवों को असली मौत दिखाई देती। पल भर में, साहस समुद्र की गहराइयों में अपने संघर्ष को हमेशा के लिए समाप्त कर देता और फिर समुद्र की सतह पर छलांग लगा देता।

संग्राम हम्मत की विशालकाय आकृति, खून से सने जबड़े और उनसे लटके अपने शिकार के अवशेष देखकर काँप उठा। लेकिन पानी की मधुर आवाज़ ने उसे सांत्वना दी और वह अपने आप पर काबू पा सका।

कभी-कभी, पानी में रहने वाली शार्क शिकार करने के लिए बहादुरी से पानी में गोता लगाती थीं। हालाँकि, संग्राम को समुद्र की सतह पर रेंगना ज़्यादा पसंद था। क्योंकि वह

शिकारी से डरता था। उसने जलानिशे के दूध से अपनी भूख मिटाई।

एक दिन सूरज सिर पर था। समुद्र की शांत सतह धूप में चमक रही थी। हिम्मत और जलनिशा संग्राम को ऊपर छोड़कर गहरे पानी में शिकार कर रहे थे।

संग्राम हमेशा की तरह लहरों पर मचल रहा था। अचानक उसे समुद्र में दूर से कुछ अजीब सी आवाज़ें सुनाई दीं। बचपन जैसी उत्सुकता से वह नाव की ओर बढ़ा। अब वे आवाज़ें साफ़ सुनाई दे रही थीं। एक धीमी आवाज लगातार आ रही थी, जबकि दूसरी 'लपक, लपक' जैसी तेज़, लेकिन रुक-रुक कर आ रही थी। संग्राम को अभी तक पता नहीं था कि समुद्र दुश्मनों से भरा है। वह उत्सुकता से उन आवाज़ों की ओर तैरने लगा।

छह मीटर लंबी एक विशाल शार्क पानी में तैर रही थी। उसकी पूँछ तीन मीटर लंबी थी, लगभग उसके शरीर जितनी! वह बीच-बीच में अपनी पूँछ से पानी पर थपथपा रही थी। उसके थपथपाने की 'लपक लपक' की आवाज़ आसमान में गूँज रही थी।

वहाँ मैकेरल मछलियों का एक बड़ा झुंड था। वे बेचारी छोटी मछलियाँ उस भयानक शार्क को देखकर डर गईं। शार्क तालाब में अपनी पूँछ फड़फड़ाते हुए तैर रही थी। वह चाहता था कि

सारा झुंड इकट्ठा हो जाए! फिर वह एक ही झटके में पूरे झुंड को पकड़ ले।

संग्राम के बचपने को भी लग रहा था कि अब झुंड का कत्लेआम हो जाएगा। वह शार्क के शिकार को ऐसे देख रहा था जैसे मंत्रमुग्ध हो गया हो। उसे अंदाज़ा भी नहीं था कि शार्क उस पर भी हमला कर देगी।

अनुभवी शार्क को संग्राम की गंध आ गई। अब वह एक और चक्कर लगाकर मैकेरल मछलियों के झुंड पर हमला करने ही वाला था। लेकिन संग्राम को देखते ही वह रास्ता भटक गया।

उसने एक आवाज़ निकाली। उसकी पूँछ, जो पानी से टकरा रही थी, सीधी हो गई। उसके विशाल जबड़े बजने लगे।

उस अवसर का लाभ उठाकर मैकेरल मछलियों का झुंड क्षण भर में भाग निकला।

संग्राम की आँखों में अब जिज्ञासा भय में बदल गई थी। उसने झपटने के लिए अपनी पूँछ उठाई। उसका सिर झुक गया।

उसी क्षण शार्क ने भयंकर हमला बोल दिया।

संग्राम ज़ोर से चीखा। उस देवमासा का भयानक भाला संग्राम के कंधे पर लगा। उसकी छाती में धंस गया। उसकी एक बड़ी हड्डी टूट गई।

संग्राम अपने जीवन की पीड़ा से जूझने लगा। उसने पूरी ताकत और साहस के साथ पानी की ओर तैरने की कोशिश की। भाले ने उसे चक्कर में डाल दिया। उसके सारे अंग सुन्न हो गए।

शार्क ने उस स्तनपायी जीव का कोमल, स्वादिष्ट मांस निगल लिया। खून की गंध से वह दंग रह गई। एक मीटर दूर, उसने संग्राम की रसीली, स्वादिष्ट बगल देखी।

शार्क ने फिर से अपने जबड़े खोले और उन्हें चाटने लगी। उसकी नाक संग्राम की बगल को छू गई। संग्राम चीख भी नहीं पाया। वह डर के मारे आधा मर गया था।

उसी क्षण, शार्क का शरीर फट गया!

हिम्मत और जलनिशा ने संग्राम की चीख सुनी थी। फिर वे पूरी ताकत से उसकी ओर दौड़ पड़े

थे। हिम्मत ने पल भर में जलनिशा को पीछे छोड़ दिया था। संग्राम के चीखते ही हिम्मत ने उसकी बगल में घाव और बहता खून देखा था। उसने शार्क को संग्राम की बगल की लोच को फिर से तोड़ने आते देखा था। उसके मन में क्रोध की लहर दौड़ गई थी।

। २२ । सागरसंग्राम

हिम्मत ने अपनी पूरी ताकत जुटाकर शार्क की बगल में वार किया। और उस वार से शार्क का शरीर और जीवन दोनों नष्ट हो गए।

अब समुद्र का पानी लाल रंग के धब्बे से ढक गया था। खून, हड्डियाँ, मछलियों के टुकड़े और आधी पची हुई छोटी मछलियाँ हर जगह बिखरी हुई थीं।

अब जलनिशा वहाँ पहुँच चुकी थी। उसने संग्राम को गोद में उठा लिया। संग्राम ने फिर आँखें खोलीं। वह जलनिशा के लिए ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। वह उसके लिए गुनगुनाने लगी।

हिम्मत ने नाव को किनारे पर शांत पानी की ओर बढ़ने का आदेश दिया।

मुसीबत के समय मछलियों की सभी प्रजातियाँ किनारे की ओर रुख करती हैं, ज़मीन पर आती हैं। लाखों साल पहले, ज़मीन ही उनका घर थी, इसलिए!

किनारे के उथले पानी में, वह संग्राम को चाट रही थी। उसने उसके घाव को धीरे से चाटा। उसे अपना गर्म दूध पिलाया।

शाम ढल चुकी थी। किनारे पर समुद्री पक्षी लोरियाँ गाने लगे। जलपक्षी ने संग्राम के शरीर के नीचे अपना एक बड़ा पंख फैला दिया। संग्राम नींद की रानी की बाहों में खोया हुआ था।

नहीं, जलनीश ने भी अपनी आँखें बंद कर लीं। लेकिन उसके स्नेह ने उसे सोने दिया।

हिम्मत ने जालनिशा और संग्राम के चारों तरफ गश्त शुरू कर दी.

चाँद आसमान में उग आया। चाँदनी बिखरी। पूरा सागर जगमगा उठा।

हिम्मत और उसके परिवार ने अगले दो सप्ताह समुद्र तट के पास बिताए, इस दौरान संग्राम के घाव ठीक हो गए।

संग्राम ने सागर संग्राम का 'श्री' हटा दिया था.

.. तीन

शरद ऋतु आ गयी है।

समुद्र पर कोहरे की एक मोटी परत छा गई। मछलियों के झुंड दक्षिण की ओर बढ़ने लगे। उन्हें खाने वाले समुद्री पक्षी भी उनके पीछे-पीछे चल पड़े। लेकिन गहरे पानी में अभी भी मछलियों के कई झुंड थे। इसके अलावा, इस दौरान भी सील मछलियाँ समुद्र की चट्टानों के बीच रहती थीं। वे काफ़ी लापरवाह थीं। इसलिए, शिकारी गॉडफ़िश को भोजन मिलता रहा।

हिम्मत ने फैसला किया। संग्राम अभी छोटा था। इसलिए समुद्र के उस जाने-पहचाने हिस्से में ही सर्दियाँ बिताना उचित था। सर्दियों के अंत में वहाँ खाने की थोड़ी कमी हो जाती। लेकिन थोड़ी सी मेहनत से हिम्मत अपने परिवार का पेट भर सकता था।

और वसंत के आगमन के साथ, जीवन फिर से खुशियों से भर जाएगा।

एक सर्दियों की शाम आई। काली-काली लहरें समुद्र में उमड़ने लगीं। सूरज उगने लगा। हवा चलने लगी। आसमान में बादल चटकने लगे। उनकी ताकत अटलांटिक महासागर के प्रचंड उथल-पुथल के किनारे चमकने लगी।

रास्ते पर चल रहे समुद्री पक्षी डर गए। तूफ़ान शुरू होने से पहले ही वे किनारे पर चट्टानों की शरण में भाग गए।

किनारे से बहुत दूर, सफ़ेद लहरें टकरा रही थीं। हिम्मत, जलनिशा और संग्राम उन लहरों पर लोट रहे थे। जैसे ही उन्हें तूफ़ान के संकेत दिखाई दिए, हिम्मत ने उन्हें अपने पीछे आने का आदेश दिया।

समुद्र में तूफ़ान आने लगा। अब संग्राम की ताकत डगमगाने लगी। समुद्र की गहराइयाँ हिलने लगीं। संग्राम के लिए तैरना बहुत मुश्किल हो गया। उसकी ताकत खत्म होने लगी। वह थक गया। साँस लेने के लिए उसे वापस समुद्र की सतह पर आना पड़ा।

हिम्मत संग्राम के एक तरफ था। और जलनिशा दूसरी तरफ। दोनों संग्राम का हौसला बढ़ाने लगे। कई टन की गरजती लहरें हिम्मत की मज़बूत पीठ से टकराने लगीं, टूटने लगीं। उन लहरों का पानी संग्राम के शरीर पर गिरने लगा। संग्राम साँस लेने के लिए तड़पने लगा। उसका शरीर जीवन की पीड़ा से छटपटाने लगा। वह पीछे गिरने लगा। घबराई जलनिशा ने उसे पुकारा। वह उससे आग्रह करने लगी। वह विनती करने लगी। लेकिन तूफ़ानी उत्साह अब ज़ोर पकड़ चुका था। जलनिशा के शब्द उस आवाज़ में खो गए।

तूफ़ान के रास्ते में कई किलोमीटर दूर, समुद्र में द्वीपों का एक बड़ा समूह है। इसे ऑर्कनी कहते हैं! ऑर्कनी द्वीप समूह के बीच में समुद्री शैवाल का एक समूह है। और उनके बीच में एक विशाल, धीमी गति से बहने वाला जलाशय है। इसका नाम है स्कैपा फ्लो! अटलांटिक महासागर इसी जलाशय में बहता है।

वहाँ जाने के कई रास्ते हैं। चिंचोले, वह रास्ता जो द्वीपों को लंबवत और क्षैतिज रूप से विभाजित करता है!

प्रथम विश्व युद्ध में जर्मनी की हार हुई। वर्साय की अपमानजनक संधि के अनुसार, जर्मन नौसेना के सभी जहाज मित्र राष्ट्रों को देने का निर्णय लिया गया। लेकिन जर्मन नौसेना ने अपने जहाज दुश्मन को देने से इनकार कर दिया। जर्मनी ने अपने बेड़े को एक जलाशय में डुबो दिया। वह है स्कापा फ्लो!

वो समुद्री स्वर्ग जिसने अनादि काल से भटके नाविकों को आश्रय दिया है! आज वहाँ इंसान और जानवर हर जगह से आ रहे थे - सील, पॉरपॉइज़, डॉल्फ़िन और गॉडफ़िश! मछुआरों की नावें और अटलांटिक महासागर में गश्त कर रहे नाटो देशों के हथियारबंद जहाज!

तूफान के जोर से जूझते हुए हिम्मत भी अपने परिवार के साथ स्कैम्पा पालो की ओर बढ़ने लगा।

रात बढ़ती गई। और उसके साथ तूफ़ान भी तेज़ होता गया!

संग्राम अब पूरी तरह थक चुका था। उसके सफ़र को अब हिम्मत और जलानिशे का सहारा था। धीरे-धीरे जलानिशे थकने लगी। अशांत समुद्री धाराएँ उसे खींचने लगीं। संग्राम से दूर ले जाने लगीं। एक-दो पल के लिए वह पानी की लहरों में खोने लगी, फिर जान की दुहाई देकर संग्राम को ढूँढ़ने लगी। उस अँधेरी रात में, ऐसा कई बार हुआ.. लेकिन जलानिशे का स्नेह सागर की शक्ति को भी मात दे देता। हर बार, वह संग्राम के और करीब आ जाती।

साहस और दृढ़ संकल्प के साथ उन्होंने पूरी रात तूफान का मुकाबला किया और युद्ध की रक्षा की।

भोर की धुंधली रोशनी समुद्र पर फैलने लगी। साहस और पानी पर नज़र रखते हुए, संग्राम आखिरकार स्कैम्पा फ्लो की सुरक्षा में पहुँच गया।

। २६ । सागरसंग्राम

संग्राम का थका हुआ मन धीरे-धीरे अपने आस-पास के माहौल से वाकिफ़ होने लगा। मानो वह किसी लंबी नींद से जागा हो। उसे एहसास हुआ कि वह तूफ़ान की खाई से बच निकला है।

सुबह हुई। सूरज की कोमल किरणें सागर पर नाचने लगीं। उनकी गर्म रोशनी में संग्राम ने मजे से दूध पिया। जीवन के उस गर्म रस ने उसके बाल मन को शांत कर दिया। उसके मन के पटल पर उभरे तूफ़ान के भयानक प्रतिबिंब, कम से कम अस्थायी रूप से, मिट गए।

संग्राम ने सागर संग्राम का दूसरा सबक ले लिया था।

उस सर्दी में, संग्राम ने हिम्मत और जलनिशा के शिकार पर ध्यान से नज़र रखी। उसने उन्हें सील और ज़हरीली मछलियों का शिकार करते देखा।

संग्राम उनके साथ समुद्र की तलहटी में गोता लगाने लगा। वहाँ उसने उन्हें चट्टानों के बीच रहने वाले कूट, स्कूप और कंगारूओं का शिकार करते देखा।

कभी-कभी वह उन्हें लाल झींगे खाते हुए देखता था।

कॉड अब दक्षिण की ओर बढ़ने लगे थे। साहस की गूँज सुनने वाले शरीर के तंत्र ने उनका संकेत पकड़ लिया था। फिर शिकारी समुद्र की सतह से केवल पचास मीटर नीचे गोता लगाएँगे। वहाँ का धुंधला प्रकाश समाप्त हो चुका था और घना अँधेरा शुरू हो चुका था। कॉड, जो गर्मियों में ढेर सारे साथियों के साथ मोटे हो गए थे, अब वहाँ नहीं थे। उनकी कतारें शिकारियों का शिकार बन गईं।

कभी-कभी शिकारी समुद्र तल पर चट्टानी घोंसलों में बैठी ईल मछलियों को पकड़ लेते थे। फिर, एक ही फुफकार के साथ, उन्हें बाहर खींचकर पीटते थे।

कई दिनों तक उन्हें कोई शिकार नहीं मिला । फिर उन्होंने एक भोली-भाली समुद्री चिड़िया देखी, जो अपने शिकारियों से अनजान थी! समुद्र की सतह पर-

वह लापरवाही से वहीं सो गई थी ! शिकारी ने उसे तुरंत पकड़ लिया।

कभी-कभी उन्हें तूफ़ान में बहकर आए सील और समुद्री पक्षी दिखाई देते थे! फिर गिलहरियों को उस शव के मामूली आहार से ही संतोष करना पड़ता था।

संग्राम अभी बच्चा था। इसलिए वह असल शिकार में हिस्सा नहीं लेता था। उसे दूध पर निर्भर रहना पड़ता था।

सर्दी बढ़ने लगी। हिम्मत और जलनिशा के लिए ज़िंदगी बहुत मुश्किल हो गई।

संग्राम का शारीरिक विकास अब तेज़ी से होने लगा। वह बलवान और शक्तिशाली बनने लगा। अब वह उफनते समुद्र का सामना करने लगा। समुद्र की गहराइयों में रहने वाले विचित्र जीवों के बारे में उसका ज्ञान बढ़ने लगा। कभी अनजाने में, तो कभी अपने रिश्तेदारों का शिकार बनकर, वे जलीय जीव उसका सामना करने लगे।

सर्दी खत्म हो रही थी और बसंत का आगमन होने लगा था। संग्राम अब इंसान और उसके द्वारा बनाई गई मशीनों को समझने लगा था। उसने मछली पकड़ने वाली नावों पर लगे इंजनों की घरघराहट सुनी। वह मछलियों की चीख़ें समझने लगा था। उसकी तेज़ सुनने की शक्ति जालों के पानी में गिरने पर होने वाली विशिष्ट ध्वनि को पहचानने लगी थी। वह बड़े जहाजों के प्रोपेलरों के कंपन से भी परिचित हो गया था।

बड़े-बड़े जहाजों की आवाज़ सुनकर, हिम्मत और जलनिशा संग्राम को लेकर समुद्र तट की ओर दौड़ पड़े। संग्राम को इसका कारण समझ नहीं आया। वह अभी भी अनुभवहीन था। उसने समुद्र को जान लिया था। लेकिन उसे यह नहीं पता था कि देवमाओं का सबसे बड़ा दुश्मन ज़मीन पर रहता है। उन बड़े-बड़े जहाजों से, वह जीव समुद्र में देवमाओं का शिकार करता है।

उस जानवर का नाम मनुष्य है!

लेकिन हिम्मत उस आवाज़ को शुरू से ही पहचानता था। उसने उस आवाज़ की भयावहता का अनुभव किया था।

वह घटना कई साल पहले घटी थी।

हिम्मत उस समय एक छोटा लड़का था। उसका झुंड स्कॉटलैंड के तट पर चर रहा था, और उस झुंड का नेता हिम्मत का पिता था।

उसका नाम जलेन्द्र था!

उस मनहूस सुबह, एक विशाल जहाज़ किनारे पर आ गया। जहाज़ के आगे एक घूमती हुई तोप थी। वह तोप एक बड़ा गोला दाग सकती थी। भाले के पिछले हिस्से पर एक नायलॉन की रस्सी बंधी हुई थी। भाले की नोक पर एक विस्फोटक लगा था। वह भाला देवमाओं का शिकार करने के लिए था।

भाला तेज़ी से देवमा के शरीर में गहराई तक घुस गया और फिर उसकी नोक फट गई। भाले से चार लंबे काँटेदार तार निकले। वे देवमा के शरीर के अंदर के अंगों में घुस गए और उसे चीर-फाड़ डाला। देवमा जितना बचने की कोशिश करता, उतना ही वह और भी ज़्यादा फटता जाता।

अगर भाला मछली की छाती में घुस जाता, तो वह तुरंत खत्म हो जाती। वे काँटेदार तार उसके दिल को चीर देते। उसके फेफड़ों में छेद कर देते। उसके सिर से चटक लाल खून की आखिरी धार फूट पड़ती।

लेकिन जलेन्द्र का भाग्य ऐसा नहीं था।

जलेद्रा अनुभवी था। उसने समझ लिया था कि उसका झुंड मुश्किल में है। अगर झुंड को शिकारी जहाज़ के चंगुल से बचना है, तो किसी को जहाज़ का सामना करना होगा। तट के पास पानी गहरा था। इसलिए उसके झुंड को वहाँ शरण नहीं मिल सकती थी।

बेचारे को पता ही नहीं था कि उस दिन दस-बारह मछुआरे किनारे पर आ गए थे। उनके जाल से बच निकलना नामुमकिन था।

हिम्मत जुटाकर जालेन्द्र सीधा जहाज़ की ओर चल पड़ा। जहाज़ पर नाविक भी अनुभवी थे। वे आमतौर पर झुंड के नेता का शिकार सबसे आखिर में करते थे। क्योंकि अगर उसे बहुत देर से पकड़ा जाता, तो पूरा झुंड भाग जाने की संभावना रहती थी। जब तक झुंड ख़तरे में रहता,

नेता कहीं नहीं जाता। उसका शिकार करना आसान था।

लेकिन समस्या यह नहीं थी। झुंड का शिकार करने के लिए पास में ही दूसरे जहाज़ भी थे।

उसके पीछे खड़े नाविक ने जलेंद्र को जहाज़ के चारों ओर दौड़ते देखा। फिर उसने जलेंद्र की छाती पर निशाना साधा। उसने बंदूक को कोक किया। उसी क्षण जलेंद्र ने अपनी गति बढ़ा दी। गोली उसकी छाती में घुसने के बजाय, उसकी पूँछ में जा धंसी।

जालेन्द्र चिल्लाया। उसका झुंड डर के मारे इधर-उधर भागने लगा। बिखर गया।

लेकिन हिम्मत नहीं हारी, वह दूर से अपने पिता को देखता रहा।

जलेन्द्र की पूँछ दर्द से फड़क उठी। एक ही साँस के साथ, उसका अस्सी टन का शरीर अपनी पूरी ताकत से जहाज़ की विपरीत दिशा में तैरने लगा। पाँच सौ टन का शिकारी जहाज़ लुढ़कने लगा। जहाज़ पर सवार नाविकों को एहसास हो गया कि जहाज़ का उस शक्तिशाली शिकारी मछली से युद्ध होने वाला है। लेकिन उस युद्ध का अंत बस एक ही था। हर कोई युद्ध देखने के लिए जहाज़ के डेक पर मौजूद था।

जहाज के इंजनों की शक्ति बढ़ गई। जलेंद्र के शरीर में भालों और गायों से बंधी रस्सी पर भी तनाव बढ़ गया। जहाज पर लगी मशीनें उस रस्सी से जलेंद्र को जहाज की ओर खींचने के लिए ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ करने लगीं। लेकिन जलेंद्र कमज़ोर नहीं था। उसने दर्द की परवाह करना छोड़ दिया। वह उछलने-कूदने लगा। समुद्र का पानी उसके खून से लाल हो गया।

आंसुओं से भरी आंखों से, भय से कांपते हुए, इवालसा हिम्मत ने अपने पिता की अंतिम लड़ाई देखी।

लगभग चार घंटे तक उस जहाज़ पर लगी मशीन जलेंद्र की शक्ति पर काबू पाने के लिए ज़ोर-ज़ोर से घरघराती रही। धीरे-धीरे जलेंद्र की अपार शक्ति क्षीण होने लगी। उसका गुस्सा अब उदासी में बदल गया। उसकी पूँछ का दर्द उसके पूरे शरीर में फैलने लगा।

जैसे ही सूरज ऊपर चढ़ा, जालेन्द्र का संघर्ष समाप्त हो गया। जहाज के शक्तिशाली इंजन उसे जहाज की ओर खींचने लगे। वह फड़फड़ाने लगा।

जलेन्द्र का शरीर अब जहाज़ की तोप की जद में था। तोप एक और भाले के लिए तैयार थी। तोप के पीछे खड़े नाविक ने दूसरी बार भाला चलाया ।

इस बार भाला चूका नहीं। वह जलेन्द्र की चौड़ी पीठ को चीरता हुआ उसके हृदय में घुस गया। उसके सिर से लाल फुहार फूट पड़ी। जलेन्द्र थोड़ा फड़फड़ाया। उसके आस-पास का पानी

और भी लाल हो गया। फिर जलेन्द्र का फड़फड़ाना बंद हो गया। वह खत्म हो गया। उसका विशाल, गोल पेट पानी से बाहर आ गया,

वह एक चट्टान की ओट से बहादुरी से यह सब त्रासदी देख रहा था। उसे अपने पिता के खून की गंध समुद्र में फैलती हुई महसूस हो रही थी। उसके झुंड के दूसरे सदस्य भी आसपास के पानी में मारे जा चुके थे। पूरा समुद्र तट लाल हो गया था। हर तरफ खून ही खून था।

उस घृणित ध्वनि से उस का साहस खत्म होने लगा।

शिकारी जहाज अब जलेन्द्र के दयनीय शरीर को बहुत करीब खींच रहा था। जहाज से एक बड़ी, नुकीली नली जुड़ी हुई थी।

ऊपरी मशीन उसके पेट में डाली गई। नली ने उसके शरीर में हवा भरना शुरू कर दिया। उसका शरीर फूलने लगा। अब वह पानी में नहीं डूबेगा। उसके पेट में एक झंडा डाला गया।

उसी समय, जहाज़ पर निगरानी कर रहे नाविक ने दूर से एक मादा शिकारी को झुंड से भागते हुए देखा। जहाज़ उस मादा की ओर दौड़ा और उसका पीछा करने लगा।

हिम्मत के छोटे से शरीर में ताकत लौट आई। मौत की निकटता से बचने की स्वाभाविक इच्छा ने उसके मस्तिष्क पर कब्ज़ा कर लिया। वह बेतहाशा तैरने लगा, मानो पागल हो गया हो, किनारे से दूर, शिकार के जहाज से दूर, गहरे समुद्र की ओर।

जालेन्द्र की नाव समुद्र में तैरती रही। जल्द ही एक और जहाज़ आ गया। वह जहाज़ नाव को खींचने लगा।

दूर किनारे पर एक विशाल जहाज खड़ा था, जो किसी स्टील के डिब्बे जैसा लग रहा था। जहाज के चारों ओर मरी हुई शिकारी मछलियों के शव बिखरे पड़े थे। जालेन्द्र का शव भी उसे लाने वाले जहाज ने वहीं छोड़ दिया था।

स्टील के डिब्बे जैसे दिखने वाले उस जहाज़ पर सैकड़ों नाविक काम कर रहे थे। उस जहाज़ पर चल रही मशीनों की आवाज़ से आसमान गूंज रहा था। उस जहाज़ पर लगे एक विशाल स्टील के पंजे ने जालेन्द्र की पूँछ पकड़ ली। और फिर वह पूँछ जहाज़ के साथ घसीटती चली गई, और उसका बाकी शरीर भी उसके पीछे-पीछे घसीटता चला गया!

विशाल आरों के ब्लेडों ने जहाज़ पर पड़ी मरी हुई मछलियों की खाल और चर्बी काट दी। फिर विशाल काँटों ने उसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया। यांत्रिक कुल्हाड़ियों ने सिर काट दिया। रीढ़ और

शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए। सभी टुकड़ों को बड़े-बड़े बर्तनों में भर दिया गया। पूरा काम आधे घंटे में पूरा हो गया।

छह घंटे पहले, समुद्र पर उत्पात मचा रहे महाशक्तिशाली जलेन्द्र का इतना भयानक अंत हो गया। उसका समुद्री युद्ध समाप्त हो गया।

। ३२ । सागरसंग्राम

उस रात हिम्मत की मुलाक़ात गहरे समुद्र में जलनिशा से हुई। वे जलेंद्र के झुंड के सिर्फ़ दो जीवित बचे थे। बाकी झुंड इंसानों के ज़बरदस्त लालच का शिकार हो गया था।

वह भयानक युद्ध हिम्मत और जलनिशा के बीच समुद्री युद्ध का पहला सबक था।

उन राक्षसों को भी पता था कि इंसान ही उनके सबसे क्रूर दुश्मन हैं। उन जहाजों के इंजनों की आवाज़ मौत का पैगाम थी। इसीलिए, जैसे ही उन्होंने यह सुना, वे दोनों संग्राम को लेकर वहाँ से चले गए।

लेकिन संग्राम को अभी बहुत कुछ सीखना बाकी था। उसका समुद्री युद्ध अभी शुरू ही हुआ था!

Π

.. चार.

बसंत आ गया है। इसने सर्दियों की ठंडी, कड़क हवाओं को भगाना शुरू कर दिया है।

अब शिकार करना आसान हो जाता है। सबसे पहले मैकेरल के झुंड उत्तर की ओर लौटने लगते हैं। लंबी और पेटू टोपे मछलियाँ भी उनके साथ आती हैं। फिर आते हैं बड़े, नीले शार्क और मोटे, बूढ़े चेहरे वाले पोर्ट ईगल! ये सभी जलीय जीव समुद्र की अँधेरी गहराइयों से बड़ी तेज़ी से समुद्र की सतह की ओर दौड़ पड़ते हैं। फिर, पानी के साहस और अतृप्त प्यास को देखकर भयभीत होकर, उतनी ही तेज़ी से गायब हो जाते हैं।

समुद्र पर फैला धूसर आकाश अब फिर से नीला हो गया था। वह तरह-तरह के पक्षियों की चहचहाहट से भर गया था। वे सभी पक्षी दूर सहारा रेगिस्तान से आए थे। उन्हें अटलांटिक महासागर की ठंडी गर्मी वहाँ की भीषण गर्मी से ज़्यादा पसंद थी।

संग्राम अपनी पूँछ के बल खड़ा हो गया। उसने अपना मुँह पानी से बाहर निकाला। उसने चौड़ी आँखों से उन सबको देखा।

एक शाम, हम्मत शिकार करने गहरे पानी में उतरा। पास ही एक विशाल, तैरता हुआ नर शिकारी मछली मँडरा रहा था।

वह मौके का फायदा उठाकर जलानिशे के पास गया। उससे घर जाने की मिन्नतें करने लगा। संग्राम में उस जलानिशे पर चलने की हिम्मत नहीं थी।

जलानिशे ने हिम्मत को पुकारा। उसकी आवाज़ सुनकर हिम्मत बिजली की गति से सागर की सतह की ओर दौड़ा। संग्राम की विस्मित आँखों के सामने, सागर का सन्नाटा एक भयानक कोलाहल से बिखर गया। क्रोधित होकर हिम्मत ने उस शिकारी पर आक्रमण कर दिया। उसने अपना विशाल भाला उसकी छाती में भोंक दिया। वह बेतहाशा फुफकारने लगा। आश्चर्यचकित आगंतुक ने किसी तरह हिम्मत की पकड़ से खुद को छुड़ाया।

मानव-शिकारी के घाव से बहता खून समंदर में फैल गया। वह जवान था। गुस्से में आकर उसने हिमत पर हमला कर दिया। हिमत ने आसानी से उसे चकमा दिया और फिर उसे फिर से काट लिया।

जलानिशा हिम्मत के गुणों को प्रशंसा से देख रही थी। संग्राम उससे चिपका हुआ था।

शिकारी ने उस पर तीसरी बार हमला किया। वह फिर से उसके हमले से बच निकला, जिससे उसके कंधे पर गंभीर चोट लग गई।

अब हम्मत को भी बहुत गुस्सा आया। अपना बचाव करने की बजाय, उसने राक्षस पर हमला कर दिया।

आखिरकार, आगंतुक को होश आया। उसने किसी तरह खुद को छुड़ाया और पूँछ घुमाते हुए तैरकर दूर चला गया। उसके पीछे पानी में खून के धब्बे दिखाई देने लगे।

हिम्मत जलनिशा के पास आया। उसने अपने होंठों से उसे गुदगुदाया और आश्वस्त किया। जलनिशा और संग्राम ने दृढ़ इच्छाशक्ति वाले हिम्मत को बड़े गर्व से देखा।

एक दोपहर, कुछ शार्क मछलियाँ उन दोनों के परिवार के पास आ गईं।

वे इतराने लगे। संग्राम ने एक के बाद एक उन पर हमला किया और उन्हें खत्म कर दिया। कुछ शार्क पहले ही भाग चुकी थीं। संग्राम ने उन सबको देखा। उसकी स्मृति में साहस के हर भाव को कैद कर लिया।

उस गर्मी में संग्राम ने जलानिषा का दूध छुड़ा दिया। अब वह बड़ा हो गया था। उसने शिकार करना शुरू कर दिया।

संग्राम ने समुद्र की सतह के नीचे तैर रही नीली और हरी मैकेरल मछलियों पर हमला करना शुरू कर दिया। उनका पीछा करते हुए, वह गहरे पानी में गोता लगाने लगा। इन शुरुआती प्रयासों में, उसके जानवर हमेशा उसके जबड़ों से बच निकलते। इससे वह क्रोधित हो जाता था। लेकिन गर्मी बढ़ने के साथ, संग्राम की शिकार करने की क्षमता भी बढ़ने लगी।

धीरे-धीरे, दो मीटर लंबे सैल्मन के झुंड स्कॉटिश तट पर लौटने लगे। उनकी लाल और पीली पीठें तटरेखा पर जमने लगीं। जल्द ही तट के किनारे की पहाड़ियों पर भारी बारिश होने लगी। नदियाँ उफान पर आ गईं। उनका जलस्तर इतना बढ़ गया कि झुंड नदियों के मुहाने में घुस गए। यहीं उनका जन्म हुआ था और यहीं उन्होंने नई पीढ़ियों को जन्म दिया।

हिम्मत को सैल्मन के झुंड समुद्र में दूर होते दिखाई देते। वह जलनिशा और संग्रामा को भोर की धुंधली रोशनी में किनारे पर ले जाता। वहाँ वे अपनी पूँछों के बल खड़े होकर समुद्र की ओर मुँह किए खड़े होते। उनकी आँखें समुद्र की सतह पर लहरों को देखतीं। फिर उन्हें नदियों के मुहाने की ओर दौड़ते सैल्मन के झुंड की आवाज़ सुनाई देती।

हिमात, जलनिशा और संग्राम कंधे से कंधा मिलाकर एक ही कतार में समुद्र की तलहटी में रेत पर चल रहे थे।

समुद्र की सतह के नीचे सैलामैंडर के झुंड दिखाई दे रहे थे। कहीं-कहीं समुद्र की सतह ही

उनकी छत्रछाया में छिपी हुई थी, और मन...

। ३६ । सागरसंग्राम

शिकनों का उत्सव शुरू हो गया। अपने साहस के बल पर, वे सैल्मन मछलियों के पीले, सफ़ेद पेटों की ओर दौड़ पड़े। उनके झटके से, सैल्मन मछलियों के शरीर समुद्र की सतह पर हवा में उछल पड़े। उनके चाँदी जैसे शरीर सुबह के सूरज की गुलाबी रोशनी में चमक रहे थे। वे समुद्र के धीमे पानी पर लपटों की तरह नाच रहे थे। उनका पीछा करते हुए, शिकनों के विशाल शरीर पानी पर दौड़ पड़े। उनकी काली और सफ़ेद धारियाँ, उनके चमकते गुलाबी पेट, उस लपट पर एक पल के लिए उठे।

सैल्मन के झुंड समुद्र की सतह पर वापस गिर रहे थे। उनके साथ, शिकारी भी अपनी पूँछ और पंखों से झुंड पर वार कर रहे थे। उनके विशाल जबड़े बड़ी तेज़ी से खुलते और बंद होते थे। वे सैल्मन के अनगिनत गोल-मटोल शरीरों को निगल रहे थे।

गर्मियाँ खत्म हो चुकी थीं। सर्दियों की बची हुई मछलियाँ समुद्र में बह रही थीं। सैल्मन और मैकेरल मछलियाँ गायब हो रही थीं। मछुआरे जानते थे कि गर्मियों का मज़ा जल्द ही खत्म होने वाला है।

संग्राम अब एक साल का हो गया था। उसकी लंबाई साढ़े तीन मीटर से ज़्यादा हो गई थी। उसका शरीर उफनती लहरों पर सहजता से तैरने लगा था।

हिम्मत को एहसास हुआ कि अब संग्राम और मुझे एक लंबी समुद्री यात्रा पर ले जाना संभव है। उसने अपने परिवार को दक्षिणी समुद्र के एक द्वीप पर ले जाने का फैसला किया। वहाँ उन्हें कड़ाके की सर्दी नहीं झेलनी पड़ेगी। उन्हें भरपूर खाना मिलेगा।

उस जगह का नाम सील द्वीप था!

हिम्मत, जलनिशा और संग्राम की यात्रा शुरू होती है।

अगली दोपहर, उन्हें दूर से इम्पबैक गॉडफ़िश का एक झुंड दिखाई दिया। उनमें से एक बहुत ही खुले स्वर में गा रही थी।

सागरसंग्राम । ३७ ।

कभी ऊँची आवाज़ में, कभी बहुत धीमी आवाज़ में। संग्राम उनका गाना सुनकर हैरान था, यह उसके लिए नया था।

लेकिन हिम्मत झुंड के ज़्यादा पास नहीं गया। संग्राम को एहसास हुआ कि उस झुंड में ढेर

सारी गॉडफ़िश थीं। आकार में हिम्मत से थोड़ी बड़ी! इसलिए उनके ज़्यादा पास जाना ख़तरनाक था।

फिर एक दिन उन्हें सत्तर से अस्सी डॉल्फ़िनों का एक समूह मिला।

ढाई मीटर लंबी डॉल्फ़िन असल में मछली नहीं हैं। जी हाँ, ये डॉ स्तनधारी जीव हैं। इनका दिमाग़ बेहद तेज़ होता है।

डॉल्फ़िनों को भी शिकारियों की मौजूदगी का आभास हो गया था। डॉल्फ़िनों में, वे ही एकमात्र थीं जो शिकारियों से डरती थीं। उन्होंने लहरों और एक-दूसरे के साथ खेलना बंद कर दिया। वे पीठ फेरकर पीछे हट गईं।

लेकिन हिम्मत तेज़ी से उनका पीछा करता रहा और आख़िरकार एक डॉल्फ़िन को अपने जबड़ों में फँसाकर वापस लौट आया।

पानी और लड़ाई करीब हो गए।

सील द्वीप अब नजदीक आ रहा था।

द्वीप के उत्तरी समतल भाग में एक किसान रहता था।

उनके परिवार में पत्नी और दो बच्चे थे। एक दुधारू गाय, कुछ भेड़ें और थोड़ी-बहुत खेती-बाड़ी ही उनकी आजीविका का साधन थी। कभी-कभी, वह अपने नाम से मछली पकड़ने भी जाते थे।

शिकारी अक्सर समुद्र तट पर एक चट्टान पर बैठा रहता था। अपनी पीली, नीली आँखों से वह क्षितिज तक समुद्र को देखता रहता था। उसे उस इलाके में विचरण करने वाली सील मछलियाँ दिखाई देती थीं।

उन काले और सफ़ेद, तीन मीटर लंबी सील के कान नहीं थे। उनकी त्वचा रोएँदार थी। वे दक्षिणी सील थीं। सील मछली नहीं हैं। वे स्तनधारी हैं। उनके पैर भी छोटे हो गए हैं, गॉडफ़िश के पैरों की तरह। अब उनका इस्तेमाल तैरने के लिए पूँछ के पंखों के रूप में किया जाता है।

. 38 . सावर संग्राम

शिकारी सीलों को देखता रहा। कभी लहरों पर खेलता, कभी किनारे पर चट्टानों के बीच शिकार करता। उसने मन ही मन सोचा - इन सीलों और मेरी ज़िंदगी कितनी मिलती-जुलती है! सीलें भी तो संघर्ष कर रही हैं - ज़िंदा रहने के लिए!

उस छोटे से द्वीप के आसपास का इलाका सील के लिए स्वर्ग था। सर्दियों के आते ही सील

प्रजनन के लिए वहाँ आ जाती थीं। उनकी चिंघाड़ से उस द्वीप का किनारा जीवंत हो उठता था। मादा सील झागदार लहरों पर खेलती थीं और किनारे पर चट्टानों में दरारें ढूँढ़ती थीं। वे किनारे की रेत में गर्म बिल खोदती थीं। वहाँ उन्हें अपने नवजात शिशुओं के लिए आश्रय मिलता था। एक-दो महीने के भीतर, समुद्र तट पर हज़ारों पीले और सफ़ेद सील के बच्चे दिखाई देने लगे। उनका शोरगुल हवा में गूंज रहा था।

आरा हिम्मत जलनिशा और संग्राम के साथ उस द्वीप के पास आ गई थी। सब ज़िंदा रहने के लिए संघर्ष कर रहे थे! एक-दूसरे को खाकर भी! यही तो प्रकृति का नियम है!

एक सुबह, हमेशा की तरह, किसान समुद्र को निहार रहा था। अचानक उसकी नज़र झागदार लहरों पर लुढ़कती एक गहरे भूरे रंग की आकृति पर पड़ी। हर साल, हज़ारों मादा सीलें द्वीप के तट पर बच्चों को जन्म देती हैं। उनमें से कई प्रकृति के प्रकोप का शिकार हो जाती हैं। उनके शव द्वीप के चारों ओर समुद्र में बिखरे दिखाई देते थे। किसान ने यह सब अनुभव किया था।

लेकिन किसान उस आकृति को देखकर दंग रह गया। आकृति एक बड़ी सील की थी। लेकिन सील का सिर नहीं था। उसके पेट से मास का एक लंबा टुकड़ा भी खुरच कर निकाला गया था। वहाँ एक घिनौना घाव था।

शिकारी विचारों में डूबा हुआ घर लौट आया।

अगली सुबह, किसान किनारे पर वापस आया और समुद्र को देखने लगा।

जल्द ही उसने एक घायल सील को पानी से बाहर किनारे की ओर संघर्ष करते देखा। सील अपनी पूँछ के पंख को घसीट रही थी और ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ निकाल रही थी। वह ज़ोर-ज़ोर से साँस ले रही थी। उसके पीछे खून का निशान साफ़ दिखाई दे रहा था। उसकी एक पूँछ का पंख बड़े करीने से काटा गया था।

सूरज बहुत तेज़ी से किनारे की ओर आ गया था। मानो उसका पीछा किया जा रहा हो। किसान को भी यही शक हुआ। उसने समुद्र की ओर देखा। उसे हिमत दिखाई दिया।

हिम्मत का विशाल शरीर तेज़ी से किनारे की ओर बढ़ रहा था। उसके सामने पानी में एक बड़ी धनुषाकार लहर बन गई थी। उसकी पीठ पर लगा बड़ा पंख लहर का पीछा कर रहा था। वह पानी को चीर रहा था। हिम्मत के सिर से पानी की एक धार फूट पड़ी। हिम्मत किनारे के बहुत करीब पहुँच गया। किसान ने देखा तो उसका पेट किनारे की चट्टानों से रगड़ खा रहा था।

आख़िरकार, हिमात वापस मुड़ा। वह समुद्र की ओर तैरने लगा। दूर, दो काली परछाइयाँ हिमात के साथ तैरने लगीं।

किसान ने आश्चर्य से यह दृश्य देखा।

उस रात किसान आग के पास बैठा विचारों में खोया हुआ था। उसे एहसास हुआ कि यह एक विशाल, शिकारी समुद्री शेर था। उसे यह भी एहसास हुआ कि वे सील का शिकार करने द्वीप पर आए थे। इस लिहाज़ से, किसान को सील के वध पर बुरा महसूस करने की कोई ज़रूरत नहीं थी। क्योंकि सील मछुआरों के लिए एक बड़ी समस्या थीं। वे द्वीप के आस-पास के पानी में मछलियों को भारी नुकसान पहुँचा रही थीं।

लेकिन शिकारी ने शिकार के देवताओं के बारे में और भी कई कहानियाँ सुन रखी थीं। जब शिकार के देवता पास में होते थे, तो वह अपनी नाव बापलाऊ के साथ मछली पकड़ने समुद्र में नहीं जा सकता था। राक्षसों द्वारा

नाव पर भी हमला हो जाता। वह भी नष्ट हो जाती। और सर्दियों में मछली पकड़ने जाना ज़रूरी था।

उस रात, जब वह सोने गया , तो किसान के मन में केवल एक ही विचार था - कि वे शिकारी मछलियाँ फिर से द्वीप के पास न आएं!

जैसे-जैसे रात गहराती गई, बारिश और ओलावृष्टि तेज़ होती गई। द्वीप मूसलाधार बारिश और ओलावृष्टि से तबाह हो गया। प्राकृतिक तूफ़ानों के कारण सील के बच्चे चीख़ने लगे। माताओं ने अपने बच्चों को आश्रय देने की कोशिश की।

उस सुबह किसान जल्दी उठ गया। उसने समुद्र तट पर चट्टानों के ऊपर से देखा। मंद रोशनी में उसे सील के बच्चों के सफ़ेद शरीर पानी में तैरते हुए दिखाई दिए।

किसान डर के मारे किनारे की ओर भागा। उसने दूर समुद्र में तीन डरावनी आकृतियाँ देखीं। रेत पर दौड़ती लहरें कभी-कभी रक्तवर्ण दिखाई दे रही थीं। किनारे पर खड़ी सील मछलियाँ डरी हुई आँखों से समुद्र को देख रही थीं। वे ज़ोर-ज़ोर से चीख रही थीं।

हिम्मत, जलनिशा और संग्राम बड़ी आसानी से विशाल लहरों को पार कर रहे थे। किसान उन विशालकाय जलीय जीवों को देखकर दंग रह गया। उसे एहसास हुआ कि अगर उसे ज़िंदा रहना है, तो एक ही रास्ता है। उसे उन शिकारी मछलियों को द्वीप क्षेत्र से भगाना होगा। या फिर उन्हें मारना होगा।

लेकिन कैसे? किसान ने मन बना लिया!

अगली सुबह किसान बहुत जल्दी उठ गया और किनारे पर एक ऊँची चट्टान पर बैठ गया।

उसने किनारे पर नज़र डाली। लगभग पैंसठ सील मछलियाँ शांति से सो रही थीं। बिल्कुल शांत। बिल्कुल भी हिलती-डुलती नहीं!

उनके शरीर रात में लहरों द्वारा किनारे पर फेंके गए रेत के थैलों जैसे लग रहे थे।

सुबह के सूरज की किरणें समुद्र पर फैलने लगीं। उनके गर्म स्पर्श से धीरे-धीरे सोई हुई सील मछलियाँ जाग उठीं। बछड़े दूध पीने के लिए अपनी माँओं की गोद में आने लगे।

किसान की नज़र किनारे से कुछ दूर पड़ी। वहाँ एक बड़ा नर मछलियाँ पकड़ रहा था। बीच-बीच में वह किनारे के ऊपर अपनी मादाओं पर नज़र रखता। कहीं कोई दूसरा नर उनमें से किसी मादा को उठा न ले जाए!

हिम्मत पूर्व की ओर दौड़ा। उसके पंख तेज़ धूप में छिपे हुए थे। उसने आखिरी चार सौ मीटर की दूरी तेज़ रफ़्तार से तय की। सील ने उसे देखा तक नहीं। आखिरी पल में, उसने हिम्मत का चमकता हुआ शरीर देखा।

पर तब तक बहुत देर हो चुकी थी।

समुद्र की सतह से ऊपर उठे सील के कड़े पंख ने उसे टक्कर मारी। सील दहाड़ते हुए घूम गई। उसके टूटे हुए फेफड़ों की सारी हवा चली गई। फिर सील के मज़बूत पंख ने उसे पानी से ऊपर हवा में उठा लिया। इससे पहले कि वह फिर से लहरों से टकरा पाती, सील मर गई। एक ही वार में, सील अपनी आँखों की शक्ति से अंधी हो गई।

किसान यह दृश्य देखकर आश्चर्यचकित रह गया।

किनारे पर सील मछलियाँ चीखने लगीं। आकाश में उड़ते समुद्री पक्षी फड़फड़ाने लगे।

लेकिन हिम्मत को उस आवाज़ की क्या परवाह थी? उसके हमले से पैदा हुई आवाज़ शांत होते ही वह फिर से शिकार शुरू करने वाला था।

किसान ने बहुत धीरे से अपनी बंदूक उठाई और निशाना साधा।

साहस लहरों पर तैर रहा था। उसके विशाल पंख समुद्र की सतह पर फिसल रहे थे। उसकी

पतली, काली पूँछ आसानी से समुद्र के पानी को चीर रही थी।

किसान ने पानी में हिमत को साफ़ देखा। उसके विशाल, सीधे पंख, उसका विशाल शरीर, उसकी बड़ी पूँछ, और उसके सिर के पीछे सफ़ेद पट्टी!

किसान ने अपना सिर झुका लिया।

बंदूक की आवाज सुनकर तट पर मौजूद सील मछलियाँ और आकाश में मौजूद समुद्री पक्षी उत्साह से उछल पड़े।

गोली हिम्मत की गर्दन को छूती हुई उसके सिर के पास से ऐसे गुज़री मानो उसके रास्ते में न कोई मांस था, न हड्डियाँ। हिम्मत के शरीर की एक तस्वीर उड़ गई। उसकी हड्डियों के टुकड़े उसके फेफड़ों में घुस गए। हिम्मत का मज़बूत, मांसल शरीर काँपने लगा, फड़फड़ाने लगा। उसकी पूँछ के पंख पानी से टकराने लगे। उसने एक तीखी चीख़ के साथ अपने फेफड़ों से हवा बाहर फेंकी। उस आवाज़ से समुद्र की हवा काँप उठी।

सील और समुद्री पक्षी और भी अधिक शांत हो गये।

हिम्मत के सिर से हवा, पानी और खून की धारा फूट पड़ी। उसके आस-पास का पानी मांस और खून के घिनौने टुकड़ों से लाल हो गया। उसने किनारे की ओर पीठ कर ली। बेहद कमज़ोर हालत में, वह गहरे समुद्र की ओर चलने लगा। उसके पीछे पानी में गाढ़े, काले खून की एक धारा बह रही थी।

जलानिशा और संग्राम ने हिम्मत की जानलेवा चीख सुनी। उस समय वे समुद्र में थे, किनारे से सिर्फ़ आठ सौ मीटर की दूरी पर। दोनों ने तुरंत उड़ान भरी। वे बिजली की गति से हिम्मत की ओर दौड़ने लगे। उन्हें इस बात की ज़रा भी परवाह नहीं थी कि वहाँ कोई ख़तरा है या नहीं।

वे हिम्मत के पास पहुँच गए, हिम्मत सागर की तलहटी में था। वहाँ, धनुष की ठोकरें दिशाहीन होकर चल रही थीं। उसके आस-पास का पानी लाल हो गया था। दोनों ने मिलकर हिम्मत को सागर की सतह पर पहुँचाया। उन्होंने उसकी पीठ पानी से बाहर खींच ली।

साहस का शानदार पंख किसी मतवाले की तरह पानी पर लहराने लगा। जलनिशा और संग्राम उसे धीरे-धीरे समुद्र की ओर ले जाने लगे। उन्हें एहसास हुआ कि किनारे पर ख़तरा है। साहस का पंख सीधा होकर पानी को चीरने लगा। उसके आगे दौड़ती लहरों में लाल पानी के जहाज़ उड़ने लगे।

किसान हैरान था। उसने हिरणों और खरगोशों को अपने घायल साथियों के पीछे भागते देखा था। लेकिन समुद्री जीवों को इतनी बेरहमी से मारने वाले इन जल-राक्षसों का व्यवहार उसे अजीब लगा। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वे दोनों छोटी-छोटी आकृतियाँ अपनी जान बचाने के लिए क्यों नहीं भागीं।

उसके हाथ की बंदूक नीचे चट्टानों पर गिर गई। वह अंधे की तरह लड़खड़ाता हुआ अपने घर पहुँचा।

उस रात, ज्वार आया। किसान की बंदूक, जो चट्टान में गिर गई थी, लहरों द्वारा बहा ले जाई गई!

वह दिन जलनिशा और संग्राम के लिए बहुत दुखद था। हिम्मत अभी भी आंशिक रूप से होश में था। लेकिन उसे अभी भी दर्द का एहसास था। जलनिशा और संग्राम किसी तरह उसे समुद्र की सतह पर रखने में कामयाब रहे।

एक-दो बार जलनिशा ने उसे सहारा देने के लिए हल्का सा धक्का दिया। फिर वह चीखा, और जलनिशा का दिल बैठ गया। वह प्यार भरी आवाज़ में उसे पुकारने लगी।

पश्चिम में, सूरज क्षितिज के नीचे डूबने लगा। समुद्र का पानी लाल-सुनहरा दिखाई देने लगा।

४४। सागरसंग्राम

सूर्यास्त के साथ ही, वह बहादुरी भरा समुद्री युद्ध भी समाप्त हो गया। उसने आखिरी विदाई की आवाज़ निकाली। वह पानी में डूब गया। शाम के धूसर प्रकाश में उसका सफ़ेद पेट एक-दो पल के लिए चमक उठा। फिर उसकी आखिरी समुद्री यात्रा शुरू हुई।

सागर की तलहटी में!

पश्चिम में, सूर्य की किरणें क्षितिज के नीचे पूरी तरह से लुप्त हो गईं। शेष बची किरणों ने भी सागर को अलविदा कह दिया।

जलनिषा और संग्राम बढ़ते अंधेरे में उदास होकर तैरने लगे।

हिम्मत की मौत से उसका जीवन भी अंधकारमय हो गया था।

.. पाँच

हिमात की असामयिक मृत्यु ने जलानिश के दिल में एक भयानक शून्य छोड़ दिया। असहनीय।

हिमात कई सालों तक उसके साथ रहा था। उसने वह समय पूरी तरह से उस शक्तिशाली नर शिकारी पर निर्भर रहते हुए बिताया था। उसने उसका मार्गदर्शन किया था। उसने उसे खाना खिलाया था। उसने उसे समुद्र के कोनों में छिपे कई दुश्मनों से बचाया था। कई मौकों पर, उसने उसके आस-पास झुंड में आने वाले शिकारियों को भगाया था। हिमात जल-आलय की जीवनरेखा था।

अब संग्राम बड़ा हो गया था। उसने धीरे-धीरे जलानिश के मन के खालीपन को भरना शुरू कर दिया। एक खामोशी का पर्दा बन गया था, जिसने उन को अकेला छोड़ दिया था। संग्राम ने उसे चीर दिया।

संग्राम अब शिकारी बन गया। उसने अपने शिकार को ढूँढ़ने के लिए ध्वनि तरंगें निकालनी शुरू कर दीं।

पहले उसने धीमी, लंबी तरंगें उत्सर्जित करना शुरू किया। फिर उसने प्रतिध्वनियों पर नज़र रखनी शुरू कीं। उसकी उत्सर्जित ध्वनि तरंगें समुद्र की गहराइयों में दूर तक पहुँचने लगीं। कभी-कभी वे गहरे समुद्र तल से टकरातीं। वहाँ से वापस लौट आतीं। उन प्रतिध्वनियों ने संग्राम को बताया कि नीचे की ठंडी हवा में कहीं अंधकार का अंत है, कहीं प्रकाश है।

उसकी ध्वनि तरंगों की गूँजें चारों ओर से उसके पास लौट रही थीं। वे उसे अजीब संकेत दे

रही थीं। कभी उसे लगता था कि वे मछलियों के मुँह से आ रही हैं, कभी किसी द्वीप के चट्टानी किनारों से, कभी पानी के किसी अलग तापमान क्षेत्र से। सब कुछ अपरिचित और भ्रामक था।

और उसकी ताकत भी कभी उसकी मदद नहीं कर पाई। उसे तो बस साफ़ पानी में बुलबुले ही दिखाई दे रहे थे! जो सागर की धूसर गहराइयों में घुल रहे थे!

लेकिन अब हिमात की असाधारण अनुभूतियाँ संग्राम के काम नहीं आ रही थीं। उसकी अपनी इंद्रियाँ तेज़ होने लगीं।

अब वह एक डॉल्फ़िन बन गया था। उसे पता भी नहीं चला कि वह क्या सुन रहा है। उसने समुद्र की तलहटी में तैरने की कला में महारत हासिल कर ली थी। वह समुद्र की सतह पर, लहरों के ऊपर तैरने लगा। इससे वह बिना किसी की नज़र पड़े उस जानवर के पास जाकर उस पर हमला कर सकता था।

अब उसकी लंबाई भैंस जितनी हो गई थी। छह मीटर! उसकी ताकत बढ़ गई। वह भैंस के साथ बिना थके तैरने लगा। वह लंबी-लंबी दूरियाँ तय करने लगा। लेकिन साहस की असाधारण गति-वृद्धि की कला में उसे अभी भी महारत हासिल नहीं हुई थी।

जल्द ही उसे जवानी का एहसास होने लगा। उसकी पीठ पर जो पंख टेढ़ा था, वह अब सीधा होने लगा था। वह अब एक कठोर, शक्तिशाली पुरुष शरीर के हथियार में बदलने वाला था।

शक्तिशाली, तेज़ संग्राम अब एक सच्चा मानव-शिकारी बन गया था। जब वह हिमत के साथ था, तो अब वह पानी से आने वाली अलग-अलग आवाज़ों का मतलब समझने लगा था।

लेकिन संग्राम भी अकेला था। किसी झील की तरह।

रात के अँधेरे में, वे दोनों समुद्र की फुसफुसाहट सुन रहे थे। उन्हें हिम्मत के साथ बिताए बचपन के दिन याद आ रहे थे।

सागर के ऊपर अक्टूबर की सर्द हवाएँ चलने लगीं। संग्राम और जल निशा फिरोज की ओर बढ़ने लगे।

समुद्र के उस अनोखे परिदृश्य पर सर्दी का मौसम आ गया था। संग्राम और जलानिशा खेतलैंड और आइसलैंड के बीच समुद्र के किनारे पहुँचे। अचानक उन्हें मछलियों की जानी-पहचानी आवाज़ें सुनाई देने लगीं।

पहले तो आवाज़ें बहुत धीमी आ रही थीं। मानो समुद्र तल पर फैली लहरों पर बहते किसी जलधारा की ध्वनि हो! लेकिन उन्होंने संग्राम को झकझोर कर जगा दिया। उसका तेज़ दिमाग़ सजग हो गया। वह समुद्र की गहराई में जाने लगा और एकाग्र मन से सुनने लगा। पानी और मछलियाँ उसके साथ थीं। फिर आवाज़ें तेज़ होने लगीं। वे शिकारी मछलियों की आवाज़ें थीं।

संग्राम और जलानिशा के दिलों में आशा और खुशी के बीज अंकुरित हो गए।

सुबह की किरणों का सागर हवा में उत्साह भर रहा था। उन दोनों ने कई काले और सफ़ेद शरीरों को एक साथ नाचते देखा। उनका सारा ध्यान संग्राम और जलनिशा पर था। मादा शिकारी मछलियाँ, बच्चे शिकारी मछलियाँ और बच्चे कौतूहल से उन्हें देख रहे थे। वे चहचहा रहे थे। वे गा रहे थे।

और फिर अचानक मछली का नाच धीमा पड़ गया। एकदम रुक गया। चारों तरफ सन्नाटा छा गया।

संग्राम की नज़र शिकारी मछलियों के झुंड के बीच तैरते किसी व्यक्ति पर पड़ी। एक स्तब्ध, भद्दा सा धूसर शरीर! वह झुंड से बाहर निकला। वहाँ, एक भूत सा दिख रहा था,

शिकारी मछलियों का झुंड एक तरफ हट गया और उस आकृति का पीछा करने लगा। वह विशाल आकृति धीरे-धीरे संग्राम और जलनिशा के पास पहुँची।

: ४८ । सागरसंग्राम

वह रेंगने लगा। उसका रंग गहराने लगा। उसका आकार बढ़ने लगा। वह पास आने लगा।

वह एक शिकारी था। उसका शरीर कई ज़ख्मों से ढका हुआ था। उसकी पीठ का मज़बूत पंख भाले से दो टुकड़ों में फट गया था। वह शिकारियों के उस विशाल समूह का नेता था।

उसका नाम विशाल था!

विशाल के पास आते ही संग्राम आगे बढ़ा। स्वाभाविक साहस के साथ! जलनिदेश की रक्षा के लिए! लेकिन इसकी कोई ज़रूरत नहीं थी। संग्राम अभी बच्चा था। विशाल की अपार शक्ति के आगे वह एक पल भी टिक नहीं पाता।

विशाल ने अपने बदसूरत, बिखरे दिमाग़ में फ़ैसला किया। उसने संग्राम, बानी और जलनिशा को अपने झुंड में शामिल कर लिया।

संग्राम और जलनिशा अब अकेले नहीं थे।

विशाल ने अपनी नेक, शक्तिशाली आवाज़ में बहुत धीरे से आदेश दिया। झुंड की सभी मछलियाँ दक्षिण की ओर मुड़ गईं और तैरने लगीं।

गॉडफिश के पिछले पंख, एक के बाद एक, एक पंक्ति में थे, और आगे वाला पंख एक भयंकर, मांसल पंख था, जो आधे में फटा हुआ था!

फिर शुरू हुआ संग्राम का सफर.

वह विशालकाय प्राणी मूल रूप से आर्कटिक महासागर का रहने वाला था! उसका जन्म उत्तरी ध्रुव क्षेत्र में बर्फ की चादर के नीचे हुआ था। उसका बचपन उस बर्फीली ज़मीन पर ज़िंदा रहने के लिए संघर्ष करते हुए बीता। दूध छुड़ाने के कुछ ही दिनों बाद, उसे प्रकृति के प्रकोप का पहला झटका लगा। एक हिमस्खलन ने उसके पूरे परिवार को कुचलकर मार डाला।

विशाल ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जो इस दुर्घटना में बच गया। अब

उसका स्वभाव भी बर्फ़ जैसा हो गया था। बर्फीला, ठंडा, रहस्यमय!

उस दुर्घटना के तुरंत बाद, वह विशालकाय एक विशाल, शक्तिशाली शिकारी में बदल गया। फिर उसने उस बर्फीले इलाके को अलविदा कह दिया। वह नॉर्वे के उत्तर में आ गया। वहाँ, चिलचिलाती गर्मी की धूप में, उसने अपना पहला झुंड इकट्ठा किया। उसके बाद, वह कई सालों तक नॉर्वे और आइसलैंड के बीच समुद्र में घूमता रहा। समुद्र का वह हिस्सा भोजन से भरपूर था। नतीजतन, उसके झुंड में गॉडफिश की संख्या बढ़ गई।

और फिर दूसरे जंगल में विशालबर का जन्म हुआ। प्रकृति के प्रकोप से नहीं! मनुष्य के लालच से!

एक दुर्भाग्यपूर्ण दिन, एक मछली पकड़ने वाली नाव समुद्री शेरों के झुंड का पीछा कर रही थी। वे नॉर्वे के तट से दूर एक संकरी खाड़ी में फँस गए थे। पूरा झुंड मछली पकड़ने वाली नाव के भालों का शिकार हो गया।

विशाल ही अकेला बचा था जो इस मुश्किल घड़ी में बच गया। एक भाले ने उसकी बगल फाड़ दी थी। दूसरे भाले ने उसकी पीठ पर खोपड़ी को छेद दिया था।

ज़िंदगी में दूसरी बार विशाल अकेला था। वह नॉर्वे के तटों से, वहाँ के भैंसों और छोटे-छोटे मवेशियों के झुंडों को अलविदा कहकर निकल पड़ा था। अपने साथ अनुभवों का अनमोल खजाना लेकर!

और अब वह उन शिकारी गॉडफिश के एक विशाल झुंड का नेता बन गया था!

झुंड की अनुभवहीन मछलियाँ अक्सर दानव के आदेशों को समझ नहीं पाती थीं। लेकिन किसी में भी उनकी अवज्ञा करने का साहस नहीं था। नॉर्वे के तट पर हुए उस भयानक अनुभव के बाद, दानव ज़मीन के पास असुरक्षित महसूस करने लगा था। जैसे ही उसे जहाज़ के इंजन की आवाज़ सुनाई देती, वह अपने झुंड को लेकर गहरे समुद्र की ओर मुड़ जाता।

। ५० । सागरसंग्राम

विशाल का अनुभव उसके बहुत काम आया था। अब तक उसकी बहुत कम मछलियाँ समुद्र के प्रकोप और इंसान के लालच का शिकार हुई थीं। इसीलिए उन सभी को उस पर पूरा भरोसा था कि वह उनका नेता है।

विशाल स्वगर संग्राम में एक अनुभवी और विजयी योद्धा था।

संग्राम और जलनिशा जल्द ही विशाल के झुंड का हिस्सा बन गए।

संग्राम अब और भी बड़ा हो गया। वह अपनी उम्र के दूसरे युवा शिकारियों से दुबला-पतला, लेकिन लंबा और ताकतवर हो गया था। वह समुद्र की सतह की नीली-हरी लहरों पर मस्ती से लोटने लगा। वह दूसरे युवा गॉडफिश के साथ खेलने लगा, उनके शिकार का पीछा करने लगा। वह खेल-खेल में उनकी पूँछ काटने लगा।

रात में जब समुद्र चाँदनी की रोशनी में झिलमिलाने लगता, तो युद्ध का अनोखा खेल शुरू हो जाता। वह समुद्र की लहरों पर नाचती चंद्र-मछलियों का पीछा करने लगता। उन्हें पकड़ने की कोशिश करता। उस समय पूरा झुंड शांति से सो रहा होता। झुंड में शामिल मछलियों की परछाइयाँ समुद्र की गहराई में दिखाई देतीं। केवल विशाल ही जाग रहा था। झुंड के चारों ओर गश्त लगाने का उसका काम कभी नहीं रुका।

झुंड में कई युवा शिकारी थे। लेकिन वे सभी विशाल से डरते थे। संग्राम, विशाल से नहीं डरता था। उसे इस बात की परवाह नहीं थी कि विशाल उसकी हर हरकत पर नज़र रख रहा है। लेकिन संग्राम की लापरवाह हरकतें देखकर विशाल को उसकी चिंता होती थी। उसे अपना बचपन याद आ गया। उस बर्फीले हादसे से पहले के दिन उसकी आँखों के सामने आ गए। फिर वह एक लंबी आह भरता।

हौसला आज भी जिंदा है तो, वो लड़ाई शिकारी गॉडफिश की है

वह झुंड के बारे में ज़्यादा कुछ नहीं सिखा सकता था। क्योंकि उसे कभी अपने झुंड को इकट्ठा करने का मौका ही नहीं मिला था। जलनिशा और बाद में संग्राम उसकी छोटी-सी दुनिया थे। लेकिन विशाल अलग था। उसमें नेतृत्व का हुनर था। उसमें अपने झुंड को अनुशासित और मज़बूत कमान वाले समुद्री भेड़ियों में बदलने की ताकत थी।

हिम्मत की मौत और विशाल का आगमन संग्राम के जीवन में एक अलग मोड़ ले लेगा।

विशाल समझ गया कि झुंड की मछलियाँ अब भूखी हो गई हैं। फिर उसने उन्हें एक-दूसरे के समानांतर तैरने का आदेश दिया। परिणामस्वरूप, समुद्र में कई किलोमीटर लंबी धनुषाकार लहरें उठने लगीं। कभी-कभी उसने झुंड का रास्ता टेढ़ा-मेढ़ा कर दिया। इससे कई किलोमीटर समुद्र का पानी भर गया। अब उस जानवर का सुराग ढूँढ़ना आसान हो गया।

इतना करने के बाद भी उन्हें खाना नहीं मिला, तो विशाल ने एक और तरकीब अपनाई। फिर उसने झुंड को तीर के सिरे के आकार में तैरने का आदेश दिया। विशाल सबसे पहले तैरता था और बाकी शिकारी मछलियाँ उसके पीछे दोनों तरफ तैरती थीं! इस तरह उसका झुंड कई दिनों तक बिना कोई ऊर्जा बर्बाद किए तैर सकता था। और फिर आखिरकार उन्हें खाना मिल ही गया!

मार्च की एक ठंडी सुबह थी।

उस सुबह, झुंड की एक मादा को समुद्र तल पर एक बड़ा, स्टील का कंकाल मिला। उसने विशाल को आवाज़ दी। उसने उसे कंकाल दिखाया। विशाल ने झुंड को रुकने का आदेश दिया। शिकारी जोड़े में कंकाल के चारों ओर पानी में कूद पड़े। वे वहाँ बैंगनी-धूसर रोशनी में शिकार करने लगे।

यह कंकाल एक मालवाहक जहाज़ का था। यह ब्रिटिश जहाज़ द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान उत्तरी अटलांटिक महासागर के पार युद्ध सामग्री ले जा रहा था।

एक अंधेरी रात में, उन पर जर्मन पनडुब्बी के टारपीडो से हमला हुआ।

अब समुद्री जीवों ने वहाँ अपना घर बना लिया था। जहाज़ के टूटे हुए पेट और ऊपर लगी स्टील की जाली में ज़िंदगी फिर से ज़िंदा हो गई थी। मूंगे और शंख हर जगह थे। मुँह बनाते हुए, लिंग और कॉड मछलियाँ कंकाल के अंदर-बाहर आने-जाने लगी थीं। दूसरी तरह की मछलियाँ और स्केड वहाँ डेरा जमा चुके थे। ऑक्टोपस डेक पर विचरण करने लगे थे। केकड़े और झींगे उथले समुद्र तल पर छा गए थे।

कंकालों का राजा तीन मीटर लंबा, मोटा, लंबा, अजगर जैसा ईल था! टारपीडो ने जहाज के

पेट में एक बड़ा छेद कर दिया था। वह उसी छेद में रहता था। जहाज के नाविक कभी उस छेद के आसपास बने छोटे-छोटे कमरों में रहा करते थे। उन्होंने युद्ध खत्म होने और घर लौटने के सपने देखे थे। लेकिन अब वे सपने खत्म हो चुके थे। बस वो घिनौना ईल ही बचा था!

उस कंगारू ईल पर हमला करने की किसी की हिम्मत नहीं होती थी। गर्मियों में पाँच-छह मीटर लंबी खूँखार शार्क मछलियाँ वहाँ आती थीं, लेकिन वे भी उसके बिल में घुसने से बचती थीं।

अब, बिल के सुरक्षित अँधेरे से, ईल को कंकाल के आस-पास पानी में अजीबोगरीब आवाज़ें सुनाई दीं। शिकार में मग्न शिकारी मछलियों की आवाज़ें उसके कानों तक पहुँच रही थीं। पानी में फैला खून कंकाल पर फैल गया था। वह ईल के सिर में समा गया। ईल का मन ललचा गया, और आखिरकार मौत की आवाज़ और गंध ने उसे बिल से बाहर खींच लिया।

वह समुद्र की तलहटी में तैरने लगा। उसे चारों ओर मछलियों के अधखाए हुए कंकाल दिखाई दिए। उन कंकालों पर केकड़े और झींगे अधखाए हुए पड़े थे। कंगारू ईल भी उन कंकालों को खा रही थी।

केकड़ों और झींगों ने उसकी मोटी खाल नोंच ली। लेकिन मछली ने काटा नहीं।

कंगारू ईल काफी देर तक जहाज़ के पतवार के नीचे रेंगती रही। तभी एक महिला शिकारी ने उसकी विशाल आकृति को बैंगनी चट्टानों पर रेंगते देखा। अनुभवहीन महिला के मुँह में पानी आ गया। वह उसकी ओर दौड़ी।

कंगरैल ने मादा शिकारी को अपनी ओर आते देखा। उसने अपना शरीर सिकोड़ लिया। पानी में तैरता उसका सिर लहरों पर लहराते बंद बैरल जैसा लग रहा था। उसकी आँखें चमक उठीं। उसका मुँह ऐंठ गया।

मादा शिकारी उसके पास पहुँची। लेकिन कंगारू के बुरे व्यवहार से वह परेशान था। तभी उसे चारों तरफ से अपने साथियों की आवाज़ें आती सुनाई दीं। उसने हिम्मत जुटाई। उसने अपने जबड़े खोले। उसकी पूँछ हिली। वह कंगारू पर झपटी।

महिला शिकारी को कंगारू ईल की कोई हलचल महसूस नहीं हुई, लेकिन एक क्षण के भीतर ही उसके जबड़े में तेज दर्द उठा।

मछली ने बड़ी फुर्ती से उस पर हमला किया, जिससे उसके खुले मुंह में उसकी जीभ की लोच टूट गई।

मादा शिकारी चीख़ती हुई समुद्र की सतह की ओर भागी। पानी में खून की एक धारा उसके पीछे-पीछे बहने लगी।

विशाल ने मादा की चीख सुनी। उसके आदेश पर, कल्प ने शिकार करना बंद कर दिया। उसने दो अनुभवी मादाओं को घायल मादा की देखभाल करने को कहा। फिर, पानी में बहते खून के बहाव के साथ, वह समुद्र की तलहटी में सरक गया। वहाँ, उसका निर्जीव शरीर चट्टानों पर टिका हुआ था। उसकी क्रोधित, लेकिन ठंडी आँखें पानी में घूरने लगीं।

पानी में कई परछाइयाँ थीं। उनमें से एक ज़रा सी हिली। विशाल ने कंगारू को देखा, उसके खुले जबड़े चटक रहे थे,

काँच जैसी आँखें, अजगर जैसा मोटा शरीर! दैत्य की पूँछ हिली। वह ईल पर झपटने के लिए तैयार हो गया।

अचानक, अँधेरे में कुछ चमका और सरसराहट हुई, और विशाल के सामने की रेत पानी में उछल पड़ी। रेत के पर्दे के पीछे से टकराने और टकराने की आवाज़ें आ रही थीं।

तभी रेत वापस समुद्र तल पर जम गई। दानव की क्रोधित आँखों ने संग्राम को देखा। कंगारू ईल की खूनी लाश उसके जबड़ों से लटक रही थी।

इससे पहले कि विशाल हमला कर पाता, संग्राम ने उसे घेर लिया और कंगारू का शिकार कर लिया।

विशाल की ठंडी आँखों में प्रशंसा का कोई भाव नहीं था। उसने संग्राम की तारीफ़ भी नहीं की। लेकिन संग्राम ने उस पर गहरा प्रभाव डाला था।

और अनुभवी विशालकाय व्यक्ति को वर्षों से उस मानव-शिकारी का सामना नहीं करना पड़ा था जिसने उस पर प्रभाव डाला था।

.. छह।

संग्राम की विशाल झुंड के साथ यात्रा पुनः शुरू हुई।

एक मादा ब्लू व्हेल और उसका बच्चा झुंड के रास्ते में तैर रहे थे। ब्लू व्हेल दुनिया का सबसे बड़ा जानवर है। यह तीस मीटर लंबी और डेढ़ सौ टन वज़नी होती है! इसका मुख्य भोजन क्रिल नामक मछली है। शिकारी व्हेल के जबड़ों में भयानक काँटे नहीं होते। क्रिल मछली के बाल होते हैं जिन्हें खाया जा सकता है! इसलिए, वे समुद्री जीवों से नहीं डरतीं। लेकिन उनमें किसी भी समुद्री जीव की पूँछ को एक ही झटके में उड़ा देने की अपार शक्ति होती है। इसलिए, आमतौर पर कोई भी उनके रास्ते नहीं जाता।

उस दिन, मादा ब्लू व्हेल और उसके बच्चे ने पचास डॉल्फ़िनों का एक झुंड अपनी ओर आते देखा। डॉल्फ़िनें हमेशा की तरह एक-दूसरे और लहरों के साथ खेल रही थीं। ब्लू व्हेल समुद्र की सतह पर तैर रही थीं। डॉल्फ़िनें उनसे डरी नहीं थीं। लेकिन वे इतनी समझदार थीं कि विशाल ब्लू व्हेल, जो एक द्वीप जैसी दिख रही थी, के रास्ते में नहीं आईं। उन्होंने तुरंत अपनी नाव छोड़ दी। ताकि मादा और उसके बच्चे को तैरने में कोई बाधा न आए! फिर डॉल्फ़िनें, अपने गीत में मग्न होकर, वहाँ से चली गईं।

नीली व्हेल का बच्चा सिर्फ़ आठ दिन का था। वह खुश था।

उसने अपनी विशाल माँ की ओर गर्व से देखा। बछड़े को समुद्र के सबसे शक्तिशाली प्राणी के वंश में जन्म लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। लेकिन वह अभी भी एक 'बच्चा' था।

मादा अनुभवी थी। बछड़े को जन्म देने से दो दिन पहले, उसका साथी शिकार बन गया था - एक शिकार जहाज की छत पर!

उस दिन, वे दोनों क्रिल का शिकार कर रहे थे। इसी अफरा-तफरी में, मादा ने जहाज के इंजन की घरघराहट सुनी। वह डर गई। उसने अपने दोस्त को आवाज़ लगाई। वह तुरंत समुद्र की सतह पर आया। उसने देखा कि जहाज मादा की ओर बढ़ रहा था। मादा अभी भी पानी के नीचे थी।

नर मछली पानी की सतह से मादा की ओर पैंतीस किलोमीटर प्रति घंटे की रफ़्तार से तैरने लगी। मादा भी पानी की सतह पर तैर गई। उसका दोस्त अब बहुत करीब था।

और फिर उसने वो भयानक आवाज़ सुनी। विस्फोटक, घिनौनी!

हड्डियों के टुकड़े, मांस और खून पानी में बिखरा हुआ था। जहाज़ के कप्तान ने उसकी सहेली की गर्दन पकड़ ली थी। उसने पानी में गोता लगाने की कोशिश की। लेकिन उसकी एक रीढ़ की हड्डी उखड़ गई थी। वह अपनी पूँछ भी नहीं हिला पा रहा था। उसके सिर से खून की धार फूट पड़ी। भाले से बंधी नायलॉन की रस्सी उसे घसीटने लगी।

मादा भाले की पहुँच से बाहर थी। उसने अपने दोस्त का नंगा पेट पानी से ऊपर आता देखा। वह बहुत नीचे लेटा हुआ था।

वह औरत मौत को जानती थी। उसे पता था कि उसके दोस्त की आत्मा उसके शरीर से निकल चुकी है। वरना, वह मदद के लिए उसके पीछे भागती। लेकिन अब कोई फायदा नहीं था।

उसे अपने गर्भ में पल रहे भ्रूण की याद आई। उसके लिए

उसे ज़िंदा रहना ज़रूरी था। उसने पानी के नीचे शिकारी जहाज़ द्वारा पीछा किए जाने से बचने के लिए, शिकारी जहाज़ की विपरीत दिशा में चलना शुरू कर दिया।

दो दिन बाद ही उसने साढ़े तीन मीटर लंबे एक बछड़े को जन्म दिया। उसे लेकर वह समुद्री युद्ध के लिए तैयार हो गई।

डॉल्फ़िन अब बहुत दूर जा चुकी थीं। मादा ब्लू व्हेल को पानी के नीचे क्रिल का आभास हो गया। उसने बच्चे को अपने पीछे आने का आदेश दिया। वह उसे अकेला छोड़ने के खतरे से बचना चाहती थी। दोनों ने पानी के नीचे गोता लगाया और दो-तीन धारें छोड़ीं।

पानी की सतह के नीचे धुंधली रोशनी में तैरती हजारों मछलियाँ

मादा ने क्रिल का एक झुंड देखा। वह वहीं झपटी। उसके जबड़े खुल गए। सैकड़ों क्रिल उसके जबड़ों के बालों में इकट्ठा होने लगे। उसकी विशाल जीभ उन्हें चूसने लगी। जल्द ही, झुंड तितर-बितर हो गया।

उसका बछड़ा माँ के भोज को बड़ी-बड़ी आँखों से देख रहा था।

और फिर महिला पूरी तरह से हैरान रह गई।

अब उन्हें समुद्र की सतह पर जाना था। और उसी क्षण उसने पानी में एक भयानक सरसराहट

सुनी, वही धीमी, मगर तेज़! बछड़े ने वह आवाज़ पहले कभी नहीं सुनी थी। पर वह भी डर के मारे सिकुड़ गया, लेकिन उसकी माँ उस आवाज़ को पहचान गई थी - और वह मौत का पैगाम भी!

आवाज़ किसी विशालकाय पक्षी के झुंड की थी। उनका झुंड एक के पीछे एक, समानांतर तैर रहा था।

विशालकाय की प्रतिध्वनि की तरंगों का पता लगाने वाली प्रणाली ने नीले रंग का पता लगाया है

एक मादा समुद्री घोड़े और उसके बच्चे का अस्तित्व दर्ज किया गया।

मादा नीली एंजेलफ़िश जानती थी कि दक्षिण दिशा से शिकारी एंजेलफ़िश का एक झुंड आ रहा है। उसके पास एक ही रास्ता था। वह अपने बछड़े को पीठ पर लादकर पानी के नीचे तिरछे उत्तर की ओर तैरती। फिर वह पानी की सतह पर तैरती। तब तक शिकारी एंजेलफ़िश का झुंड उससे पहले उत्तर दिशा में चला जाता, और फिर वह दक्षिण दिशा में तैरती— शिकारियों से दूर!

उसने बछड़े को आज्ञा दी और फिर वह पहली बार समुद्र तल के समानांतर तैरने लगा। उसके शरीर में अब बहुत कम ऑक्सीजन बची थी। उसके फेफड़े जल रहे थे। बछड़ा इसे बर्दाश्त नहीं कर सका। वह तेज़ी से समुद्र की सतह पर आया और साँस लेने के लिए संघर्ष करने लगा। लेकिन उसकी माँ ने उसे ऐसा न करने की चेतावनी दी।

समुद्र की सतह पर शिकारियों की आवाजें अब बहुत स्पष्ट सुनी जा सकती थीं।

अनुभवी विशरुता समझ गया कि समुद्र की सतह के नीचे क्या चल रहा है। उसने झुंड को तैरते रहने का आदेश दिया। झुंड तैरता रहा। लेकिन विशाल रुक गया। संग्राम, जो उससे कुछ दूरी पर तैर रहा था, भी रुक गया। उसने विशाल के आदेश को अस्वीकार कर दिया था। विशाल के शिकार में शामिल होने की अदम्य इच्छा ने उस पर काबू पा लिया था। विशाल ने संग्राम की बात अनसुनी कर दी।

बछड़ा पानी के नीचे आने के लिए छटपटा रहा था। मादा उसे रुकने के लिए कह रही थी। उसे डाँट रही थी। आखिरकार, उसने शिकारी मछलियों के एक झुंड की उत्तर दिशा की ओर आती आवाज़ सुनी। उसकी जान खतरे में थी। वह रेंगते हुए समुद्र की सतह की ओर बढ़ने लगी। बछड़ा उसके पीछे दौड़ा।

माँ और बछड़ा पानी के पास आए। माँ ने देखा कि सिका हिरणों का झुंड उत्तर दिशा में बहुत

दूर चला गया है। उसने राहत की साँस ली। पानी की दो धारें समुद्र में उछलीं।

सागरसंग्राम । ५९।

विशाल ने यह सब देखा। फिर उसने दूर जा चुके झुंड को ऊँची आवाज़ में पुकारा। उसने उन्हें रुकने और वापस लौटने का आदेश दिया।

मादा नीले बगुले को एहसास हुआ कि उसके साथ धोखा हुआ है। विशाल और संग्राम एक तरफ और पूरा झुंड दूसरी तरफ! अब वह क्या करेगी? अपने बछड़ों की रक्षा कैसे करेगी? उसे एहसास हुआ कि अब सब कुछ खत्म हो गया है!

लेकिन उसने कुछ करने की ठान ली और विशाल को ज़ोर से मारा। वह पलटी और विशाल पर चल पड़ी। उसके बछड़े को कुछ समझ नहीं आया। लेकिन उसे पता था कि कुछ भयानक होने वाला है।

मादा नीली गॉडफ़िश उस विशालकाय से तीन गुना बड़ी थी। विशालकाय ने आसानी से उसका वार टाल दिया। मादा को पता था कि मौत करीब है। वह पीछे मुड़ी और अपने बछड़े की ओर चल पड़ी। उसे गोद में लेने के लिए!

उसके मन में भावनाओं का तूफ़ान उठ खड़ा हुआ था। उसकी योजना विफल हो गई थी, और उसे अपनी और अपने बछड़े की जान जाने का ख़तरा था।

अब तक, विशाल उसके साथ तैरने लगा था। शिकारी मछलियाँ ब्लू रैसेज़ से कहीं ज़्यादा तेज़ तैर सकती हैं। अचानक, विशाल ने मादा पर झपट्टा मारा। उसने उसका जबड़ा और जीभ का एक बड़ा हिस्सा तोड़ दिया। मादा का सिर दर्द से जलने लगा। वह बाईं ओर मुड़ने लगी।

लेकिन तब तक संग्राम उससे भिड़ चुका था। उसने मदीबा पर बाईं ओर से हमला किया। उसने उसकी बाईं आँख और खोपड़ी का एक हिस्सा फाड़ दिया।

माँ ने अपनी बची हुई दाहिनी आँख से अपने बछड़े को आखिरी बार देखा।

समुद्र का पानी अब खून से सना हुआ था, मछलियों के टुकड़े बिखरे पड़े थे।

१ ६० : सागरसंग्राम

भयंकर कोलाहल मच गया। अब दैत्यों का झुंड वहाँ पहुँच गया था। बदकिस्मत मादा ने मौत के आगे घुटने टेक दिए। वह सीधे पानी में कूद गई। उसका पीला सफ़ेद पेट पानी पर लटक रहा था। वह शिकारियों के आखिरी हमले का इंतज़ार कर रही थी।

वह दुनिया की सबसे बड़ी और सबसे शक्तिशाली मादा थी। लेकिन शिकमों ने उसका भी

शिकार किया! वह भाग्यशाली थी। उसे बस दो पल आश्रय के लिए इंतज़ार करना पड़ा। शिकारियों ने उस पर चारों तरफ से हमला कर दिया।

चार या छह मिनट में, उन्होंने उसकी फड़फड़ाहट को हमेशा के लिए ख़त्म कर दिया!

लेकिन उसके बछड़े इतने भाग्यशाली नहीं थे। उन्होंने अपनी माँ का भयानक कत्लेआम अपनी चौड़ी आँखों से देखा। वे उसके खून के पानी में छटपटाने और तड़पने लगे। वे संघर्ष करने लगे। छटपटाने लगे।

एक-दो शिकारियों ने बछड़े की तरफ़ ध्यान दिया। बछड़े ने उन्हें आते देखा। उसने ज़ोर से चीख़ मारी। और फिर डेढ़-दो मिनट के लिए डर और दर्द से पागल हो गया!

मादा का जीवन-संघर्ष अब समाप्त हो चुका था। और वह भी उसके बच्चे के जन्म से पहले ही!

दावत ख़त्म हो गई है। विशाल झुंड को उत्तर की ओर लौटने का आदेश दिया गया है।

संग्राम ने विशाल के झुंड में दो साल से ज़्यादा समय बिताया। नए अनुभव प्राप्त करते हुए! विशाल को देखते हुए! उसकी नकल करते हुए!

फिर एक दिन अपने झुंड को अलविदा कहने का समय आ गया।

बसंत की गर्मी समंदर में फैलने लगी थी। संग्राम और उसके साथी, युवा शिकारी, अब मर्दों में तब्दील हो रहे थे। उनके पेट में एक अलग ही आग धधक रही थी। लूटपाट का खेल खेलते हुए वे एक-दूसरे पर जमकर हमला करने लगे - बेहद गुस्से से। गुस्से से!

विशाल ने यह सब देखा और एक युवा नरभक्षी के घायल होने से पहले ही लड़ाई रोकनी शुरू कर दी। उसके दृढ़ आदेश से ही युवा विद्रोही होश में आने लगे। लेकिन कभी-कभी विशाल को अपनी शारीरिक शक्ति का भी इस्तेमाल करना पड़ता था। वह मुक्का मारकर लड़ाई खत्म करने लगा।

लेकिन धीरे-धीरे विशाल का धैर्य जवाब देने लगा।

संग्राम अब सचमुच बड़ा हो गया था। वह लगभग छह फुट लंबा हो गया था। उसकी पीठ बहुत छोटी हो गई थी। उसकी पीठ के पंख सीधे और मज़बूत होने लगे थे।

वह छोटी मादाओं के साथ खेलते-खेलते उनसे चिपकने लगा। रात के बाड़े में वह आक्रामक हो

गया। ज़ोर-ज़ोर से गुर्राने लगा।

विशाल की नज़रों से ओझल हो गए थे। पहले तो उसने उन्हें न देखने का नाटक किया। फिर एक रात उसने एक फैसला लिया।

अप्रैल का महीना था। एक सुबह संग्राम की नींद खुली। उसने देखा कि विशरु का एक निहत्था, भूरे बालों वाला आदमी अपना लैंप लेकर आ रहा है।

संग्राम के शरीर में आए इस बदलाव ने उसके मन में कड़वाहट और नफ़रत भर दी थी। उसने अपने मिसाइल जैसे पंख फड़फड़ाए। और उस दानव पर सीधा हमला कर दिया। पानी में हलचल मच गई।

बलवान और अनुभवी विशाल ने आसानी से हमले को नाकाम कर दिया। संग्राम और भी ज़्यादा क्रोधित हो गया। उसने एक के बाद एक हमला किया। लेकिन विशाल ने सबको नाकाम कर दिया। आखिरकार, उसने संग्राम की बगल में एक ज़ोरदार वार किया। संग्राम को होश आ गया।

एक बार हम उसके कमरे में प्रवेश कर गए तो हम विशाल की चालों से अपना बचाव नहीं कर पाएंगे।

युद्ध सीधा और अंधाधुंध था। लेकिन विशाल जानता था कि वह क्या कर रहा है। उसके पास समुद्री युद्धों का वर्षों का अमूल्य अनुभव था।

। ६२ । सागरसंग्राम

आखिरकार संग्राम ने अपने हमले रोक दिए। उसने एक बार विशाल को घूरा। विशाल की ठंडी नज़रें उसकी नज़रों से मिलीं। संग्राम ने जालानी को चौड़ी आँखों से देखा। फिर उसने झुंड की तरफ़ पीठ कर ली।

वह पन्ने जैसे हरे पानी में तैरने लगा। विशाल और जलानिषा उसे बहते हुए बहुत देर तक देखते रहे। युद्ध की कहानी छोटी होती गई। अंततः वह गायब हो गया।

लहरों ने उसके भागने की आवाज़ भी दबा दी। संग्राम को अब अकेले ही समुद्र से लड़ना था!

।। सात

संग्राम ज़िंदगी में पहली बार अकेला था। बिल्कुल अकेला!

बोला, "मैं एक शिकारी हूँ। अकेला, बिल्कुल अकेला!"

लेकिन किसी ने उसकी पुकार का जवाब नहीं दिया। उसके कानों तक सिर्फ़ लहरों की टकराने की आवाज़ पहुँच रही थी! समुद्र में गरजती हवा!

बसंत ऋतु अभी शुरू ही हुई थी। आसमान में बसंत के खूबसूरत रंग खिल रहे थे। संग्राम ने उत्तरी आसमान की ओर देखा। उसका हृदय आनंद से भर गया। उसकी भावनाएँ सागर की लहरों की तरह उमड़ने लगीं। मानो कोई उसे उत्तर की ओर बुला रहा हो। वे पुकार रही थीं।

उसने रात के आकाश में ध्रुवतारा देखा, और फिर एक अटूट धारा उसे उत्तर की ओर खींच ले गई। वह क्षितिज की ओर, ध्रुवतारे की ओर तैरने लगा।

उसके सामने नॉर्वे के उत्तरी सागर का ठंडा और लगातार उबलता हुआ समुद्र था! पानी की बड़ी-बड़ी, लंबी लहरें उसकी पीठ पर गरजने लगीं। वे उसकी बहती पूँछ से टकराकर टूटने लगीं। वे झाग बनाने लगीं और पीछे गिरने लगीं।

संग्राम को पानी की सतह पर ज़्यादा खाना नहीं मिला, इसलिए उसने पानी के नीचे गोता लगाने का फैसला किया।

उसने अपने सिर से एक बार, दो बार, चार बार पानी की धारें छोड़ीं। उसके फेफड़े खाली हो गए। फिर वह एक विशाल लहर की चोटी पर चढ़ गया। उसने अपनी नाक नीचे कर ली। वह चोटी के ऊपर से गोता लगाने लगा। वह अटलांटिक महासागर की तलहटी में उतरने लगा। हर तरफ ठंडा पानी! हल्का अंधेरा! और गहरा सन्नाटा!

जैसे-जैसे वह पानी में गहराई में गया, उसके शरीर पर दबाव बढ़ने लगा। उसके शरीर का वह तंत्र, जो प्रकृति ने उस दबाव को झेलने के लिए बनाया था, काम करने लगा। उसकी 'लहरदार' पसलियाँ अंदर की ओर सिकुड़ गईं। उसके फेफड़े फूलने, फूलने और जलने लगे। लेकिन कुछ ही देर में जलन बंद हो गई। उसके कानों में ध्वनि तरंगें गूंजने लगीं। लेकिन कुछ ही देर में भिनभिनाना भी बंद हो गया।

समुद्र तल हर जगह चट्टानों से भरा हुआ था। चट्टानों पर गाद की एक मोटी परत फैली हुई थी। लड़ाई वहीं तक पहुँच गई।

अब वह समुद्र तल पर शिकार करने लगा। वह शिकार की तलाश में निकल पड़ा। वह चलने

लगा। वह रेंगने लगा। वह ध्वनि तरंगें छोड़ने लगा। वह गूँज सुनने लगा।

उसे खाने के लिए भरपूर मात्रा में 'स्क्विड' मिलने लगे। इनकी लंबाई पंद्रह से बीस सेंटीमीटर से लेकर पंद्रह से सोलह मीटर तक होती है। शिकारी मछलियों से बचने के लिए ये एक खास तरकीब अपनाते हैं। ये अपने शरीर से स्याही जैसा एक काला तरल पानी में छोड़ते हैं। इसलिए ये स्क्विड इस बात का फायदा उठाकर भाग निकलते हैं कि शिकारी इन्हें देख नहीं पाते।

अब संग्राम ने समुद्र की तलहटी की ओर फैल रहे स्क्विड का शिकार करना शुरू कर दिया। एक बार उसकी नज़र एक विशाल, पंद्रह मीटर लंबे स्क्विड पर पड़ी। संग्राम उसे काट पाता, उससे पहले ही स्क्विड ने अपने तंबू उसके शरीर के चारों ओर लपेट लिए। संग्राम के लिए यह अनुभव नया था। और तो और, उसे स्क्विड से पहले कभी डर नहीं लगा था।

सागरसंग्राम ।65.

मुझे ऐसा नहीं लगा था। और वो आवाज़ भी हल्की थी। धीमी!

लेकिन एक पल में ही संग्राम के शरीर पर स्क्विड की पकड़ मज़बूत हो गई। इतनी मज़बूत कि संग्राम को लगने लगा कि वह उसे कुचल देगा। स्क्विड संग्राम को समुद्र तल पर घसीटना चाहता था। संग्राम ने अपनी पूँछ का पंख हिलाने की कोशिश की। लेकिन उसके पंख भी स्क्विड की पकड़ में फँस गए। संग्राम के मन में एक भयानक डर फैल गया। वह मुश्किल से हिल पा रहा था।

संग्राम ने जान बचाने के लिए चीखते हुए ज़ोर से झपट्टा मारा। किसी तरह वह पीछे मुड़ा और स्क्विड के शरीर पर काट लिया। स्क्विड फुफकारने लगा। यह लड़ाई काफी देर तक चलती रही। तब तक संग्राम के शरीर से ऑक्सीजन खत्म हो चुकी थी, और आखिरकार स्क्विड की सूंड ने उसे आज़ाद कर दिया। संग्राम साँस लेने के लिए अंधाधुंध समुद्र की सतह पर भागा!

उसे लगा कि वह कभी समुद्र की सतह तक नहीं पहुँच पाएगा। उसके शरीर में ऑक्सीजन बिल्कुल नहीं बची थी। उसके दिमाग पर एक अजीब सा दबाव था। वह सदमे की हालत में था। वह समुद्र की सतह पर उछल पड़ा। उसने साँस ली। धीरे-धीरे उसके दिमाग पर दबाव कम हुआ। उसने साँस वापस पा ली।

समुद्र के हर कोने में दुश्मन की कतारें थीं। और संग्राम अकेला था! बिल्कुल अकेला!

संग्राम फिर चिल्लाने लगा। मैं एक जवान शिकारी हूँ। अकेला! बहुत अकेला!

जहाँ लड़ाई हो रही थी, वहाँ से कुछ किलोमीटर दूर एक शिकारी मछली का परिवार था, जिसके तीन बच्चे थे। उनमें से एक मादा अभी-अभी यौवन अवस्था में आई थी।

उनकी हीरो श्वेतप्रभा थीं!

त्वेत्प्रभा ने संग्राम की पुकार सुनी। उसका दिल उसकी ओर तेज़ी से धड़कने लगा। उसके माता-पिता गहरे समुद्र में गोते लगा रहे थे। उसने यह देखा। उसकी छोटी बहन समुद्र की सतह पर खेल रही थी। उसने भी कुछ पल उनके साथ खेले।

तभी गोरे आदमी को फिर से युद्ध की आवाज सुनाई दी।

श्वेताप्रभा ने खेलना बंद कर दिया। वह अचानक मुड़ी और मैदान की ओर तैरने लगी। उसके भाई-बहन हैरान रह गए। उन्होंने उसका पीछा करने की कोशिश की, लेकिन वह उन्हें नहीं मिली।

थोड़ी दूरी तय करने के बाद वह सागरमा से मिल गई, वह कहना चाहती थी - बाम, मैं थोड़ी आ रही हूँ, चलो!

संग्राम ने सफ़ेद रोशनी की आवाज़ सुनी। वह रुक गया। उसके शरीर में एक अभूतपूर्व भावना की चिंगारियाँ दौड़ने लगीं।

उसने समुद्र पर फैली धुंध से एक सफ़ेद रोशनी आती देखी। वह बागड़ी के पास थी। वह उससे फुसफुसाने लगा। उसने कोई जवाब नहीं दिया।

संग्राम ने उसकी योनि के पास मुँह रखकर उसे गुदगुदाया। उसने उसके शरीर को छुआ। सफ़ेद रोशनी अभी पूरी तरह विकसित नहीं हुई थी।

नर गॉडफ़िश किसी भी मादा के पास नहीं जाते। वे कुछ समय प्रेमालाप में बिताते हैं। वे एक-दूसरे के स्वभाव को समझते हैं। उसके बाद ही वे संभोग करते हैं। उनका साथ जीवन भर चलता है। समुद्री युद्ध के लिए एक साथी ज़रूरी होता है।

संग्राम श्वेतप्रभा को साथ लेकर उत्तर की ओर तैरने लगा!

संग्राम और श्वेतप्रभा अटलांटिक महासागर की उत्तरी सीमा पार कर आर्कटिक महासागर में प्रवेश कर गए। अब उन्हें आकाश में ध्रुव तारा दिखाई नहीं दे रहा था जो उन्हें रास्ता दिखा सके। लेकिन उत्तर-पश्चिम से

आने वाली गर्म जल धाराएं उन्हें उत्तर की ओर धकेलने लगीं।

उनकी समुद्री यात्रा कई दिनों तक जारी रही।

और फिर एक साफ़, उजली सुबह उन्होंने ठंडे पानी में बर्फ़ के टुकड़े तैरते देखे। संग्राम और श्वेतप्रभा धूप में चमकते इन टुकड़ों को देखने के लिए बार-बार समुद्र की सतह पर आते रहे। संग्राम ने बर्फ़ के एक छोटे से टुकड़े को धक्का दिया। हज़ारों चमकते बर्फ़ के टुकड़े हवा में उड़ गए। श्वेतप्रभा ने एक और टुकड़े पर प्रहार किया। हज़ारों चमकते बर्फ़ के टुकड़े उसके सिर पर गिर पड़े।

अब वे मध्य रात्रि के सूर्य की भूमि में प्रवेश कर चुके थे!

उत्तरी ध्रुव के पास! हवा और समुद्र और भी ठंडे हो गए। आधी रात का आसमान धूसर नारंगी रंग में नहाया हुआ था। और उस आसमान के नीचे, उत्तरी ध्रुव के पास पहली व्हेल मछलियाँ संघर्ष और सफ़ेद रोशनी में हमारी ओर तैरती हुई दिखाई दीं। वे दो तैरते हुए हिमखंडों के बीच की खुली जगह में तैरने लगीं।

लेकिन उनमें से कोई भी उस इलाके में नहीं जाना चाहता था। वे अब समुद्र की सतह से चार सौ मीटर नीचे तैर रहे थे। उन्होंने अपने सामने देखा कि बर्फ के दो विशाल टुकड़े आपस में मिल रहे थे। उनका रास्ता रुक रहा था। संग्राम ने श्वेतप्रभा को आदेश दिया। वे गहरे पानी में उतर गए। संग्राम की योजना थी कि जैसे ही हिमखंड गायब होंगे, वे समुद्र की सतह पर आकर साँस लेंगे।

लेकिन बर्फ़बारी तक सब कुछ खत्म नहीं हुआ था। श्वेतप्रभा अब डर गई थी, उसे लग रहा था जैसे वह समुद्र की सतह पर आ गई हो। उसके फेफड़ों में जलन असहनीय होने लगी थी। संग्राम ने उसे हिम्मत दी। वे तेज़ी से आगे बढ़ने लगे।

संग्राम ने ऊपर देखा। दोनों बर्फ़ें अब आपस में मिल गई थीं। वे एक विशाल पर्वत बन गई थीं। भय ने उसके मन को जकड़ लिया।

उसका शरीर अब श्वेताप्रभा के शरीर को छू रहा था। वह उसका दर्द महसूस कर सकती थी।

और आख़िरकार हिमखंड का किनारा नज़र आया। वे पूरी ताकत से तैरने लगे। वे पानी की सतह पर उछलने लगे। वे ज़ोर-ज़ोर से साँस लेने लगे।

फिर वे समुद्र की सतह पर चुपचाप लेट गए। संग्राम ने अपनी एक बड़ी पूँछ का पंख श्वेतप्रभा के सिर पर रख दिया। श्वेतप्रभा खुश हो गई। संग्राम की उपस्थिति में उसे सुरक्षा का एहसास हुआ। उसे संग्राम से प्रेम होने लगा।

संग्राम और श्वेतप्रभा उत्तरी ध्रुव की ओर वापस तैरने लगे।

संग्राम ने शिकार करना शुरू कर दिया। श्वेतप्रभा को अब ज़्यादा खाने की ज़रूरत थी। क्योंकि इससे वह मोटी हो जाती। और फिर अगर कोई नया बछड़ा उनके जीवन में आता, तो उसे खिलाना आसान हो जाता। क्योंकि श्वेतप्रभा अब पूरी तरह से बड़ी हो चुकी थी।

फिर एक सुबह संग्राम ने श्वेताप्रभा के व्यवहार में अचानक बदलाव देखा, मानो वह कह रही हो, "जल्दी से मेरे पास आओ!"

संग्राम के शरीर में एक अजीब सा बदलाव आया। मानो उसके चारों तरफ से बिजली की किरणें निकलने लगीं। वह इधर-उधर घूमने लगा। कभी सफ़ेद रोशनी से दूर, कभी उसके बहुत पास! कभी उसके पेट के नीचे, कभी उसकी पीठ से! कभी उसके आगे, कभी उसके पीछे!

श्वेतप्रभा भी संग्राम को खेल-खेल में गले लगाने लगी। और फिर क्या था! सागर उनका खेल का मैदान बन गया। वे साथ-साथ तैरने लगे। पानी में छप-छप करने लगे। घूमने लगे। गोते लगाने लगे। उनकी अनोखी क्रीड़ा ने सागर की गहराई में एक अलग ही सनसनी पैदा कर दी।

अचानक, समुद्र की सतह पर लहरें उठने लगीं।

संग्राम और श्वेतप्रभा समुद्र की सतह पर आ गए। वे एक मक्का के चारों ओर एक घेरा बनाकर घूमने लगे। उनके मन में प्रेम और भावनाओं की लहर उठी। धीरे-धीरे घेरा छोटा होने लगा।

उनके शरीर एक-दूसरे को छूने लगे। उनके दिमाग़ों की भावनाएँ उनके पेट में गूंजने लगीं। वे उन भावनाओं से मंत्रमुग्ध हो गए, वे पागल पंख बन गए। उनके शरीर एक-दूसरे से जुड़ गए।

उनके शरीर, मुँह से मुँह, पेट से पेट और पूँछ से पूँछ, खुशी से पानी से बाहर उछल पड़े। सूरज की लाल किरणों ने उन्हें गुलाबी रंग में नहला दिया। एक पल के लिए दोनों शरीर हवा में लटके रहे। और फिर एक साथ वापस सागर में गिर पड़े। पानी की ओस सागर पर हज़ारों मोतियों की तरह चमक रही थी। और फिर वे सागर की गहराइयों में खो गए।

संग्राम और श्वेताप्रभा का प्रेम-प्रसंग समाप्त हो चुका था। उनकी पहली मुलाक़ात हो चुकी थी।

संग्राम और श्वेतप्रभा समुद्र की मखमली सतह पर आराम कर रहे थे। उनके शरीर अब भी साथ थे। उनके स्पर्श में अब संतुष्टि और प्रेम का उल्लास था।

कुछ देर बाद, दोनों फिर से हिलने-डुलने लगे। उनके पहले मिलन का उत्साह और संतुष्टि अब खत्म हो चुकी थी। वे उस अभूतपूर्व आनंद को फिर से चखने के लिए उत्सुक थे।

श्वेतप्रभा बहुत धीमी गति से पानी में तैरने लगी। संग्राम उसके पीछे-पीछे चलने लगा। उसके मन में बस यही इच्छा थी कि श्वेतप्रभा उसकी नज़रों से ओझल न हो! लेकिन कुछ ही देर में उसकी भावनाएँ उमड़ने लगीं। वह श्वेतप्रभा के साथ तैरने लगा। उसकी धीमी साँसें लेने लगा। श्वेतप्रभा उससे दूर जाने लगी। वह फिर से उसे चिढ़ाने का खेल खेलने लगी।

। ७० । सागरसंग्राम

वे एक-दूसरे के चारों ओर एक वृत्ताकार में घूमने लगे। उनकी गति का वेग बढ़ता गया। उस वृत्त की परिधि छोटी होने लगी। वे अपनी पूँछ से पानी पर वार करने लगे और उनके शरीर धनुषाकार होने लगे। वे उस वृत्त के बिल्कुल बीच में आ गए। पानी में हलचल मच गई।

संग्राम और श्वेतप्रभा के शरीर फिर से एक-दूसरे को छूने लगे। उनके दिल श्रीलना के लिए स्नेह से जल रहे थे। वे आकाश को भूल गए।

समुद्र के उस हिस्से में एक छह मीटर लंबी स्वोर्डफ़िश तैर रही थी। स्वोर्डफ़िश एक ऐसी मछली होती है जिसके सिर के सामने तलवार की धार जैसा एक बहुत ही सख्त, नुकीला और नुकीला अंग होता है। उस स्वोर्डफ़िश की तलवार तीन मीटर लंबी थी। लगभग उसके शरीर जितनी लंबी!

स्वोर्डफ़िश ने संग्राम और श्वेताप्रभा के प्रेम-क्रीड़ा से उत्पन्न उत्तेजना सुनी। वह उस जोड़े के बहुत करीब आ गया। लेकिन पानी में उठते बुलबुलों के कारण उसे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। उसे उन मेहमानों पर गुस्सा आ रहा था जो उसके इतने करीब आकर इतनी हलचल मचा रहे थे। वह यह जानने के लिए उत्सुक था कि यह उत्तेजना कैसे पैदा हुई - और गुस्सा भी!

7 स्वोर्डफ़िश समुद्र में उठते बुलबुलों के बीच से तेज़ी से निकल गईं। बहुत तेज़ी से, पूरी ताकत से!

श्वेताप्रभा चीख पड़ी। उसके दिल और शरीर का प्यार और खुशी पल भर में गायब हो गई। बस रह गया एक भयानक, असहनीय दर्द!

एक तेज़ वार के साथ, उसके सिर के सामने रखी तलवार गोरे आदमी के सीने में धँस गई। तीन मीटर लंबी तलवार उसकी ही थी।

सागरसंग्राम । ७१ ।
यह उसके फेफड़ों को चीरता हुआ उसके हृदय में प्रवेश कर गया।

सफ़ेद रोशनी ने पिता के शरीर को दर्द से कराहते हुए एक ज़ोरदार झटका दिया। उस झटके से स्वोर्डफ़िश की तलवार जड़ से टूट गई। स्वोर्डफ़िश के सिर में दर्द की आग भड़क उठी। वह चीख़ता हुआ पलटा। गहरे पानी की ओर भागा। वह गायब हो गया।

श्वेतप्रभा एकदम स्तब्ध रह गई। संग्राम को समझ नहीं आ रहा था कि क्या हुआ। उसने स्वोर्डफ़िश कभी नहीं देखी थी। संग्राम उस पल अपने आप में खोया हुआ था, उस मुलाकात के जोशीले आनंद की प्रतीक्षा कर रहा था।

अब वह श्वेतप्रभा के इर्द-गिर्द घूमने लगा। उसे उकसाने लगा। फिर, गुस्से में, उसने उसकी छाती पर हल्के से वार किया। उस वार से श्वेतप्रभा की छाती से खून की धार बह निकली। वह एक बार फिर चीखी। पर हिली नहीं।

संग्राम को एहसास हुआ कि कुछ भयानक हुआ है। पुरानी यादें उसके दिमाग़ में कौंध गईं। उसके पिता का बहादुर शरीर उसकी आँखों के सामने आ गया। वो चीख़, वो खून की धारा, वो मौत का पैगाम!

संग्राम भय से काँपने लगा। उसका हृदय करुणा से भर गया।

उन्होंने हाल ही में श्वेतप्रभा को अपना जीवन साथी चुना था और तुरंत ही उनके साथ यह भयानक घटना घट गई।

संग्राम ने जल्दी से अपना एक पंख सफ़ेद हंस की गर्दन के नीचे रखा। वह उसे तैरने के लिए उकसाने लगा। संग्राम समझ गया कि उसे उसे उथले पानी में ले जाना होगा। लेकिन उसे नहीं पता था कि उथला पानी कहाँ है। उसने पानी में ध्वनि तरंगें भेजीं। उनकी गूँज से उसे पता चला कि दूर एक बर्फ़ की चट्टान है।
अब श्वेतप्रभा भी शुरुआती सदमे से उबर चुकी थीं। उनका दर्द भी कम होने लगा था। उनकी छाती सुन्न हो गई थी।

संग्राम ने उसे धीरे से समझाया। उसे दिलासा दिया। संग्राम के सहारे वह बहुत धीरे-धीरे हिमखंड की ओर तैरने लगी।

लेकिन पाँच-दस मिनट में ही उनकी प्रगति रुक गई। श्वेतप्रभा बेहोश होकर गिर पड़ीं। उन्होंने एक गहरी साँस ली। उनके सिर से खून और पानी हवा में उछल पड़ा। उनके फटे हुए फेफड़े से खून बह रहा था। उनके दिल में छेद होने के कारण उनके दिमाग तक खून नहीं पहुँच पा रहा था।

संग्राम की प्रिय श्वेतप्रभा का अंत निकट था!

संग्राम बार-बार उससे आग्रह करने लगा। श्वेतप्रभा ने खुद को बचाए रखने की आखिरी कोशिश की। उसकी धुंधली होती दृष्टि संग्राम की आँखों में आखिरी बार समा गई। और फिर उसकी आँखों की बची-खुची चमक भी गायब हो गई। उसने आखिरी साँस ली। चटक लाल खून पानी पर छलक पड़ा। संग्राम उस खून में नहा गया।

और फिर श्वेतप्रभा समुद्र पर तैरने लगी। उसका भारी, बेजान शरीर पानी में डूबने लगा। संग्राम भी उसके साथ पानी में कूद पड़ा। उसे एहसास हुआ कि उसका पहला प्यार अब हमेशा के लिए एक सपना बन चुका था।

श्वेतप्रभा का शरीर समुद्र की तलहटी में डूबने लगा। संग्राम ने श्वेतप्रभा को बहुत गहराई तक पहुँचाया। फिर वह रुक गया। उसकी आँखों के सामने उसका शरीर धीरे-धीरे डूबता गया। संग्राम खून से सने पानी से देख रहा था।

अंततः श्वेतप्रभा का शरीर गायब हो गया। बस पानी में फैला उसका खून ही बचा था!

संग्राम खिष्ण ने अपना ध्यान सागर की सतह की ओर मोड़ा। वह पानी के पास आया। उसने ज़ोर से चीख़ मारी।

मैं अकेला हूँ! बहुत अकेला!

श्वेत साम्राज्य का समुद्री युद्ध समाप्त हो चुका था। संग्राम का समुद्री युद्ध शुरू हो चुका था।

वह उत्तरी ध्रुव की ओर वापस तैरने लगा।

।। आठ ।।

आधी रात का सूरज समुद्र पर चमक रहा था। उसकी रोशनी में आसमान लाल-लाल सा दिख रहा था।

संग्राम भाटा करुवा के उत्तरी तट पर पहुँच गया था। वह तैरते हुए साल भर के बच्चों से बनी धरती की छत थी! यहीं विशाल अपने परिवार से हमेशा के लिए बिछड़ गया था। बाल-नंता के उस उजाड़, बर्फीले तट पर मौत ने अपना जाल बिछा दिया था।

स्कॉटलैंड के गर्म, खाने-पीने से भरे किनारे अब बहुत दूर थे। एक आवाज़ संग्राम को उस सफ़ेद ज़मीन की ओर खींच लाई थी। लेकिन वह आवाज़ अब कहीं सुनाई नहीं दे रही थी। संग्राम उस आवाज़ के फिर से सुनाई देने का इंतज़ार कर रहा था। वह आसमान से आती अजीबोगरीब आवाज़ों को गौर से सुन रहा था।

संग्राम को अकेलापन महसूस हो रहा था। लेकिन वह सचमुच अकेला नहीं था। उसकी तरह हज़ारों जानवर, पक्षी और मछलियाँ गर्मियों की छुट्टियों में उस इलाके में इकट्ठा हुए थे। क्योंकि वहाँ खाने की भरमार थी!

वहाँ, समुद्र में, जलीय पौधों का एक विशाल जंगल फैला हुआ था। उस जंगल में क्रिल मछलियों के झुंड तैर रहे थे।

वहाँ विशाल नीली एंजेलफ़िश की भीड़ किलिफ़िश और जलीय पौधे खा रही थी। हंपबैक, स्पर्म व्हेल वगैरह खाने की तलाश में आए थे।
समुद्र मछलियों से भरा था, दक्षिण से आए पक्षियों के झुंड आसमान में मँडरा रहे थे। कभी-कभी, एक सफेद भालू बर्फ पर पंजे फड़फड़ाते हुए चलता हुआ दिखाई देता था। इधर-उधर, उन भालुओं के परिवार बर्फ की दरारों में मछलियाँ पकड़ते दिखाई देते थे। कान और फर वाली उत्तरी सील मछलियाँ बर्फ पर हर जगह फैली हुई दिखाई देती थीं। बर्फीले फ्योर्ड की ढलानों पर आराम करते हुए उनके शरीर धूप में चमक रहे थे। बीच-बीच में, एक बोलर, चोंच, पंजे और सील जैसे पंखों वाला एक स्तनपायी, दिखाई देता था। वह अपनी उभरी हुई आँखों से समुद्र को घूर रहा था, बिल्कुल किसी दादाजी की तरह जिसने अपना चश्मा उतार दिया हो!

वहां भी मौत ने दस्तक दे दी थी!

सभी जीव एक-दूसरे को खाकर जीते हैं। इंसान भी पीछे नहीं थे। समुद्र के उस हिस्से में कई जहाज गॉडफिश की तलाश में घूम रहे थे, उनके इंजनों की गर्जना हर समय सुनाई देती थी, उन जहाजों पर बंदूकों की आवाज़ दिन में कई बार हवा में गूँजती थी, जिसकी गूँज उत्तरी ध्रुव के ऊपर साफ़ वातावरण से दूर तक पहुँचती थी। पीछे-पीछे गॉडफिश की चीखें आ रही थीं! अस्तित्व के लिए उनका भयानक संघर्ष!

उत्तरी ध्रुव के पास आर्कटिक महासागर का वह भाग मनोरम ध्वनियों से भरा हुआ था,

तपती धूप में विशाल हिमखंड पिघल रहे थे, फट रहे थे, टूट रहे थे और पिघल रहे थे। उनके द्वारा बनाए गए चमचमाते हिमखंड लाखों बर्फ के टुकड़ों के साथ समुद्र के पानी से टकरा रहे थे, समुद्र के पानी के अनगिनत बड़े, चमकते हुए टुकड़े बर्फीले वातावरण में उछल रहे थे और वापस पानी में गिर रहे थे। लाखों टन वज़नी बर्फ के टुकड़े गरजते हुए समुद्र के पानी से टकरा रहे थे। पानी की विशाल धाराएँ हवा में फूट रही थीं, छप-छप कर रही थीं। फिर वे नए बने हिमखंड से टकराते और झाग बनाते हुए वापस आ गए। वे समुद्र के पानी में मिल गए।

1 76. समुद्र की लड़ाई

संग्राम गहरे नीले पानी में कूद पड़ा। गहरे नीले पानी में उसे बर्फ़ पर अनगिनत निशान दिखाई दिए। वह वहीं शिकार करने लगा।

वह सफ़ेद बर्फ़ की छत के नीचे, वहाँ की घुमावदार गुफाओं में छिपकर, बड़ी सावधानी से चलने लगा। वहाँ, एकाग्र होकर, वह सुनने लगा - समुद्र की सतह पर आती क्रिल मछलियों पर झपट्टा मारते पक्षियों के पंखों की फड़फड़ाहट! गहरे पानी में तैरती कॉड मछलियों के झुंड की सरसराहट! समुद्र तट पर झागदार लहरों में खेलती सीगल की दहाड़!

उसने पानी में ध्वनि तरंगें छोड़नी शुरू कर दीं। वह उनकी प्रतिध्वनियाँ सुनने लगा। वह उनका विश्लेषण करने लगा। वह जानवर की स्थिति, गति और दिशा का पता लगाने लगा। उसने अपने शक्तिशाली पंख फड़फड़ाए और धीरे-धीरे जानवर की ओर बढ़ा - बर्फ की मदद से! और फिर अचानक बिजली की गति से जानवर पर झपट पड़ा, जानवर को संभलने का भी मौका नहीं दिया!

यहां तक कि समुद्र तल पर विचरण करने वाले जानवर भी कभी सुरक्षित नहीं थे।

संग्राम सागर के किनारे पानी के नीचे तैरने लगा। सागर के किनारे की बर्फ़ उभरने लगी, सफ़ेद पृष्ठभूमि पर एक अलग रंग का हल्का सा धब्बा! बर्फ़ पर पड़ा एक गहरा बिंदु! धूप सेंक रहे किसी बदनसीब जीव की ज़रा सी हलचल!

वह बिजली की गति से पानी में छलांग लगाने लगा। इससे पहले कि उसे कुछ समझ आता, उसने उस हिंसक जानवर को अपने जबड़ों में कुचल दिया। और उतनी ही तेज़ी से, वह वापस पानी के नीचे गायब हो गया।

उस गर्मी में संग्राम का पोषण अच्छा था। वह बहुत सक्रिय था।

वह बढ़ने लगा। उसकी लंबाई अब नौ मीटर हो गई थी। उसका शरीर मज़बूत, तेज़ और मृत्यु का प्रतीक बन गया। उसके पंख बड़े और गोल हो गए। उसकी पूँछ चौड़ी और घुमावदार हो गई। उसकी पीठ का पंख एक प्लेट बन गया, दो मीटर ऊँचा और शक्तिशाली!

उसका शरीर ज़ख्मों से भरा हुआ था। कुछ लंबे और तीखे ज़ख्म थे, जो नुकीली बर्फ और चट्टानों से बने थे! कुछ ज़ख्म उत्तरी यात्राओं में स्निविड्स, कंगारूओं और काँटों जैसे नुकीले स्पर्म व्हेल्स के हमले से हुए थे!

उत्तरी ध्रुव पर गर्मी अभी खत्म नहीं हुई थी। संग्राम अभी भी अकेला था। उसने दूर से आवाज़ लगानी शुरू कर दी। उसकी आवाज़ का जवाब दूसरी गॉडफिश ने दिया, जो उसकी तरह ही अकेली थीं! लेकिन वे सभी गॉडफिश दूसरी प्रजातियों की थीं। एक भी शिकारी गॉडफिश ने उसका जवाब नहीं दिया। उसकी आवाज़ें समुद्र के हर कोने से उसके पास वापस आ रही थीं। मानो समुद्र उसका मज़ाक उड़ा रहा हो।

दिन-ब-दिन संग्राम को अकेलापन असहनीय लगने लगा।

अब सूरज क्षितिज पर ज़्यादा देर तक रहने लगा। दिन धीरे-धीरे छोटे होने लगे। रातें लंबी होने लगीं। उस विशाल, बर्फीले क्षेत्र पर बर्फ के बादल छाने लगे। पक्षियों के झुंड उन्मत्त होकर दक्षिण की ओर उड़ने लगे। उत्तरी ध्रुव के ध्रुवीय भालू लौटने लगे। सील मछलियाँ अपने बच्चों के साथ दक्षिण की ओर लौटने लगीं। समुद्र में हलचल मचने लगी। बर्फ के विशाल, तैरते हुए टुकड़े ऊपर-नीचे होने लगे। वे धड़कने लगे।

सर्दी ने उत्तरी ध्रुव को अपने पंजों से खरोंचना शुरू कर दिया।

संग्राम ने सर्दियों के आगमन के संकेतों को नज़रअंदाज़ कर दिया। उसे अभी भी समुद्र के बारे में बहुत कुछ सीखना था।

। ७८: सागरसंग्राम
एक शाम वह पानी पर बर्फ के एक पहाड़ पर उतरा। उसका सिर पानी से ऊपर था। उसके सिर के ऊपर बर्फ की एक विशाल नीली-भूरी परत लटक रही थी।

गर्मियों की धूप ने झोपड़ी को सहारा देने वाले खंभों को पिघला दिया था।

अचानक संग्राम को बर्फ़ के टूटने की भयानक चटक आवाज़ सुनाई दी। उसके शरीर में डर के मारे सिहरन दौड़ गई। वह तेज़ी से मुड़ा और एक गद्दी पर गिर पड़ा। उसने नीचे देखा। उसके सिर के ऊपर बर्फ़ का किनारा गिर रहा था।

गिरती बर्फ संग्राम के कंधे पर लगी। झटके और दबाव से उसकी पसलियाँ टूट गईं। उसकी आँखों के सामने अंधेरा छा गया। लेकिन बर्फ संग्राम को पानी में नहीं धकेल पाई। अगर ऐसा होता, तो वह डूब जाता। उसके चारों ओर इतनी बर्फ गिरी कि समुद्र का पानी फट गया। संग्राम पानी से बाहर फेंका गया। वह हिमखंड की ढलान से टकराया।

संग्राम अपने आरामदायक सोफ़े पर पूरी तरह खामोश पड़ा था। उसके सिर पर एक बड़ा, भयानक घाव था। उससे बहते खून में उसकी त्वचा भीग गई थी। ठंड के कारण उसकी त्वचा नीली और धूसर पड़ने लगी थी। वह काँपने लगा। उसकी छाती काँपने लगी। उसकी साँसें तेज़ हो गईं। गले में घरघराहट शुरू हो गई। उसकी बाँहों के नीचे का दर्द उसकी ताकत को कमज़ोर करने लगा। तेज़ दर्द उसके शरीर में चुभने लगा। वह बेहोश हो गया। जैसे-जैसे दर्द बढ़ता गया, उसे होश आने लगा।

थोड़ी देर बाद, हिमखंड थोड़ा सा हिला। संग्राम फिसलकर पानी में गिर गया। जीने की प्रबल इच्छा ने उसके अर्धचेतन मस्तिष्क को जकड़ लिया। उसके पंखों ने उसके शरीर को सीधा खड़ा रखा। दर्द ने उसे होश में ला दिया। उसने ज़ोर से पुकारने की कोशिश की। लेकिन उसके गले से सिसकती और कराहती आवाज़ों के अलावा कोई आवाज़ नहीं निकली।

नहीं। उसका सिर पानी के नीचे जाने लगा। फिर अचानक उसकी चीख निकल गई।

पास के पानी में तैर रही एक विशाल स्पर्म व्हेल ने चीख सुनी। उसने चीख में छिपे डर को भाँप लिया। आस-पास की सील मछलियाँ भाग गईं, क्योंकि शिकारी व्हेल की आवाज़ उन्हें जानी-पहचानी लग रही थी।

धीरे-धीरे, बहुत धीरे-धीरे, संग्राम ने अपने विशाल पूँछ के पंख हिलाए। उसका शरीर थोड़ा आगे बढ़ा। दर्द को रोकते हुए, वह धीरे-धीरे और किसी तरह एक नीले बर्फीले पहाड़ के पास पहुँचा। वहाँ, बाहर बर्फ का एक बड़ा टुकड़ा दिखाई दे रहा था। संग्राम के जबड़ों ने उस टुकड़े को जकड़ लिया। उसके नुकीले दाँत बर्फ में धँस गए। अब उसका सिर पानी के ऊपर था।

लेकिन उसकी पूरी ताकत खत्म हो चुकी थी। समुद्र की एक लहर उसकी पीठ से टकराई। उसके सिर में साँस लेने का छेद पानी से भर गया। उसका दम घुटने लगा, उसका जबड़ा भींचने लगा। उसका दम घुटने लगा। उसकी छाती दर्द से जलने लगी। वह एक बार फिर चीखा। लेकिन उसने बर्फ पर अपने जबड़े की पकड़ ढीली नहीं की। उसकी साँसें चलती रहीं।

दक्षिण में कई किलोमीटर दूर, बर्फ़ की चोटियाँ पिघल रही थीं। वहाँ पानी में दस पट्टियाँ थीं। शिकारी गॉडफ़िश का एक झुंड तैर रहा था। छह महीने पहले, उस झुंड का अनुभवी नेता मर गया था। अब झुंड का नेतृत्व एक युवा शिकारी के हाथ में आ गया था। लेकिन वह अभी भी अनुभवहीन था। झुंड की दूसरी गॉडफ़िश उस पर भरोसा नहीं करती थीं। वे अक्सर उसके कमज़ोर आदेशों को ठुकरा देती थीं।

उस झुंड में एक खूबसूरत जवान मादा थी। वह अभी-अभी यौवन में प्रवेश कर रही थी। वह छह मीटर लंबी थी। उसकी चौड़ी पीठ पर सुंदर सफेद धब्बे थे। उसे बाल्टिक महासागर का वह हिस्सा पसंद नहीं था।

उसका घर नॉर्वे और फरो आइलैंड्स के बीच समुद्र में था। वह अटलांटिक महासागर के गहरे, शांत पानी में जाने के लिए तरसती थी। वह हमेशा झुंड के ठीक पीछे तैरती थी।

उसका नाम मछली जैसा था!

मछली जैसा दिखने वाला एक जीव पानी की सतह के नीचे गोता लगा रहा था, वहाँ तैर रही मछलियों के झुंड पर झपटने के लिए। अचानक, उसे उत्तर दिशा से एक युवा मछुआरे की गहरी चीख सुनाई दी।

वह चीख संग्राम की थी।

मछली जैसी आकृति अचानक रुक गई। उसने चीख पहचान ली। वह समझ गई कि युवा शिकारी किसी बड़ी मुसीबत में फँस गया है—उसे मदद की ज़रूरत है।

उसने उस चीख का जवाब दिया। उसने सांगरा को आवाज़ लगाई।

मैं तुम्हारी मदद के लिए आ रही हूँ। डरो मत! उस सफ़ेद, बर्फीले रेगिस्तान से संग्राम तक उसकी आवाज़ पहुँची। लेकिन संग्राम, जो आधा होश में था, उसे सुनाई नहीं दिया।

मछली का रूप तेज़ी से समुद्र की सतह पर आ गया। उसने गहरी साँस ली। अब वह संग्राम की मदद के लिए तैयार थी। उसका भव्य शरीर पानी में डूब गया। वह बर्फ़ के नीचे से संग्राम की ओर तैरने लगी। अपनी पूरी ताकत लगा दी! उसने संग्राम को फिर से पुकारा। फिर उसने अपनी गति बढ़ा दी।

संग्राम ने उसकी दूसरी पुकार नहीं सुनी थी। अब सिर्फ़ उसका जबड़ा काम कर रहा था। बर्फ़ पर उसकी पकड़ ढीली नहीं हुई थी। लेकिन उसका शरीर लटक रहा था। उसकी साँसों के छेद अभी भी पानी के ऊपर थे। वह मदद के लिए गिड़गिड़ा रहा था।

तभी अचानक उसके जबड़े से बर्फ का एक टुकड़ा टूटकर गिर पड़ा। संग्राम पानी में गिर पड़ा। वह सीधे समुद्र की तलहटी में डूबने लगा। उसके सिर के छेद से चाँदी के बुलबुले उठने लगे। उन बुलबुलों के साथ, उसका

आखिरी चीख निकली। मदद के लिए! निराशा की! दिल दहला देने वाली!

मछली ने चीख सुनी। वह डर गई। वह पागल हो गई। उसने अपनी पूँछ के पंख फड़फड़ाए। उसने अपने पार्श्व पंख हिलाए। वह समुद्र की तलहटी की ओर गोता लगाने लगी। जीवन की पुकार के साथ, वह युद्ध की चीख की ओर तैरने लगी। गहरा, गहरा, गहरा पानी!

वह रुकी। फिर मुड़ी। उसने ध्वनि तरंगें छोड़ीं। उसने उनकी गूँज सुनी। फिर उसने ऊपर देखा। उसने संग्राम का विशाल शरीर देखा। धीरे-धीरे गहरे पानी की ओर बढ़ रहा था! उसने संग्राम के लंबे शरीर, उसकी सुंदर पीठ पर काले और सफेद बिंदुओं पर एक नज़र डाली। फिर वह संग्राम की ओर झपटी।

उसने अपनी पीठ संग्राम के पेट के नीचे रख दी। उसने उसका भारी वज़न महसूस किया। फिर उसने संग्राम को धीरे से समुद्र की सतह की ओर उठा लिया।

अब वे दोनों समुद्र की सतह पर आ गए। संग्राम ने हल्की सी साँस ली। उसके फेफड़ों का पानी बाहर आ गया। उसने गहरी साँस ली। फिर वह स्थिर लेट गया। मछली के आकार के

सहारे!

वे दोनों बहुत देर तक चुप रहे। फिर मछली जैसी आकृति ने उसे पुकारना शुरू किया। वह पुकारने लगी। वह कह रही थी, "अब तुम अकेले नहीं हो! मैं तुम्हारी मदद के लिए यहाँ हूँ!"

लेकिन संग्राम शुद्धिबर कहाँ था? मछली जैसे शब्द उस तक पहुँच ही नहीं पाए। वह चुप रहा।

लेकिन संग्राम अब सचमुच अकेला नहीं था। कुदरत ने एक साथी भेजा था। समुद्री युद्ध में उसकी मदद के लिए!

। ८२ । सागरसंग्राम

सूरज अब डूब चुका था। समुद्र और बर्फ़ पर, हर जगह अँधेरा छाने लगा था।

मत्स्यरूपा अभी भी संग्राम को बुला रही थी!

#

।। नौ

संग्राम और मत्स्यरूपा बहुत देर तक समुद्र की सतह पर पड़े रहे। विशाल हिमखंड के बीच जीवित रहने के लिए संघर्ष कर रहे दो नन्हे जीव!

मत्स्यरूपा संग्राम से बातें कर रही थी। धीरे से! विनती करते हुए! आखिरकार, उसके शब्द संग्राम के कानों में पड़े। उसका सुन्न दिमाग़ हिल गया।

एक और दिन बीत गया। मछली जैसी आकृति अब भी संग्राम से बातें कर रही थी। तभी संग्राम को अपने आस-पास का एहसास हुआ। वह काँपने लगा। वह काँपने लगा। उसे एहसास हुआ कि मछली जैसी आकृति अब उसकी मदद के लिए वहाँ मौजूद है। उसने अपना एक विशाल पंख उसके शरीर पर फेंका।

उसकी बेहोशी अब गहरी नींद में बदल गई थी। लेकिन उसे भयानक सपने आने लगे। वह चीखते हुए जागने लगा। उसका शरीर काँपने लगा। सीने में भयानक दर्द ने उसके शरीर को जकड़ लिया।

कई दिनों तक वे ऐसे ही पड़े रहे। समुद्र की सतह पर! एक ही जगह पर! फिर संग्राम को पूरी तरह होश आया। उसकी सुस्त आँखें खुल गईं। उसके चेहरे से बेजानपन का पर्दा धीरे-धीरे हटने लगा।

मछली जैसी आकृति ने संग्राम के पेट के नीचे से अपनी पीठ बाहर खींच ली।

आँखें! संग्राम ने देखा - उसकी चौड़ी, चिकनी पीठ। उसका चमकता हुआ, पतला शरीर।

फिर मछली जैसी आकृति ने उसे अपनी पीठ पर उठा लिया। उसने उसे समुद्र की सतह पर लिटा दिया। संग्राम ने गहरी साँस ली। धीरे-धीरे उसके शरीर में गर्माहट लौटने लगी। वह चैन की नींद सो गया। बीच-बीच में उसके बाजू का घाव फूलने लगा। वह अचानक जागने लगा। फिर मछली जैसी आकृति ने उसे वापस सुला दिया।

संग्राम और मत्स्यरूपा को अब सर्दी की कठोरता का एहसास होने लगा। उनके आस-पास का पानी मीठा लगने लगा। मत्स्यरूपा को नॉर्वे का तट याद आ गया। वहाँ की शीत ऋतु की कोमल किरणें उसके मन के स्वप्नलोक पर पड़ रही थीं। वह प्रसन्न थी।

मछलियों को एहसास हो गया कि उन्हें अब वहां से चले जाना चाहिए, इससे पहले कि समुद्र का वह भूला हुआ कोना जम जाए और मौत का जाल बन जाए!

उसने लड़ाई को आगे बढ़ाया। लेकिन वह बहुत कमज़ोर था। वह पूरी तरह से जम गया था।

वह पानी में आगे नहीं बढ़ पा रहा था। उसका दम घुटने लगा, वह बार-बार रुकने लगा। उसने अपने मछली जैसे शरीर पर पंख लगाकर आराम करना शुरू कर दिया। वह साँस लेने लगा। थोड़ी देर बाद, वह दर्द सहते हुए आगे बढ़ने की कोशिश करने लगा।

फिर मछली जैसी आकृति आगे बढ़ी। उसने अपने सिर से बर्फ़ को तोड़ना शुरू कर दिया। देखते ही देखते वह विशाल पिंड हवा में फटने लगा। फिर वह फिर से समुद्र पर फैली बर्फ़ से टकराने लगा। टक्कर से बर्फ़ टूटने लगी। बर्फ़ के बीच से रास्ता बनने लगा।

बर्फ़ की खून जमा देने वाली ठंड ने मछली रूपी शक्ति को सोख लिया। उसका शरीर काला पड़ गया। उसके शरीर पर चोट के निशान थे। बड़ी-बड़ी खरोंचें थीं। उसका भूखा पेट कराहने लगा। यह युद्ध अंधा था।

वह उस रास्ते पर आगे बढ़ने लगा जो उसने उसे दिखाया था।

लेकिन अंततः मछली रूप ने संग्राम को बर्फ के उस उजाड़ रेगिस्तान से बाहर खींच लिया।

उनके और नॉर्वे के तट के बीच केवल खुला समुद्र था।

धीरे-धीरे संग्राम भी ठीक हो गया। उसकी पसलियाँ ठीक हो गईं। उसके शरीर का अंदरूनी रक्तस्राव बंद हो गया। उसकी बगल का घाव भर गया। उस पर पपड़ी जम गई।

लेकिन उसके मन के ज़ख्म भरने में काफ़ी वक़्त लगा। लगभग एक महीने तक वह बस मछली के आदेशों का पालन करता रहा। वह उसकी बताई दिशा में तैरता रहा। वो भी कमज़ोरी से या फिर सोते हुए।

अब, अपनी यात्रा के दो महीने बाद, वे आर्कटिक महासागर को पीछे छोड़कर नॉर्वे के तट के पास गहरे, धीमी गति से बहते पानी में प्रवेश कर चुके हैं।

संग्राम अब पूरी तरह से ठीक हो गया था।

वे दिन भर शिकार करने लगे। वहाँ प्रचुर मात्रा में शिकार का लुत्फ़ उठाते रहे। और शाम होते ही, वे समुद्र की सतह पर खेलने लगे। खाड़ियों के धीमे पानी पर चाँदी जैसी धनुषाकार लहरें दौड़ने लगीं। वे पानी पर छप-छप करने लगीं। वे वापस पानी में गिरने लगीं। मछली जैसी आकृति आगे की ओर तैरने लगी। संग्राम उसके पीछे भागने लगा। उसने उसके काटने शुरू कर दिए।

आधी रात हो चुकी थी। चाँद सिर पर था। आसमान में तारे टिमटिमा रहे थे। पूरा सागर उस चाँदी जैसी रोशनी में नहाया हुआ था।

। ८६ । सागरसंग्राम

संग्राम और मछली के शरीर पानी से बाहर आ गए। वे एक-दूसरे से लिपट गए। उनके पंख, पेट और पूँछ एक साथ आ गए।

उनकी पहली मुलाक़ात हुई। उनके मन और शरीर एक हो गए। एक जीवनसाथी के लिए!

बसंत की हवा ने धरती को जगा दिया। सागर भी हिल उठा। ग्लेशियर गर्जना करने लगे। वे दरकने लगे। दूर पहाड़ों पर जमा बर्फ गिरने लगी। ग्लेशियरों की आवाज़ें वातावरण में गूँजने लगीं। नदियों का पानी पिघली हुई बर्फ से सफेद हो गया। नदियाँ भर गईं। उनकी झागदार धाराएँ समुद्र की खाड़ियों में मिलने लगीं। पेड़ों और झाड़ियों ने अपनी बर्फ की चादर उतार फेंकी।

सैल्मन मछलियों के झुंड तट की ओर भागने लगे, उनके पीछे सील मछलियों के झुंड भी आ गए।

संग्राम और मत्स्यख्या ने उन्हें आते सुना। फिर उन्होंने अपना प्रशिक्षण शुरू किया। मत्स्यख्या की भूख अब बहुत बढ़ गई थी। अब उसके पेट में एक बच्चा था! उसे भी पोषण के लिए और भोजन की ज़रूरत थी!

दिन बड़े होने लगे। रातें छोटी होने लगीं। समुद्र तट पर हर तरफ़ हलचल मच गई। जहाज़ों के इंजनों की घरघराहट हवा में गूँजने लगी। जहाज़ों के प्रोपेलर की आवाज़ें समुद्र की लहरों पर बजने लगीं। मछुआरों द्वारा पानी में डाले जा रहे जालों की आवाज़ें हर जगह सुनाई देने लगीं।

संग्राम और मत्स्यरूपा चट्टानों के उस क्षेत्र से निकल पड़े। पीछे छोड़ी गईं अजीबोगरीब आवाज़ें और नज़ारे। तपती गर्मी की धूप में, वे गहरे समुद्र की ओर बढ़ने लगे।

उत्तरी ध्रुव के पास की बर्फ़ और नॉर्वे के खाने ने उसे नया जीवन दे दिया था। अब संग्राम मछली का रूप धारण करके पश्चिम की ओर रवाना हो गया। यहीं के पानी में उसने अपने बचपन के सुखद दिन बिताए थे।

सागरसंग्राम। ८७।

एक रात आसमान बिल्कुल साफ़ था। चाँद ऊपर चमक रहा था। उसका प्रतिबिम्ब लहरों के साथ लुका-छिपी खेल रहा था। समुद्र का वातावरण बिल्कुल साफ़ था। कोहरे का नामोनिशान तक नहीं था।

मछली के रूप ने अचानक युद्ध के लिए पुकारा। उसका भारी शरीर लहरों पर टिक गया। गर्भावस्था से फूला हुआ उसका पेट काँपने लगा। उसने अपना शरीर झुकाया। फिर उसने एक

बार, दो बार, तीन बार अपने शरीर को झटका दिया। उसके शरीर से एक छोटी सी पूँछ निकली। मछली के रूप ने एक बार फिर अपने शरीर को झटका दिया। और एक छोटी मछली का जन्म हुआ। उस छोटी मछली के शरीर पर मछली के रूप की तरह ही बड़े, सुंदर सफेद धब्बे थे।

यह नीलगंध है!

अटलांटिक महासागर की हवा ठंडी थी, और मछली जैसे जीव ने अपनी नाक से नील-गंधा को सतह पर धकेल दिया। नील-गंधा ने पहली साँस ली। ठंडी हवा उसके फेफड़ों में घुसते ही उसका शरीर काँप उठा।

तभी मछली जैसी आकृति पानी पर तैरने लगी, उसका सफेद पेट पानी से बाहर आ गया। नीलगंध ने अपनी नाक से उसके पेट को छुआ, और पल भर में गरम दूध के लीटर नीलगंध के आतुर मुँह में भर गए।

संग्राम विस्मय से सारा दृश्य देख रहा था, यह अनुभव उसके लिए नया था। वह स्तब्ध था, मछली जैसे पंखों के पीछे छिपे सुगंधित नीले फूल को देखता रहा,

माँ, वह आगे बढ़ा, उसने अपनी नाक से नीलगंध को गुदगुदाया, माँ एक पल के लिए असमंजस में पड़ गई, अब मछली का रूप पानी पर सीधा था। उसने अपनी नाक से नीलगंध को आगे धकेला, नीलगंध मछली के रूप की हर हरकत की नकल करते हुए पानी पर तैरने लगी, उसके छोटे से सिर से पानी की फुहारें हवा में उड़ने लगीं,

युद्ध धीरे-धीरे उनके चारों ओर तैरने लगा,

सागरसंग्राम

नीलगंध का समुद्री युद्ध शुरू हो गया है,

सर्दी वापस आ गई है.

अब संग्राम अपने छोटे से परिवार के साथ अज़ोरेस के सूर्य से गर्म पानी में दूर दक्षिण की ओर रवाना हो चुका था!

संग्राम और मत्स्यरूप वहाँ दिन-रात शिकार करने लगे।

समुद्र तल पर फैले जहाज़ों के मलबे और चट्टानों के बीच, समुद्र की सतह पर ब्लूग्रास खिलने लगा।

कभी-कभी, नीली व्हेल समुद्र तल पर दौड़ती हुई हानिरहित मछलियों का भी पीछा करने लगती थी, शिकार के लिए नहीं, बल्कि सिर्फ़ मनोरंजन के लिए! वह अभी भी मछलियों के दूध से पोषित हो रही थी।

संग्राम और उनके परिवार ने बहुत अच्छा समय बिताया।

लेकिन एक और क्रूर और शक्तिशाली शिकारी उस क्षेत्र में घूम रहा था।

उसका नाम मानव था!

उस वर्ष, अज़ोरेस के आसमान में एक नया पक्षी दिखाई दिया। यह पक्षी मनुष्यों द्वारा गॉडफ़िश के शिकार में मदद के लिए बनाया गया था।

उस पार्टी का नाम था हेलीकॉप्टर!

एक सुनहरी शाम, संग्राम, मत्स्यरूपा और नीलगंध समुद्र की गर्म लहरों पर लोट रहे थे। अचानक संग्राम को आकाश से एक अजीब सी आवाज़ सुनाई दी। एक हेलीकॉप्टर आकाश में चक्कर लगा रहा था।

हेलीकॉप्टर के पायलट ने संग्राम के परिवार को समुद्र की सतह पर तैरते देखा। उसने पास के पानी में मौजूद बावरान के शिकार जहाज़ को रेडियो पर संदेश भेजा।

संग्राम को किसी भयानक खतरे का आभास हुआ। उसने मत्स्यरूप और नीलगंध को अपने पीछे आने का आदेश दिया। वह पलटा और पंख फड़फड़ाते हुए तैरने लगा। इस बीच, वह पहले एक तरफ तेज़ी से तैरने लगा। फिर दूसरी तरफ घूमकर गोल-गोल घूमने लगा। वह पानी में ऊपर-नीचे होने लगा। वह गहरे पानी में गोता लगाता और फिर जब साँस लेने की ज़रूरत पड़ी, तब सतह पर आता।

लेकिन हेलीकॉप्टर ने हार नहीं मानी। हेलीकॉप्टर के इंजन और पंखों की आवाज़ संग्राम के कानों में गूँजने लगी।

मत्स्यरूपा और नीलगंध संग्राम के आदेशानुसार उसके पीछे तैर रहे थे। वे बहुत थके हुए थे।

संग्राम का मन चिंता से भर गया।

हेलीकॉप्टर पायलट का संदेश शिकारी जहाज़ के कप्तान को मिला और उसने जहाज़ का रुख़ संग्राम के परिवार की ओर मोड़ दिया।

यह एक आधुनिक जहाज था। इसमें दो प्रोपेलर थे। इसमें गॉडफिश के शिकार के लिए बेहतरीन उपकरण लगे थे। यह तेज़ था। किनारे से निकलते ही, यह पाँच सौ टन वज़नी गॉडफिश लेकर लौटता था। इसके अलावा, गॉडफिश की मौजूदगी का पता लगाने में मदद के लिए इसमें एक हेलीकॉप्टर भी था।

जहाज ने उत्तरी अटलांटिक महासागर में नॉर्वे के उत्तरी तट पर कई व्हेलों का शिकार किया था।

अब वे संग्राम के परिवार को ढूँढने निकल पड़े। यह एक अलग ही सागर संग्राम था।

एक तरफ़ प्रकृति की शक्ति है! दूसरी तरफ़ मानवीय प्रतिभा की शक्ति है!

समुद्र की सतह पर सूरज चमक रहा था। लहरें नाच रही थीं। जहाज़ पर सवार नाविक दूरबीन से समुद्र का जायज़ा ले रहे थे।

हेलीकॉप्टर एक जगह रुका हुआ था। वहाँ एक नाविक ने संग्राम और मत्स्यरूप की विशाल आकृतियाँ देखीं। दूर एक द्वीप की अंधेरी पृष्ठभूमि में वे स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थीं।

जहाज़ ने फिर दिशा बदली। जहाज़ के कप्तान ने हेलिकॉप्टर के पायलट को बताया कि उसने गॉडफ़िश देखी है। जैसे ही उसका काम ख़त्म हुआ, हेलिकॉप्टर ज़मीन की ओर चल पड़ा। क्योंकि अब शाम का साया समुद्र पर छाने लगा था।

जहाज़ की गति बढ़ गई। नाविक जहाज़ के डेक पर जमा हो गए। जहाज़ पर अलग-अलग पहिए और घिरनियाँ घूमने लगीं। नायलॉन की रस्सियाँ उन पर फिसलने लगीं। दो नाविक जहाज़ के आगे की ओर दौड़े। उनके हाथों में एक बड़ा भाला था। यह शिकारियों का शिकार करने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला हथियार था!

बंदूक के पीछे खड़े नाविक ने भाला बंदूक में डाल दिया। जहाज़ की गति से उत्पन्न हवा के झोंके उसके कानों में महसूस हुए। वह संग्राम और मत्स्यरूपा को बड़ी उत्सुकता से देखने लगा। नीली व्हेल का छोटा आकार उसके मन में तो था ही नहीं।

नाविक का निशाना बहुत सटीक था। उसने आज तक शायद ही कभी कोई जानवर खोया हो। जहाज़ पर मौजूद दूसरे नाविक उसे बड़े सम्मान से देख रहे थे।

बंदूक के पीछे खड़े नाविक को पिछले दिन की बात याद आ गई।

उस दिन, जहाज़ के गश्ती दल पर नाविकों ने दो एंजलफ़िश पकड़ी थीं। यह एक बहुत ही अजीब जोड़ी थी। एक हम्पबैक थी और दूसरी फिन!

दोनों गॉडफिश झुंड मारे जा चुके थे। अंत में, उनके पास एक-दूसरे का साथ देने के अलावा कोई चारा नहीं बचा था। लेकिन वे शिकारी गॉडफिश नहीं थीं। इसलिए वे एक-दूसरे से नहीं डरती थीं।

अब वे अटलांटिक महासागर के उस हिस्से में एक साथ तैर रहे थे।

वे भी अंगोरा के जल में प्रचुर मात्रा में जलीय वनस्पति का आनंद लेने के लिए आये थे!

जहाज़ उन दोनों गॉडफ़िश का पीछा कर रहा था। गॉडफ़िश तोप के ऊपरी हिस्से तक पहुँच गई थीं। और उसी क्षण, सारा हंगामा मच गया था।

एक ब्रिटिश जहाज वहाँ पहुँचा था। जहाज एक ऐसे संगठन का था जो गॉडफिश के वध को रोकने के लिए अभियान चला रहा था। यह अजीब था! ब्रिटेन ने ही सबसे पहले दुनिया को गॉडफिश के मांस और चर्बी के फ़ायदों से अवगत कराया था। फिर दूसरे देशों ने भी गॉडफिश का शिकार शुरू कर दिया। इतने बड़े पैमाने पर कि समुद्री जीव विज्ञानियों को डर लगने लगा कि यह प्रजाति धरती से गायब हो जाएगी।

और अब ब्रिटेन ने गॉडफ़िश के वध को रोकने के लिए शिकारियों के खिलाफ अभियान छेड़ दिया था। गॉडफ़िश को विलुप्त होने से बचाने के लिए। उस देश ने दुनिया की अंतरात्मा का प्रतिनिधित्व करने की भूमिका निभाई थी।

ब्रिटिश गश्ती जहाज़ ने शिकारी जहाज़ को देख लिया था। उसने देव-मासा का पीछा होते देखा था। फिर जहाज़ ने दो रबर की नावें भेजीं। ये नावें शिकारी जहाज़ और देव-मासा के बीच आकर रुक गईं।

लगभग एक घंटे तक वे नावें वहीं खड़ी रहीं। एक तरफ दो गॉडफिश, दूसरी तरफ शिकार का जहाज! और लगभग एक किलोमीटर दूर खड़ा रक्षक जहाज।

बंदूक के पीछे खड़े नाविक के लिए यह अनुभव नया नहीं था। उसने भीड़ से बचने के लिए दो बार गोली चलाई थी। लेकिन दोनों बार उसका निशाना चूक गया था।

आख़िरकार, शाम होते ही, शिकार करने वाले जहाज़ को उन गॉडफ़िश की आवाज़ छोड़कर किनारे का इंतज़ार करना पड़ा। फिर

वे नावें भी रक्षक जहाज पर वापस आ गयी थीं।

दोनों मछलियाँ अपने-अपने रास्ते चली गईं। वे भाग्यशाली थीं।

लेकिन आज का दिन अलग था.

क्षितिज पर रक्षक जहाज़ का कोई निशान नहीं दिख रहा था। शाम की परछाइयाँ समुद्र पर फैलने लगी थीं। लेकिन अँधेरा होने में अभी समय था।

शिकारी जहाज और शिकारी मछली के बीच युद्ध अवश्यंभावी था, और उस युद्ध का अंत भी वही हुआ।

यह महासागरीय युद्ध का सबसे कठिन क्षण था।

शिकार करने वाले जहाज़ ने अपनी गति बढ़ा दी। अब वह पूरी रफ़्तार से पानी में संग्राम और उसके परिवार की ओर बढ़ने लगा।

##

.. दस।

संग्राम ने शिकारी जहाज़ के इंजन की गर्जना सुनी, जो समुद्र की लहरों की आवाज़ से भी तेज़ थी। उसने जहाज़ों से ऐसी आवाज़ें कई बार सुनी थीं। यह नई आवाज़ भी उसके लिए कुछ अलग नहीं थी।

हेलीकॉप्टर अब उड़ चुका था। इससे उसका डर कम हो गया था। लेकिन फिर भी, उसके मन में संदेह का एक बादल छाया हुआ था, और उसे लग रहा था कि उसे उस जहाज़ से दूर चले जाना चाहिए।

पूर्व दिशा में समुद्र में एक द्वीप दिखाई दिया। संग्राम ने गर्जना की। उन्होंने मत्स्यरूप और नीलगंध को अपने पीछे आने का आदेश दिया। फिर तीनों शिष्यों के सिरों से पानी की धार फूट पड़ी। संग्राम पानी के नीचे गोता लगाने लगे, मत्स्यरूप और नीलगंध भी उनके पीछे-पीछे गए। वे समुद्र की सतह से दस मीटर नीचे तैरने लगे! उस द्वीप के आसपास के उथले पानी की ओर!

उस गहराई में समुद्र की किरणें पानी में हर जगह फैल रही थीं। दूर से द्वीप के किनारे से टकराती लहरों की गूँज सुनाई दे रही थी।

शिकारी जहाज के पाल अब अधिकतम गति से घूमने लगे।

जहाज़ के आगे से दोनों तरफ़ से पानी की तेज़ धारें फूट पड़ीं। जहाज़ के इंजन की तेज़ गर्जना सुनकर संग्राम फिर से डर गया। अगर वह पहले ही टापू की तरफ़ तैरने न लगा होता, तो जहाज़ उनके क़रीब आ जाता।

और फिर संग्राम या मत्स्यरूप की चौड़ी पीठें पानी के ऊपर दिखाई देतीं। बस कुछ पलों के लिए! और जहाज़ पर बंदूक के पीछे खड़े नाविक पर भाला फेंकने के लिए इतना ही काफी था।

लेकिन उस जहाज़ की बनावट बिल्कुल अलग थी। उस जहाज़ में दुनिया की सबसे तेज़ मछली पकड़ने की ताकत थी। उसके इंजन बेहद शक्तिशाली थे। उसमें किसी भी मछली को थका देने की ताकत थी।

जहाज़ पूरी रफ़्तार से पानी भरने लगा। संग्राम के परिवार और जहाज़ के बीच की दूरी कम होने लगी।

सबसे पहले बेहोश होने वाली नीली आँखों वाली थी। वह अभी छोटी थी, है ना? वह पानी की सतह पर कूद गई। वहाँ उसके सिर से दो बार पानी निकला। फिर वह वापस समुद्र की सतह के नीचे गोता लगा गई।

संग्राम को अब जहाज़ के इंजन की आवाज़ बहुत पास से सुनाई दे रही थी। उसने मत्स्यरूपा को पुकारा। संग्राम और मत्स्यरूपा दोनों ही नीलगंध को उकसाने लगे। लेकिन नीलगंध उनके साथ तैर कैसे सकती थी?

इंजन की गर्जना बहुत नज़दीक थी। द्वीप के किनारे का उथला पानी अभी भी दूर था।

संग्राम को जहाज का ध्यान आकर्षित करने के लिए कुछ करना ही था। तब तक मत्स्यरूपा और नीलगंध द्वीप पर पहुँच चुके होंगे।

उसने एक बार हमला करते हुए दहाड़ा। उसके सिर से पानी की एक तेज़ फुहार हवा में उछली। फिर वह पानी में मुँह के बल लेट गया। उसकी पूँछ जहाज़ पर मौजूद नाविकों को दिखाई दे रही थी।

लेकिन बंदूक के पीछे खड़ा नाविक अनुभवी था। उसने अपनी ज़िंदगी के कई साल गॉडफ़िश का शिकार करने में बिताए थे। वह गॉडफ़िश की धोखेबाज़ चालों से वाकिफ़ था। अगर उसने संग्राम का शिकार किया होता, तो मछली का रूप उसके हाथ से छूट जाता। उसे पहले मछली के रूप का शिकार करना था। वह जानता था कि संग्राम जहाज़ में उसके पीछे-पीछे आएगा। फिर संग्राम का भी शिकार हो जाएगा।

इसीलिए अब उसने युद्ध को पूरी तरह से नजरअंदाज कर दिया और अपना सारा ध्यान मछली के रूप पर केंद्रित कर दिया।

जहाज उन दोनों की ओर बढ़ता रहा, जैसे ही वे किनारे की ओर बढ़े।

संग्राम लगभग आधा मीटर आगे बढ़ा। तभी उसे जहाज के इंजन की हल्की सी आवाज़ सुनाई दी। उसे पता चल गया कि नपली को धोखा दिया गया है। अब वह मत्स्यरूपा और नीलगंध से लगभग एक किलोमीटर दूर था। वे अभी उथले पानी में नहीं पहुँचे थे। जहाज अभी भी उनका पीछा कर रहा था।

संग्राम ने जहाज़ की आवाज़ में ख़तरा पहचान लिया। उसे अंदाज़ा हो गया कि जहाज़ मछली के आकार का पीछा कर रहा है। जहाज़ दस-पंद्रह सेकंड में मछली के आकार तक पहुँच जाएगा। और वह उससे बहुत दूर था।

संग्राम गुस्से से ज़ोर से दहाड़ा। उसके सिर से पानी की तेज़ फुहार फूट पड़ी। और फिर वह पूरी ताकत से जहाज़ की ओर दौड़ने लगा।

जहाज़ पर सवार नाविकों ने उसकी दहाड़ सुनी। वे आश्चर्यचकित रह गए।

। ९६ । सागरसंग्राम

वे अपना काम छोड़कर जहाज़ के डेक पर इकट्ठा होकर युद्ध देखने लगे। उन्होंने देखा कि काला, विशाल धुआँ जहाज़ की ओर बढ़ रहा है! मानो प्रकृति ने उस जहाज़ को नष्ट करने के लिए कोई विशाल टारपीडो बनाया हो!

एक पल भी रुके बिना, बिना साँस लिए, संग्राम पलक झपकते ही जहाज़ पर पहुँच गया। नाविकों की आँखें चौड़ी हो गईं। उनके दिलों में डर उमड़ आया।

युद्ध जहाज़ के बहुत क़रीब आ गया था। तभी उसका विशाल, शक्तिशाली शरीर पानी पर ऊपर उठा। नाविकों ने उसे पूरी तरह और साफ़ देखा। वह विशाल शरीर! वो मांसल, चौड़े पंख! बड़े, घुमावदार पूँछ के पंख और उसकी पीठ पर वो पंख, एक आदमी से भी लंबे, सीधे, शक्तिशाली!

और अगले ही पल संग्राम ने अपनी सारी ताकत जुटाई और जहाज के किनारे से टकरा गया।

जहाज़ पर सवार नाविक इधर-उधर बिखर गए। युद्ध के ज़बरदस्त प्रभाव से पूरा जहाज़ ऐसे हिल रहा था मानो भूकंप आ गया हो।

लेकिन तूफ़ान चाहे कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो, जहाज़ को क्या नुकसान पहुँचा सकता था? विशाल जहाज़ बर्फ़ को चीरकर समुद्र में चलने के लिए बनाया गया था। पैंसठ किलोमीटर प्रति घंटे की रफ़्तार से आए तूफ़ान ने जहाज़ को कोई नुकसान नहीं पहुँचाया। उलटे तूफ़ान ही समुद्र में फेंके गए बैरल की तरह एक तरफ़ फेंक दिया गया।

संग्राम सिर में दर्द से एक-दो पल के लिए स्तब्ध रह गया। वह एक तकिये पर गिर पड़ा, फिर उसके दिमाग का दर्द कम हो गया। अब दर्द की जगह गुस्से ने ले ली थी।

उसने अपनी पूँछ हिलाई। वह पानी में सीधा खड़ा हो गया। उसने अपने शरीर की हर मांसपेशी को कस लिया। उसने अपनी पूरी ताकत इकट्ठी कर ली।

जहाज अभी भी मछली का पीछा कर रहा था।

संग्राम एक बार फिर जहाज की ओर बढ़ने लगा।

जहाज़ पर सवार नाविकों ने उसकी भयंकर दहाड़ फिर सुनी। नाविक डेक पर इकट्ठा हो गए। उन्होंने इतनी शक्तिशाली, फुर्तीली शिकारी मछली पहले कभी नहीं देखी थी। जहाज़ पर युद्ध का आघात हुआ था। वह उस आघात से उबर चुकी थी। और अब उसी तेज़ी से जहाज़ की ओर दौड़ रही थी।

संग्राम ने जहाज़ को फिर से टक्कर मारी। जहाज़ दूसरी बार हिला। संग्राम के सिर में दर्द की लहर दौड़ गई।

जहाज़ का कप्तान भी डेक पर आ गया और संग्राम पर नज़र रख रहा था। वह जहाज़ के आगे की ओर दौड़ा। उसने बंदूक के पीछे खड़े नाविक से संग्राम का पीछा करने को कहा।

किनारा अब बहुत पास आ गया था। आठ-दस क्षण में मत्स्यरूप और नीलगंध उथले पानी में

उतर जाएँगे। अँधेरा भी छाने लगा था। मत्स्यरूप का शिकार करना अब मुश्किल नहीं था। लेकिन फिर, अँधेरा संग्राम जैसे अनोखे शिकारी को भागने से रोक देता।

जहाज़ का अनुभवी कप्तान यह बात जानता था। वह संग्राम को किसी भी कीमत पर ढूँढ़ने के लिए दृढ़ था।

समय बहुत कम था। सिर्फ़ सात या आठ पल!

संग्राम अपने दूसरे वार से उबर चुका था। उसे एहसास हो गया था कि जहाज़ पर वार करने का कोई फ़ायदा नहीं है। और किनारा भी अब बहुत पास आ गया था।

संग्राम जहाज़ पार करके किनारे की ओर सरकने लगा। लेकिन सीधा नहीं! अजीबोगरीब, टेढ़ी-मेढ़ी हरकतें करते हुए! तेज़ रफ़्तार से!

जहाज़ की तोप के पीछे खड़े नाविक ने निशाना साधा। कल उसका निशाना दो बार चूक गया था। आज ऐसा नहीं होता।

और तो और, जहाज़ का कप्तान भी उसके पास ही खड़ा था। जहाज़ पर मौजूद हर नाविक का ध्यान उस पर लगा हुआ था।

उसने संग्राम की चौड़ी पीठ पर बंदूक स्थिर रखी।

संग्राम, मत्स्यरूप और नीलगंध तीनों ने गोली की आवाज और भाले की नोक का विस्फोट सुना।

संग्राम के शरीर से खून बह रहा था। उसके चारों तरफ़ नायलॉन की रस्सियाँ पानी पर गिर रही थीं।

मत्स्यरूप और नीलगंध अब द्वीप के किनारे उथले पानी में पहुँच गए थे। वे सुरक्षित थे।

संग्राम को सीने में तेज़ दर्द हुआ। फिर उसने ज़ोर से कराहना शुरू कर दिया।

जहाज अब उथले पानी में पहुँच गया था। जहाज के कप्तान ने जहाज को रुकने का आदेश दिया। इससे आगे जाने का मतलब था जहाज खोना।

एक बार फिर, जहाज की बंदूक के पीछे खड़ा नाविक निशाना चूक गया।

बंदूक से निकला भाला संग्राम की बगल में मुश्किल से घुसा था। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि

संग्राम ने आखिरी पल में चकमा दे दिया था। भाले की नोक फट गई थी। लेकिन उसमें से निकले काँटेदार तार संग्राम की बगल को सिर्फ़ खरोंच ही पाए थे।

संग्राम भी अब उथले पानी में आ गया था। मछली का रूप तेज़ी से उसके घाव को देख रहा था। उसे पुकार रहा था। नीलगंध खून देखकर डर से काँप रही थी।

शिकारियों का शिकार कर रहा जहाज़ किनारे से कुछ दूर गहरे पानी में लंगर डाले खड़ा था। अगली सुबह, हेलीकॉप्टर

जहाज के कप्तान ने संग्राम को वापस बुलाने और उसका पीछा करने का निर्णय लिया था।

जहाज़ पर बंदूक चला रहा नाविक खुद पर गुस्सा था। वह गुस्से से आगबबूला था।

उस रात समुद्र में उतार-चढ़ाव शुरू हो गया। लेकिन उससे पहले ही, अँधेरे का फायदा उठाकर संग्राम और उसका परिवार वहाँ से भाग निकले। वे किनारे पर मौजूद लड़कों को नज़रअंदाज़ करते हुए जहाज़ से उतर गए। फिर वे गहरे समुद्र की ओर तैरने लगे।

संग्राम ने पीछे मुड़कर देखा। उसे दूर एक जहाज़ का आकार दिखाई दिया। उसने मत्स्यरूपा और नीलगंध को अपने पीछे तैरने का आदेश दिया।

कुछ ही देर में, समुद्र तट पर लहरों के टकराने की आवाज धीमी पड़ गई और उसकी जगह गहरे समुद्र में विशाल लहरों के टकराने की गर्जना सुनाई देने लगी।

संग्राम उत्तर दिशा में ब्रिटेन की ओर तैरने लगा। मत्स्यरूपा और नीलगंध उसके पीछे तैरने लगीं।

संग्राम ने अब समुद्री युद्ध का एक नया सबक सीख लिया था। अब उसने तय कर लिया था कि वह समुद्र में आने वाले हर जहाज़ की आवाज़ पर ध्यान देगा और जैसे ही वह आवाज़ सुने, तुरंत वहाँ से दूर हट जाएगा!

अधिमानतः उथले पानी में!

उसका बुद्धिमान मस्तिष्क जानता था कि यह ध्वनि मृत्यु का संदेश है।

वह जहाज़ की आवाज़ सुनना चाहता था, इससे पहले कि वह उसे देख ले। हेलीकॉप्टर की आवाज़ सुनते ही, वह गहरे पानी में गोता लगाकर किनारे पहुँच जाना चाहता था।

समुद्र का उत्तरी भाग ठंडा और सुहावना था। पूर्व में हेब्रिड्स की पहाड़ियाँ समुद्र से उठ रही थीं। योड के दिनों में, स्कॉटिश द्वीपों और उनके आसपास की आवाज़ें और गंध से

।१०० सागरसंग्राम

परिवार के सिर कांपने लगे।

संग्राम की बगल का घाव भर गया था। अब उसे अपना घर मिल गया था।

रात हो चुकी थी। सागर सो चुका था। लेकिन सागर की सतह के नीचे, अजीब-सी आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। जलीय पौधों के जंगल से पानी की धाराएँ बह रही थीं, मछलियों के झुंड तैर रहे थे। कहीं एक झींगा मछली मूंगे पर खरोंच रही थी। कहीं एक बड़ा केकड़ा चट्टानों पर पैर पटक रहा था। गॉडफ़िश और डॉल्फ़िन द्वारा छोड़ी गई मधुर और सूक्ष्म ध्वनि तरंगों का एक जाल सागर के हृदय में फैल गया।

संग्राम अकेला था और पूरी रात जागता रहा। लेकिन उसका मन शांत था। आसमान में टिमटिमाते तारों को देखकर उसे धीरे-धीरे अंदाज़ा हो गया कि वह समुद्र के किस हिस्से में है। उसे एहसास हुआ कि वह घर लौट आया है।

उसके दिमाग़ में उसकी ज़िंदगी की फ़िल्म चलने लगी। यहीं से उसकी ज़िंदगी शुरू हुई थी। यहीं उसका जन्म हुआ था। यहीं उसका बचपन बीता था। और यहीं मौत ने हिम्मत से उसके पिता को छीन लिया था।

उसके बाद, उसने हज़ारों किलोमीटर का सफ़र तय किया। उसकी ज़िंदगी में नए दोस्त आए। और फिर उन्हें खो दिया। उसका भाई उससे दूर हो गया। उसका पहला प्यार उसे हमेशा के लिए छोड़ गया।

और फिर उस मछली रूप ने उसे मौत के मुँह से छुड़ा लिया था। वह उसकी जीवनसंगिनी बन गई थी। वह उसकी विश्वासपात्र बन गई थी। उनके प्रेम के प्रतीक के रूप में नीलगंध का जन्म हुआ था। संग्राम अब उन दोनों को अपने पुराने घर ले आया था।

संग्राम और उनका परिवार लगभग पूरी तरह से समुद्र के उसी हिस्से में रहता था।

सागरसंग्राम .101.

एक महीना बीत गया। और फिर जून के अंत में, उनके आस-पास के समुद्र के सभी जलीय जीव भाग गए। उन्हें एहसास हो गया था कि शिकारी वहाँ आ गए हैं। और उनके पास रहना मौत को दावत देने जैसा था।

संग्राम को अब भोजन की कमी महसूस होने लगी। उसने समुद्र के उस पार जाने का निश्चय

किया। उसने मत्स्यरूपा और नीलगंध को साथ लिया और गहरे समुद्र की ओर मुड़ गया। पहले वे पश्चिम की ओर गए। फिर वे दक्षिण-पूर्व की ओर जाने लगे। समुद्र की गर्म धाराएँ उन्हें वहाँ धकेलने लगीं।

संग्राम के पुराने घर में बिताए समय में मत्स्यरूपा मोटी और आलसी हो गई थी। उसके गर्भ में एक नवजात शिशु था। अब उसने खुले समुद्र में तैरना छोड़ दिया था। वह जहाँ भी समुद्र की धाराएँ और ज्वार उसे ले जाते, वहाँ जाने लगी। उसे उस शिशु के लिए आराम की ज़रूरत थी।

संग्राम अब अकेले ही शिकार करने लगा। उसने नील-गंधे को शिकार करना सिखाना शुरू किया।

एक दोपहर, समुद्र में तूफान आने लगा और मत्स्यांगना ने एक नवजात शिशु को जन्म दिया।

उसका नाम साहसिक था!

संग्राम और मत्स्यरूपा ने सहस्र को तब तक अपने बीच में पकड़े रखा जब तक बादल का बल कम नहीं हो गया। वे दोनों लहरों की चोटी पर एक साथ चढ़ने लगे। और फिर लहरों के नीचे से वापस सागर में गिरने लगे। लेकिन उन्होंने सहस्र को बादल का एहसास तक नहीं होने दिया।

आख़िरकार तूफ़ान थम गया। समुद्र शांत हो गया। मछली जैसी आकृति अपने पंख फैलाकर उड़ गई। सहस्रनाम ने अपना पहला दूध पिया।

संग्राम अपने परिवार को वापस पश्चिम की ओर ले जाता है।

१०२। सागरसंग्राम

करना शुरू कर दिया

नीलगंधा अब यौवन में प्रवेश कर चुकी थी। उसका शारीरिक विकास पूरा हो चुका था। वह अपनी माँ की तरह सुंदर हो गई थी।

सहस्रार हमेशा मत्स्यरूपा से चिपका रहता था। लेकिन जब मत्स्यरूपा गहरे पानी में शिकार करने जाती, तो वह नीलगंध से खेलता रहता। नीलगंध उसके आगे-पीछे तैरती रहती। उस समय सहस्रार उसकी पूँछ काटने की कोशिश करता।

नीलगंध के विशाल आकार की तुलना में यह एक ईंट जैसा प्रतीत होता था।

लेकिन कुछ दिनों बाद, वह रोमांच से खेलने से ऊबने लगी। उसने बीच में ही खेलना छोड़

दिया। वह पूरे मन से समुद्र में गोते लगाने लगी। वह एकाग्र मन से समुद्र के हृदय से आती आवाज़ों को सुनने लगी। कभी-कभी वह अकेलेपन की आवाज़ें निकालने लगी।

संग्राम और मत्स्यरूपा ने नीलगंधे में अंतर पहचान लिया। वे उसे पुकारने भी लगे। उसे खुश करने के लिए! प्यार से! लेकिन नीलगंधे को अपने माता-पिता की आवाज़ों में कोई दिलचस्पी नहीं थी। उसके कान एक अलग आवाज़ सुनने के लिए बेताब थे।

नीलगंध अब अशांत सागर की तरह बेचैन हो गई। तैरते हुए वह पीछे की ओर रेंगने लगी। सहस्र से खेलना लगभग बंद हो गया।

उसके पेट में चिंगारियाँ उड़ने लगीं। उसका दिल स्कॉटलैंड के तट से दूर समुद्र से दूर जाने के लिए तेज़ी से धड़कने लगा।

एक दिन वह और संग्राम शिकार के लिए गोता लगाने गए। उन्हें स्क्विड का एक झुंड मिला। उन्होंने स्क्विड को मार डाला। फिर नीलगंध संग्राम को गहरे पानी में छोड़कर समुद्र की सतह पर आ गई।

जलपरी लहरों से खेल रही थी। उसने नीलगंध को ऊपर आते देखा। दोनों में बातचीत हुई। जलपरी नीलगंध के मन की बात समझ गई।

संग्राम अभी भी गहरे पानी के अंधेरे में शिकार कर रहा था।

तभी नीलगंध ने सहस्रनाम को अपने पास बुलाया। उसने क्या कहा? 'आओ, शिव ने अपनी नाक से मुझे गुदगुदी की।' उसने मज़ाक में कहा, 'पात!' और फिर वह गहरे समुद्र की ओर चल पड़ी।

मछली जैसी आकृति यह सब देख रही थी, और उसका हृदय प्रेम से भर गया।

सहस्रार ने नीलगंध का पीछा करने की कोशिश की। लेकिन उस दिन का पीछा लूटपाट का खेल नहीं था। सहस्रार थककर लौट आया। वह मछली रूपी नीलगंध से लिपट गया। नीलगंध भागने लगी।

मत्स्य रूप ने संग्राम को पुकारा। वह समुद्र की सतह पर आया। मत्स्य रूप की बातों से उसे पता चला कि क्या हुआ था। नीलगंध बड़ी हो गई थी। उसने अपना रास्ता चुन लिया था।

संग्राम, मत्स्यरूप और सहस्रार दूर से आती उस नीली-धूसर आकृति को घूरते रहे। कुछ ही देर में वह अदृश्य हो गई। कुछ देर बाद, संग्राम और मत्स्यरूप की प्रतिध्वनियाँ पहचानने वाले तंत्र भी उसकी आवाज़ नहीं सुन पाए।

संग्राम ने मत्स्यरूपा और साईस को नीलगंध की विपरीत दिशा में तैरने का आदेश दिया।

उसके बाद नीलगन्धा ने उन्हें फिर कभी नहीं देखा।

उसने अकेले ही समुद्री यात्रा पर निकलने का निर्णय लिया था - जब तक कि उसकी मुलाकात उसके पसंदीदा शिकारी से नहीं हो गई!

११०४१ सागरसंग्राम

.. ग्यारह।

संग्राम और उनके परिवार ने अपनी समुद्री यात्रा जारी रखी।

समुद्र की सतह के पास पानी गर्म होता है। कुछ गहराई पर पानी ठंडा होने लगता है। इन दो परतों के बीच का पानी बहुत धीरे-धीरे ठंडा होता है।

एक दिन, मुझे शांत पानी से एक शिकारी मछली की आवाज़ सुनाई दी। आवाज़ इतनी धीमी थी कि मछली के तेज़ कान भी उसे सुन नहीं पा रहे थे।

संग्राम ने मत्स्यरूप और सहस्र को मौन रहने का आदेश दिया। फिर उन्होंने एकाग्र होकर ध्वनि के लौटने की प्रतीक्षा की।

दो-तीन मिनट बाद संग्राम को फिर से वह आवाज़ सुनाई दी, बहुत धीमी सी। उसने उस सादी के पीछे छिपी लालसा को पहचान लिया। उसने अपनी नाक से मछली की बगल को छुआ। उसने उसे और सहस्रा को अपने पीछे आने का आदेश दिया।

वह नदी की ओर पूर्व की ओर तैरने लगा। मछली का रूप और साहस उसके पीछे तैरने लगे।

संग्राम पानी में तीन बार रुका। उसने ध्वनि तरंगें छोड़ीं। उसने उनकी प्रतिध्वनियाँ देखीं। उसने दिशा और फिर ध्वनि की दिशा निर्धारित की। फिर उसने फिर से तैरना शुरू कर दिया।

तभी वह अचानक रुक गया। उसके कानों ने धुएँ का एक विशाल बादल अपनी ओर आता सुना। मछलियाँ और साहस भी रुक गए। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है।

पानी में व्हेल के छटपटाने की आवाज़ तेज़ होती गई। आधे मिनट के अंदर ही, आसपास का समुद्री पानी उस आवाज़ से गड़गड़ाने लगा।

युद्ध एकदम शांत और खामोश था। मत्स्यरूप और सहस्र के मन में जिज्ञासा का स्थान अब भय ने ले लिया था।

उन्होंने आगे देखा। उन्होंने एक विशालकाय शिकारी को नीले पानी से बाहर आते देखा। उसके शरीर की त्वचा झुर्रीदार थी। उसमें जगह-जगह दरारें थीं। जहाँ भी देखो, ज़ख्मों के निशान थे। उसके जबड़े में बस एक-दो काँटे थे। उसकी आँखें बहुत टेढ़ी और धुंधली थीं। उसकी शक्तिशाली घुमावदार पूँछ दो टुकड़ों में बँटी हुई थी। वह बेजान सा पीछे लटका हुआ था। उसकी पीठ का विशाल पंख चकनाचूर हो गया था। वह बीच से पूरी तरह फटा हुआ था। वह एक तरफ़ मुड़ा हुआ था।

संग्राम विशाल के झुंड का एक युवा शिकारी था। कभी-कभी उसकी नज़र विशाल से मिल जाती। उसकी आँखों से विद्रोह की चिंगारी फूट पड़ती।

संग्राम ने विशाल की आँखों में देखा। लेकिन संग्राम की आँखों में अब कुछ और ही भाव था।

संग्राम को विशाल के झुंड से मुँह मोड़े कई साल बीत चुके थे। इस दौरान संग्राम ने समुद्र की गहराइयों में छिपे कई राज़ खोल दिए थे। अब वह समुद्री युद्ध का एक अनुभवी योद्धा बन चुका था।

११०६। सागरसंग्राम

और वह एक शक्तिशाली योद्धा बन गया था।

लेकिन संग्राम विशाल के झुंड के साथ बिताए दिन कभी नहीं भूल सकता। वो दोस्त! वो लंबा सफ़र! विशाल ने सागर संग्राम को जो सबक सिखाए!

संग्राम ने विशाल से बहुत कुछ सीखा था। और उस सीख में सबसे बड़ी सीख थी नेतृत्व की! शिकारी मछलियों का नेता बनकर राज करना!

अब वह स्वयं महामृत्यु के पथ पर था। समुद्र-युद्ध में वह विजयी हो चुका था। लेकिन प्रकृति

के नियमों का पालन करना भी उसके लिए अनिवार्य था।

लेकिन वह संग्राम क्यों आया था?

विशाल को पिछली शाम ही एहसास हो गया था कि उसकी ताकत धीरे-धीरे कम होती जा रही है। वह किसी तरह अपने झुंड को स्कॉटलैंड के तट के पास ले आया था। संग्राम के पुराने घर के पास! और फिर उसकी ताकत पूरी तरह खत्म हो गई थी। झुंड के तीन खूँखार शिकारियों ने मिलकर उसे भगा दिया था।

तीनों शिकारियों में से किसी में भी झुंड को एक साथ रखने की ताकत और अनुभव नहीं था। अब विशाल ने जो विशाल झुंड इकट्ठा किया था, उसके बिखरने का खतरा था। अगर ऐसा होता, तो विशाल समुद्री युद्ध में हार जाता। उसकी ज़िंदगी की मेहनत कहाँ जाती? वह ऐसा नहीं चाहता था।

शिकारी! दैत्य नेता बन सकता था। वह जानता था कि शिकारी ही वह व्यक्ति है जिसकी उसे तलाश थी, और इसीलिए उसने कई साल पहले झुंड की पहचान कर ली थी। उसकी कोशिशें कामयाब रही थीं।

विशाल को मिल गया था संग्राम!

विशाल और संग्राम ने एक-दूसरे से कुछ नहीं कहा। लेकिन विशाल ने आँखों में आँखें डालकर संग्राम को अपने दिल की बात बता दी।

सागरखंग्राम ११०७।

फेंक दिया। विशाल कह रहा था, "हमारा काम अब ख़त्म!" संग्राम समझ गया कि अब उसका काम शुरू होने वाला है!

विशाल पीछे मुड़ा। बहुत धीरे से। बेजान! उसने उधर देखा जहाँ से आया था। कमज़ोरी से अपनी पूँछ उठाई। तैरने लगा। संग्राम उसके साथ तैरने लगा।

विशाल ने सागर युद्ध में अपनी आखिरी जीत हासिल कर ली थी। उसका सागर युद्ध अब ख़त्म हो गया था!

मत्यरूपा और सहस्र को अभी भी समझ नहीं आया कि क्या हो रहा है! वे चुपके से विशाल और संग्राम के पीछे तैरने लगे। कुछ दूरी बनाए रखते हुए!

विशाल ने आखिरी डेढ़ किलोमीटर की दूरी तय की। बड़ी मुश्किल से! अपने झुंड के साथ नहीं, संग्राम के साथ! उस शिकारी के साथ जिसके बारे में विशाल ने सपना देखा था कि एक दिन वह उसके झुंड का नेतृत्व करेगा!

तभी विशाल अचानक रुक गया और संग्राम भी! लहरों के उतार-चढ़ाव से विशाल का विशाल शरीर थोड़ा झुक गया। उसने एक बार संग्राम की तरफ देखा। फिर उसका शरीर सागर की धारा के साथ हिलने लगा। उसने अंत तक एक शब्द भी नहीं कहा।

संग्राम अब समुद्र की सतह पर था। उसे लगा कि मौत विशाल को ले गई है। लेकिन उसे अब भी लग रहा था कि विशाल उसके पास ही है।

संग्राम विशाल को कभी नहीं भूल पाएगा।

उन्होंने मत्स्यरूपा और सहस्र को रुकने का आदेश दिया।

संग्राम ने गहरी साँस ली। उसने ज़ोरदार दहाड़ लगाई। उसके शरीर की हर मांसपेशी तनावग्रस्त हो गई। वह पानी के अंदर बवंडर की गति से आगे बढ़ने लगा।

संग्राम ने ऊपर देखा। विशाल का एक विशाल झुंड पानी में रेंग रहा था। उसने अपनी नाक ऊपर उठाई। उसने पूरी ताकत से झुंड को भगाने की कोशिश की।

११०८। सागरसंग्राम

वह बीच में उछला। उसने झुंड को पीछे छोड़ दिया। उसका विशाल शरीर पानी की सतह पर हवा में उछला। और फिर वापस पानी में जा गिरा।

अब वह झुंड के ठीक बीच में आ गया।

संग्राम के चारों ओर फैले झुंड में शिकारी मछलियाँ चुप हो गईं। उनकी आँखें संग्राम को घूरने लगीं। उसका विशाल आकार! वह चौड़ी पीठ! उसके बड़े, घुमावदार पंख और पूँछ के पंख! उसकी पीठ पर वे सीधे और मज़बूत पंख! समुद्री युद्धों के अनगिनत घाव उसके शरीर पर फैले हुए थे!

संग्राम ने झुंड की हर मछली को देखा। आत्मविश्वास से! कुछ अहंकार से!

झुंड ने अपने नेता को पहचान लिया!

झुंड के तीन युवा शिकारियों ने संग्राम का नेतृत्व स्वीकार करने से इनकार कर दिया। ये वही लोग थे जिन्होंने पिछले दिन बुढ़ापे के कारण निर्दयी हो चुके विशाल को झुंड से भगा दिया था।

दो शिकारी विद्रोह में दहाड़े। उन्होंने संग्राम पर क्रोधित होकर हमला कर दिया। संग्राम ने एक शिकारी को भगा दिया। एक ज़ोरदार मुक्का दूसरे शिकारी की बगल में लगा। उस मुक्के से,

शिकारी को संग्राम की शक्ति का एहसास हुआ और वह पीछे हट गया।

तब तक पहला शिकारी संग्राम पर चिल्लाता हुआ वापस आ चुका था। संग्राम ने उसे फिर से चकमा देकर पलटवार किया। उसने उसकी पूँछ से मांस का एक बड़ा टुकड़ा नोच लिया। शिकारी दर्द से चीखने लगा।

हालाँकि, तीसरा मानव-शिकारी लड़ाई से दूर रहा। वह अपने पराजित साथियों से कहीं ज़्यादा बड़ा और शक्तिशाली था। उसने संग्राम पर अपने साथियों द्वारा किए गए हमले देखे। उसने संग्राम की ताकत और चालाकी को पहचान लिया। उसने संग्राम पर हमला करने की कोशिश की।

उसने ऐसा नहीं किया। उसने संग्राम की तरफ़ सिर्फ़ एक बार देखा। फिर उसने झुंड की तरफ़ पीठ कर ली और तैरने लगा।

उसके दो घायल मित्र भी उसके पीछे चलने लगे, उनके रास्ते में पानी में खून की धार बह रही थी।

संग्राम और उसके झुंड ने उन तीनों को दूर जाते देखा। फिर उसका रूप पानी में गायब हो गया।

संग्राम जानता था कि तीसरा शिकारी सबसे खतरनाक है। वह एक दिन ज़रूर लौटेगा - विशालकाय, ताकतवर, अनुभवी!

संग्राम का जीवन पथ अब तय हो चुका था। अब वह उस विशाल झुंड का नेता था। उस झुंड का हर देवमासा नेतृत्व के लिए उस पर निर्भर था। अगर वह नेता बनने के योग्य कुछ भी नहीं करता, तो वह झुंड को तितर-बितर कर देता।

उसने एक बार एक मानव शिकारी से अपनी और अपने परिवार की जान बचाई थी। लेकिन दुश्मन समुद्र के हर कोने में घूमते थे। गुस्सैल स्पर्म व्हेल के विशाल जबड़े एक ही बार में एक बड़े शिकार को दो टुकड़ों में फाड़ सकते थे! विशाल स्क्विड और ईल शिकारियों को निगलकर डुबो सकते थे! समुद्र तल पर खतरनाक जहाज़ के मलबे शिकारियों को फँसा सकते थे! शार्क के झुंड एक अकेली शार्क के जाल तोड़कर उसे मार सकते थे। धाराएँ और उथला पानी कम ज्वार पर पूरे झुंड को रोककर उन्हें मार सकते थे।

अब उन सभी दुश्मनों से झुंड की रक्षा करना संग्राम की जिम्मेदारी थी।

संग्राम झुंड के बीच चलने लगा। वह हर देवमाश-जाबाल के पास गया। उसने उन्हें छुआ। उसने उनकी आवाज़ें सुनीं।

और फिर उसे वह मिल गया जो वह चाहता था।

११०. सागरसंग्राम

संग्राम ने जलानिशा की आँखों में वही पुराना स्नेह देखा। उसे पता था कि जलानिशा झुंड में होगी। अब वह असमंजस में थी। उसने संग्राम को प्यार भरी नज़रों से देखा। उसकी आँखें आँसुओं से भर आईं।

उसने उसे जन्म दिया था, अटलांटिक महासागर के हर कोने में उसका पालन-पोषण किया था, उसकी देखभाल की थी। पुरानी यादों के बादल उसके मन में छा गए थे।

और आज, कई सालों बाद, उसका बेटा उसके पास लौट आया था। एक शक्तिशाली शिकारी बनकर! उस झुंड का नेता बनकर, उसका दिल गर्व से उछल पड़ा।

पूरा झुंड चुप हो गया था। सिर्फ़ संग्राम और जलानिषा ही आपस में बातें कर रहे थे। कोई और उनकी बातें समझ नहीं पा रहा था।

संग्राम ने पुकारा। वह मछली के रूप को और उस साहस को देख सकता था जो डर के मारे उससे चिपका हुआ था। मछली का रूप झुंड में घुस आया। संग्राम की तरह, उसने भी झुंड की हर मछली को छुआ और उनसे लिपटने लगी। उसकी आवाज़ में दोस्ती का भाव उभर आया।

झुंड ने जलनिशा और सहस्र को खुलकर गले लगाया।

सागर पर बह रही गर्म हवा अब थम चुकी थी। स्वच्छ आकाश में समुद्री पक्षी फड़फड़ा रहे थे। डूबते सूरज की आखिरी किरणें उनके शरीर पर पड़ रही थीं। पश्चिमी क्षितिज केसर से रंगा हुआ था। सागर सोने से आच्छादित था।

एक विशाल पंख ने समुद्र की सतह को चीर दिया, जिससे पानी में एक विशाल, तेज लहर उठी।

संग्राम ने भारी गर्जना की। बानी सारा सागर एक साथ।

सागरसंग्राम । १११।

शिकारियों की छपाक-छपाक, भाग-दौड़, गुर्राहट और गुर्राहट की आवाज़ें बहरा कर देने वाली थीं। संग्राम और उसके झुंड के हर शिकारी के सिर से पानी की ऊँची-ऊँची फुहारें हवा में उठ रही थीं, और उनकी आवाज़ समुद्र की सतह के वातावरण में गूँज रही थी।

संग्राम उत्तर की ओर मुड़ा। वह केप रोथ की ओर बहने लगा। उसका झुंड उसके पीछे तैरने

लगा।

सूरज पश्चिम में क्षितिज के नीचे ओझल हो गया, आसमान की लालिमा धीरे-धीरे फीकी पड़ने लगी, और शाम ढलते ही समुद्र का रंग गहराने लगा। रात के पहले तारे आसमान में दिखाई देने लगे।

समुद्री युद्ध पुनः शुरू हो गया।

१११२। सागरसंग्राम

समाप्त

"'सागर संग्राम' शिकारी देवमासा की एक रोमांचक कहानी है। लेखक मेजर अरविंद पाटिल ने एक नए और अलग विषय को सुंदर शैली में चित्रित किया है। देवमासा कोई 'मछली' नहीं बल्कि प्रकृति द्वारा निर्मित एक अद्भुत जलीय स्तनपायी है। लेखक ने यहाँ इस विशाल और शक्तिशाली जानवर के पानी के नीचे के जीवन का अवलोकन किया है, और उसी से शिकारी देवमासा की सुंदर, रोमांटिक और हृदयस्पर्शी जीवन कथा 'जीवन संग्राम' जीवंत हो उठी है। इसमें लेखक ने उनके 'जीवन के अंतर्गत जीवन' को इतनी कोमलता से चित्रित किया है कि वे जलीय जंतुओं के मानक चित्र प्रतीत होते हैं, उनका क्रोध-लोभ, उनका विरह-प्रेम, उनका स्नेह, उनका स्नेह, उनका क्रोध, उनकी लड़ाकू प्रवृत्ति इस कहानी में रची-बसी है।"

sjeet